संस्कृत स्वयं शिक्षक

प्रथम भाग

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

संस्कृत स्वयं शिक्षक

प्रथम भाग



SANSKRIT SELF TAUGHT

Part I.

लेखक—

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

(चारों वेदों के भाष्यकार और संस्कृत के अन्य बीसियों ग्रन्थों के रचयिता)

प्रकाशक—

म० राजपाल ऐण्ड संज़

अनारकली लाहौर

चौथा संस्करण] १९५६ [१॥)

दो शब्द

संस्कृत स्वयं शिक्षक का नौवां संस्करण आपके हाथ में है। पुस्तक कितनी उपयोगी सिद्ध हुई है इसका अनुमान केवल इसी बात से लग सकता है कि थोड़े से समय में ही यह पुस्तक आठ बार छपकर हाथों हाथ बिक चुकी है।

संस्कृत स्वयं शिक्षक की पंजाब टैक्स्ट बुक कमेटी, महाराजा साहब बड़ौदा, प्रिन्सिपल सिन्ध नैशनल कालेज और अन्य कई शिक्षा विभागों ने मुक्त-कंठ से प्रशंसा करते हुए इसकी सिफारिश की है।

महात्मा गान्धी जी ने भी इस पुस्तक की शैली को पसन्द किया है।

आशा है आप पूर्ववत् इस नए संस्करण को अपनाकर देववाणी संस्कृत का सन्मान करेंगे।

—प्रकाशक

संस्कृत स्वयं शिक्षक

पुस्तक आरम्भ करने से पहिले इसे अवश्य पढ़ —

इस पुस्तक का नाम "संस्कृत स्वयं शिक्षक" है और जो र्थ इस नाम से विदित होता है वैसा ही इसका कार्य है। बिना कसी पण्डित की सहायता आर्य-भाषा (हिन्दी) जानने वाला नुष्य इस पुस्तक के पढ़ने से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर नकता है। जो देवनागरी अक्षर नहीं जानते, उनको उचित है, कि देवनागरी अक्षर पहिले पढ़ कर इस पुस्तक को पढ़ें, देवनागरी अक्षरों को जाने बिना संस्कृत का जानना कठिन है।

बहुत लोग यह समझते हैं कि "संस्कृत भाषा बहुत कठिन है, कई वर्ष प्रयत्न करने से ही उसका ज्ञान हो सकता है।" परन्तु वास्तव में विचार किया जाय तो यह भ्रम मात्र है। संस्कृत भाषा नियमबद्ध होने के कारण तथा स्वभाव सिद्ध होने के कारण सब वर्तमान भाषाओं से सुगम है। कम से कम मैं यह कह सकता हूँ कि अंग्रेजी भाषा संस्कृत भाषा से दस गुणा कठिन है, मैंने कई वर्षों के अनुभव से यह देखा है कि संस्कृत भाषा अत्यन्त सुगम रीति से पढ़ाई जा सकती है, और अपना व्यवहारिक वार्तालाप तथा रामायण महाभारतादि पुस्तकों का अध्ययन करने के लिये जितना संस्कृत का अभ्यास चाहिये उतना संस्कृत का ज्ञान प्रति-दिन घण्टा, आधा घण्टा करने से एक वर्ष की अवधि में अच्छी प्रकार प्राप्त हो सकता है। यह मेरी कोई कल्पना नहीं परन्तु अनुभव की हुई बात है। इसी कारण संस्कृत जिज्ञासु सर्वसाधारण

जनता के सन्मुख उसी अनुभव की हुई अपनी विशिष्ट पद्धति को इस पुस्तक द्वारा रखना चाहता हूँ।

हिन्दी अर्थात् आर्य भाषा के कई वाक्य इस पुस्तक में भाषा की रीति से कुछ विरुद्ध पाए जायेंगे, परन्तु वे वैसे इस लिये लिखे गये हैं कि वे संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त हुए शब्दों के क्रम के अनुकूल हों तथा किसी किसी स्थान पर संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी उसके नियमों के अनुसार नहीं लिखा है तथा शब्दों की संधि कहीं भी नहीं की गई। यह सब इसलिये किया है कि पाठकों को सुभीता हो और उनका संस्कृत में प्रवेश सुगमता पूर्वक हो सके। पाठक यह भी देखेंगे कि जैसा प्रवेश अधिक २ हो गया है वैसा वैसा शब्दों का क्रम भी यथा-योग्य हो गया है अर्थात् जो भाषा की शैली की न्यूनता पहिले पाठों में है वह आगे के पाठों में नहीं है। भाषा शैली की कुछ न्यूनता सुगमता के लिये जान बूझ कर रक्खी गई है, इसलिये पाठक इसकी ओर ध्यान न देकर अपना अभ्यास जारी रक्खें ताकि उनका संस्कृत-मन्दिर में प्रवेश भलीभाँति हो सके।

पाठकों को उचित है कि वे न्यून से न्यून प्रतिदिन एक घण्टा इस पुस्तक का अध्ययन किया करें और जो जो शब्द आवें उनका प्रयोग बिना किसी प्रकार के संकोच के करने का यत्न करें इससे उनकी उन्नति प्रतिदिन होती रहेगी।

जिस रीति का अवलंबन इस पुस्तक में किया है वह न केवल सुगम है परन्तु निःसन्देह स्वभाविक है, और स्वभाविक होने के कारण ही इस रीति से अल्प काल में और थोडे परिश्रम से बहुत लाभ होगा।

यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि प्रतिदिन एक घण्टा

प्रयत्न करने से एक वर्ष के अन्दर व्यवहारिक संस्कृत भाषा का ज्ञान इस पुस्तक की पद्धति से हो सकता है। परन्तु, पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि केवल उत्तम शैली से ही काम नहीं चलेगा, पाठकों का यह कर्तव्य होगा कि वे प्रतिदिन पर्याप्त और निश्चित समय इस कार्य के लिये अवश्य लगाया करें नहीं तो कोई पुस्तक कितनी ही अच्छी क्यों न हो बिना प्रयत्न के पाठक उससे पूरा लाभ नहीं उठा सकते।

इस पुस्तक का अभ्यास करने की पद्धति

(१) प्रथम पाठ तक जो कुछ लिखा है, उसे अच्छी प्रकार पढ़िये। सब ठीक समझने के पश्चात् प्रथम पाठ को पढ़ना प्रारम्भ कीजिये।

(२) हर एक पाठ प्रथम सम्पूर्ण पढ़ना चाहिये, पश्चात् उसको क्रमशः स्मरण करना चाहिये; हर एक पाठ को न्यून से न्यून दस बार पढ़ना चाहिए।

(३) हर एक पाठ में जो जो संस्कृत वाक्य हैं, उनको कण्ठ करना चाहिये तथा जिन जिन शब्दों के रूप दिये हैं, उनको स्मरण करके, उनके समान जो जो शब्द दिये होंगे, उन शब्दों के रूप वैसे ही बनाने का यत्न करना चाहिये।

(४) जहां परीक्षा के प्रश्न दिये हों वहाँ उनका उत्तर दिये बिना आगे पढ़ना नहीं चाहिये। यदि प्रश्नों का उत्तर देना अशक्य हुआ, तो पूर्व पाठ दुबारा पढ़ना चाहिये। प्रश्नों का ठीक उत्तर न देने का यही मतलब है कि पूर्व पाठ ठीक प्रकार तय्यार नहीं हुए।

(५) जहाँ दुबारा पढ़ने की सूचना दी है वहाँ अवश्य दुबारा पढ़ना चाहिये।

(६) दो पाठक साथ साथ अभ्यास करेंगे और परस्पर प्रश्नोत्तर करके एक दूसरे को मदद देंगे तो अभ्यास बहुत शीघ्र हो सकता है।

(७) यह पुस्तक तीन महीनों के अभ्यास के लिये है, इसलिये पाठकों को चाहिये कि वे समय के अन्दर पुस्तक समाप्त करें; जो पाठक अधिक समय लेना चाहें वे ले सकते हैं। यह पुस्तक अच्छी प्रकार स्मरण होने के पश्चात् ही दूसरी पुस्तक प्रारम्भ करनी चाहिए।

अक्षर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ

ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः।

क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ,

ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न,

प फ ब भ म, य र ल व

श ष स ह क्ष त्र ज्ञ।

❀ शुद्ध स्वर ❀

अ, इ, उ, ऋ, लृ,

यह पाँच शुद्ध स्वर हैं।

संयुक्त—स्वर

अ	और	अ	अथवा	आ	मिलकर	"आ"—बना है
इ	,,	ई	,,	इ	,,	"ई"—बनी है
उ	,,	ऊ	,,	उ	,,	"ऊ"—बना है
ऋ	,,	ॠ	,,	ऋ	,,	"ॠ"—बना है
अ	,,	इ	,,	ई	,,	"ए"—बना है
आ	,,	इ	,,	ई	,,	"ए"—बना है
अ	,,	उ	,,	ऊ	,,	"ओ"—बना है
आ	,,	उ	,,	ऊ	,,	"ओ"—बना है
अ, आ	,,	ए	,,	ऐ	,,	"ऐ"—बना है
अ, आ	,,	ओ	,,	औ	,,	"औ"—बना है

इतने संयुक्त स्वर हैं।

स्वर जन्य अक्षर (स्वरों से बने हुए अक्षर)

इ अथवा ई स्वर अ के साथ मिलकर "य" बनता है

उ ,, ऊ ,, अ ,, ,, "व" ,, ,,

ऋ ,, ॠ ,, ऋ ,, ृ ,, "ृ" ,, ,,
ऌ ,, ,, ,, ,, ,, "ॢ" ,, ,,

संयुक्त व्यञ्जन।

क	और	ष	मिलकर	क्ष	[क्ष]	बना है
ज	,,	ञ	,,	ज्ञ	[ज्ञ]	,,
क	,,	व	,,	क्व	[क्व]	,,
र	,,	म	,,	र्म		,,
म	,,	र	,,	म्र		,,
त	,,	र	,,	त्र		,,
द	,,	र	,,	द्र		,,
त	,,	य	,,	त्य		,,
प	,,	त	,,	प्त		,,
ल	,,	ल	,,	ल्ल		,,
ह	,,	य	,,	ह्य		,,
व	,,	र	,,	व्र		,,
क	,,	र	,,	क्र		,,
म	,,	न	,,	म्न		,,
स	,,	र	,,	स्र		,,
ब	,,	द	,,	ब्द		,,
द—र—य			,,	द्र्य		,,

प—त—य ,, प्त्य ,,
श—र—य ,, श्र्य ,,

इस प्रकार अनन्त संयुक्ताक्षर हैं, हिन्दी भाषा के पाठकों को उचित है कि वे इस संयुक्ताक्षर पद्धति को जानें ताकि वे अच्छी तरह संयुक्ताक्षरों को पढ़ सकें।

कुछ स्वरों की सन्धि

ए+अ=अय । ऐ+अ=आय । ओ+अ=अव । औ+अ=आव होता है।

इसी प्रकार अन्य स्वर मिलने पर संधि जाननी चाहिये। जैसा:-

एं+आ=अया । ऐ+ई=आयी ।
ओ+उ=अवु । औ+ऊ=आवू ।
ए+ए=अये । ऐ+ओ=आयो ।
ओ+ए=अवे । औ+ओ=आवो ।

इस प्रकार "ए ऐ, ओ, औ" की संधि पाठक जान सकेंगे!

संस्कृत भाषा का स्वयं-शिक्षक

पाठ १

नीचे कुछ संस्कृत शब्द और उनके अर्थ दिये हुए हैं उनको याद करना चाहिये, संस्कृत भाषा के शब्द बड़े अक्षरों में लिखे हैं।

शब्द

सः=वह। त्वं=तू। अहं=मैं।

गच्छति=वह जाता है। गच्छसि=तू जाता है।

गच्छामि=मैं जाता हूँ।

वाक्य

अहं गच्छामि=मैं जाता हूँ। त्वं गच्छसि=तू जाता है। स गच्छति=वह जाता है।

पाठक लोग यहाँ ध्यान रखें कि संस्कृत वाक्यों का भाषा में अर्थ शब्दों के क्रम से ही दिया है, इस बात का ज्ञान शब्दों के ऊपर जो अंक दिये हैं उनको देखने से हो सकता है।

कुत्र=कहाँ। यत्र=जहाँ। अत्र=यहाँ।

तत्र=वहाँ। सर्वत्र=सब स्थान पर। किं=क्या।

वाक्य

१. त्वं कुत्र गच्छसि=तू कहाँ जाता है?

२. यत्र स गच्छति=जहाँ वह जाता है।

३. अहं तत्र गच्छामि=मैं वहाँ जाता हूँ।

४. स कुत्र गच्छति=वह कहाँ जाता है ?

५. यत्र अहं गच्छामि=जहाँ मैं जाता हूँ।

६. त्वं सर्वत्र गच्छसि=तू सब-स्थान-पर जाता है।

७. किं स गच्छति=क्या वह जाता है ?

८. स गच्छति किं=वह जाता है क्या ?

९. स कुत्र गच्छति=वह कहाँ जाता है ?

१०. यत्र त्वं गच्छसि=जहाँ तू जाता है।

११. त्वं गच्छसि किं=तू जाता है क्या ?

१२. अहं सर्वत्र गच्छामि=मैं सब-स्थान पर जाता हूँ।

सूचना—पाठकों को ये सब वाक्य ध्यान में रखने चाहियें, अगर दो पाठक साथ साथ पढ़ते हों, तो एक दूसरे को संस्कृत तथा भाषा के वाक्य उच्चारण करके दूसरे से अर्थ पूछने चाहियें, और दूसरे को चाहिये कि वह अर्थ बताये परन्तु अगर अकेला हो पढ़ता हो तो उसे प्रथम ऊँची आवाज़ में प्रत्येक वाक्य दस बार उच्चारण करके तत्पश्चात् संस्कृत वाक्यों की ओर दृष्टि देकर उनका अर्थ भाषा के वाक्यों की ओर दृष्टि न देते हुए मन में लाने का यत्न करना चाहिये, ऐसा दो तीन बार करने से सब वाक्य याद हो सकते हैं।

जो पाठक इन वाक्यों की ओर ध्यान देंगे उनको इन शब्दों से कई अन्य वाक्य स्वयं रचने की योग्यता आवेगी और पता लगेगा कि थोड़े से शब्दों से कितनी बातचीत हो सकती है।

शब्द

न=नहीं। अस्ति=है।

कः=कौन। नास्ति=नहीं है।

वाक्य

१. अहं न गच्छामि=मैं नहीं जाता हूँ।
२. त्वं न गच्छसि=तू नहीं जाता है।
३. स न गच्छति=वह नहीं जाता है।
४. अहं तत्र न गच्छामि=मैं वहां नहीं जाता हूँ।
५. त्वं सर्वत्र न गच्छसि=तू सब स्थान पर नहीं जाता है।
६. किं स न गच्छति ?=क्या वह नहीं जाता है ?
७. यत्र त्वं न गच्छसि=जहाँ तू नहीं जाता है।
८. त्वं न गच्छसि किम् ?=तू नहीं जाता है क्या ?
९. अहं सर्वत्र न गच्छामि=मैं सब स्थान पर नहीं जाता हूँ।

सूचना—पाठक यहाँ ध्यान से देख सकते हैं कि केवल एक 'न' कार के उपयोग से कितने नये उपयोगी वाक्य बन गये हैं। अब 'कः' शब्द का उपयोग देखिये:—

१. कः तत्र गच्छति=कौन वहां जाता है ?
२. कः सर्वत्र गच्छति=कौन सब-स्थान-पर जाता है ?
३. तत्र कः न गच्छति=वहां कौन नहीं जाता ?
४. कः सर्वत्र न गच्छति=कौन सब स्थान-पर नहीं जाता ?
५. कः तत्र अस्ति=कौन वहां है ?

११. यत्र स गच्छति=जहां वह जाता है।

१२. तत्र त्वं गच्छसि किं=वहां तू जाता है क्या ?

यह वाक्य याद करने के पश्चात् नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये।

यदा=जब। कदा=कब। सदा=सदा, हमेशा।

सर्वदा=सदा, हमेशा। सदैव=सर्वकाल, हमेशा। तदा=तब।

अब नीचे लिखे हुए वाक्यों को याद कीजिए। यदि आपने पूर्वोक्त वाक्य कण्ठ किए हों तो यह वाक्य आप स्वयं बना सकते हैं।

१. कदा स नगरं गच्छति=कब वह नगर को जाता है ?

२. यदा स ग्रामं गच्छति=जब वह गांव को जाता है।

३. अहं सदैव पाठशालां गच्छामि=मैं हमेशा पाठशाला को जाता हूँ।

४. सर्वदा उद्यानं गच्छति=वह सदैव बाग को जाता है।

५. किं त्वं सदा आपणं गच्छसि=क्या तू हमेशा बाजार को जाता है ?

६. अहं सदैव नगरं गच्छामि=मैं हमेशा नगर को जाता हूँ।

७. यदा त्वं ग्रामं गच्छसि=जब तू गांव को जाता है।

८. तदाहं उद्यानं गच्छामि=तब मैं बाग को जाता हूँ।

९. स नगरं गच्छति किम्=वह नगर को जाता है क्या ?

१०. स सर्वदा ग्रामं गच्छति=वह सदा गांव को जाता है।

११. किं त्वं उद्यानं गच्छसि=क्या तू बाग को जाता है ?

१२. अहं सदैव उद्यानं गच्छामि=मैं सदा बाग को जाता हूँ।
१३. त्वं कुत्र गच्छसि=तू कहां जाता है ?
१४. त्वं कदा गच्छसि=तू कब जाता है ?
१५. स सदैव गच्छति=वह हमेशा जाता है।

पूर्वोक्त प्रकार से इन वाक्यों को भी ऊँचे बोल कर दस दस बार उच्चारण करना चाहिए, तत्पश्चात् संस्कृत वाक्य की ओर देख कर (भाषा के वाक्य को न देखते हुए) उसका भाषा का वाक्य बनाना चाहिए, तत्पश्चात् भाषा का वाक्य देखकर उसका संस्कृत वाक्य बनाना चाहिए, इस प्रकार करने से पाठक स्वयं कई नए वाक्य बना सकते हैं। अब कुछ निषेध के वाक्य बताते हैं।

१. अहं गृहं न गच्छामि=मैं घर नहीं जाता हूं।
२. स ग्रामं न गच्छति=वह गांव को नहीं जाता है।
३. त्वं पाठशालां न गच्छति किम्=तू पाठशाला को नहीं जाता है क्या ?
४. स उद्यानं किं न गच्छति=वह बाग को क्यों नहीं जाता ?
५. किं स ग्रामं न गच्छति=क्या वह गांव को नहीं जाता ?
६. किं त्वं आपणं न गच्छसि=क्या तू बाजार नहीं जाता ?
७. तत्र त्वं किं न गच्छसि=वहां तू क्यों नहीं जाता ?
८. यदा स ग्रामं न गच्छति=जब वह गांव को नहीं जाता ?
९. कः सदा उद्यानं न गच्छति=कौन हमेशा बागको नहीं जाता?
१०. स उद्यानं सर्वदा न गच्छति=वह बागको हमेशा नहीं जाता।
११. त्वं तत्र किं न गच्छसि=तू वहाँ क्यों नहीं जाता ?

१२. स तत्र सदैव न गच्छति=वह वहाँ हमेशा नहीं जाता ।
इस प्रकार पाठक वाक्य बना सकते हैं ।

पाठ ३

यदि आपने पूर्वपाठ के वाक्य तथा शब्द अच्छी प्रकार कण्ठ किए हों तो अब आप निम्न लिखित शब्दों को याद कीजिए:—

सायं=शाम को । प्रातः=प्रातःकाल । रात्रौ=रात्री में ।
श्वः=कल (आगामी दिन) । पर श्वः=परसों ।
दिवा=दिन में । मध्यान्हे=दोपहर । अद्य=आज ।
ह्यः=कल (गत दिन) । न=नहीं ।

वाक्य

१ त्वं कुत्र सदैव प्रातः गच्छसि=तू कहाँ हमेशा प्रात काल जाता है ?
२ अहं सदैव प्रातः उद्यानं गच्छामि=मैं सदा प्रात काल बाग को जाता हूं ।
३ स सायं उद्यानं गच्छति=वह सायकाल बाग को जाता है ।
४ त्वं अद्य पाठशालां गच्छसि किम्=तू आज पाठशाला को जाता है क्या ?
५ अद्य अहं पाठशालां न गच्छामि=आज मैं पाठशाला को नहीं जाऊंगा ।
६ त्वं मध्यान्हे कुत्र गच्छसि=तू दोपहर मे कहाँ जाता है ?
७ अहं मध्यान्हे ग्रामं गच्छामि=मैं दोपहर में गाँव को जाता हूँ ।
८ स दिवा नगरं गच्छति=वह दिन में नगर को जाता है ।

९ अहं रात्रौ गृहं गच्छामि=मैं रात्री में घर को जाता हूँ।
१० यत्र त्वं रात्रौ गच्छसि=जहां तू रात्री में जाता है।
११ तत्र अहं दिवा गच्छामि=वहाँ मैं दिन में जाता हूँ।
१२ तत्र स प्रातः गच्छति=वहाँ वह प्रातःकाल जाता है।

शब्द

यदि=यदि, अगर। तर्हि=तब। गमिष्यसि=तू जायगा।
गमिष्यति=वह जायगा। यथा=जैसा। तथा=वैसा।
कथं=कैसा। गमिष्यामि=जाऊँगा।
जालंधरनगरं=जालन्धर शहर को। हरिद्वारनगरं=हरिद्वार शहर को

वाक्य

१ यदि त्वं जालंधर नगरं श्वः गमिष्यसि=अगर तू जालन्धर को कल जायगा।
२ तर्हि अहं हरिद्वार नगरं परश्वः गमिष्यामि=तब मैं हरिद्वार शहर को परसों जाऊँगा।
३ यदा त्वं गमिष्यसि तदा अहं गमिष्यामि=जब तू जायगा तब मैं जाऊँगा।
४ यदि त्वं न गमिष्यसि तर्हि अहं न गमिष्यामि=अगर तू नहीं जायगा तब मैं नहीं जाऊँगा।
५ स हरिद्वारं श्वः गमिष्यति=वह हरिद्वार को कल जावेगा।
६ स श्वः प्रातः जालंधरनगरं गमिष्यति=वह कल प्रातः जालंधर शहर को जायगा।

७ यत्र स श्वः गमिष्यति=जहाँ वह कल जायगा।

८ तत्र अहं परश्वः गमिष्यामि=वहां मैं परसों जाऊँगा।

९ त्वं परश्वः ग्रामं गमिष्यसि किम्=तू परसों गांव को जायगा क्या?

१० न अहं अद्य सायं नगरं गमिष्यामि=नहीं मैं आज सायंकाल शहर को जाऊँगा।

११ यथा त्वं गच्छसि तथा स गच्छति=जैसे तू जाता है वैसे वह जाता है।

१२ कथं तत्र स श्वः गमिष्यति=कैसे वहाँ वह कल नहीं जायगा?

१३ स तत्र श्वः न गमिष्यति=वह वहाँ कल नहीं जायगा।

ये वाक्य देखें पाठकों को पता लगेगा कि वे तनिक व्यवहार के नए वाक्य स्वयं बना सकते हैं, इसलिये पाठकों से प्रार्थना है कि वे नये नये वाक्य-प्राप्त शब्दों से बनाने का यत्न किया करें।

अब निषेध क वाक्य देखिए:—

१ स सायं उद्यानं न गच्छति=वह शाम को बाग को नहीं जाता

२ कः मध्यान्हे पाठशालां न गच्छति=कौन दोपहर में पाठशाला नहीं जाता?

३ अहं रात्रौ नगरं न गच्छामि=मैं रात्रि में शहर को नहीं जाता।

४ कः तत्र दिवा न गच्छति=कौन वहां दिन में नहीं जाता?

५ त्वं श्वः जालंधरं न गमिष्यसि किम् ?=तू कल जलधर नहीं जायगा क्या?

६ यथा त्वं न गच्छसि तथा स न गच्छति=जैसे तू नहीं जाता वैसे वह नहीं जाता।

७. कथं स न गच्छति=कैसे वह नहीं जाता ?

८. स रात्रौ कुत्र कुत्र न गमिष्यति ?=वह रात्रि में कहां कहां नहीं जायगा ?

९. यत्र यत्र त्वं गमिष्यसि, तत्र तत्र स न गमिष्यति=जहां जहां तू जायगा, वहां वहां वह नहीं जायगा।

पाठ ४

"गम्=(गच्छ)" अर्थ "जाना"। परन्तु इसके आगे "आ" लगाने से इसी का अर्थ "आना" होता है, देखिए—

शब्द

गच्छति=वह जाता है। गच्छसि=तू जाता है।
गच्छामि=जाता हूँ। गमिष्यति=वह जायगा।
गमिष्यसि=तू जायगा। गमिष्यामि=जाऊँगा।
आगच्छति=आता है। आगच्छसि=तू आता है।
आगच्छामि=आता हूँ। आगमिष्यति=आयेगा।
आगमिष्यसि=तू आयेगा। आगमिष्यामि=आऊँगा।
अपि=भी। नहि=नहीं। च=और।
वनं=वन को। कूपं=कूएं को। औषधालयं=दवाखाने को।

वाक्य

१. यदा त्वं वनं गमिष्यसि=जब तू वन को जायगा,

२. तदा अहं अपि आगमिष्यामि=तब मैं भी आऊँगा।

३. यदा तत्र स गमिष्यति=जब वहां वह जायगा,
४. तदा तत्र त्वं न आगमिष्यसि किं=तब वहां तू न आवेगा क्या ?
५. अहं प्रातः गमिष्यामि च सायं आगमिष्यामि=मैं सवेरे जाऊँगा और सायंकाल आऊँगा।
६. यदा त्वं तत्र गमिष्यसि=कब तू वहां जावेगा ?
७. अहं मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि=मैं दोपहर को वहां जाऊँगा।
८. यदि त्वं गमिष्यसि=अगर तू जायगा,
९. स अपि न आगमिष्यति=वह भी नहीं आवेगा।

शब्द

भक्षयति=वह खाता है।	भक्षयसि=तू खाता है।
भक्षयामि=खाता हूँ।	अन्नं=अन्न को।
फलं=फल को।	मोदकं=लड्डू को।
भक्षयिष्यति=खायगा।	भक्षयिष्यसि=तू खावेगा।
भक्षयिष्यामि=खाऊँगा।	ओदनं=चाँवल।
मुद्गौदनं=खिचड़ी।	आम्रं=आम को।

वाक्य

१. स अन्नं भक्षयति=वह अन्न खाता है।
२. त्वं मोदकं भक्षयसि=तू लड्डू खाता है।
३. अहं फलं भक्षयामि=मैं फल खाता हूं।
४. स ओदनं भक्षयिष्यति=वह चावल खायेगा।

५. त्वं आम्रं भक्षयिष्यसि=तू आम खावेगा।

६. अहं मुद्गौदनं भक्षयिष्यामि=मैं खिचड़ी खाऊँगा।

७. यदि स वनं प्रातः गमिष्यति=अगर वह वन को प्रातः काल जायगा।

८. तर्हि आम्रं भक्षयिष्यति=तब आम खायेगा।

९. अहं तत्र गमिष्यामि च फलं भक्षयिष्यामि=मैं वहां जाऊँगा और फल खाऊँगा।

१०. स गृहं गमिष्यति च मोदकं भक्षयिष्यति=वह घर जायगा और लड्डू खायगा।

११. किं स अन्नं भक्षयिष्यति=क्या वह अन्न खायगा।

१२. यथा स ओदनं भक्षयिष्यति=जैसे वह चावल खायगा,

१३ तथा तत्र अहं आम्रं भक्षयिष्यामि=वैसे वहां मैं आम खाऊँगा।

अब पाठक बहुत कुछ वाक्य बना सकते हैं। इस लिए अब कुछ विभक्तियों के रूप देते हैं। जिनको स्मरण करने से पाठकों की योग्यता बहुत बढ़ सकती है।

संस्कृत में सात विभक्तियां होती हैं। (ये विभक्तियां भाषा में भी हैं)—

'देव' शब्द के सातों विभक्तियों के रूप

विभक्ति का नाम	विभक्ति के रूप	भाषा में अर्थ
१. प्रथमा	देव	देव
२ द्वितीया	देवम्	देव-को

३. तृतीया	देवेन	देव-द्वारा
४. चतुर्थी	देवाय	देव-के लिए
५. पंचमी	देवात्	देव-से
६. षष्ठी	देवस्य	देव-का
७. सप्तमी	देवे	देव मे
८. सम्बोधन	[हे] देव	हे देव

पाठक यहा देख सकते हैं कि इन रूपों का बातचीत करने में कितना उपयोग होता है, उक्त रूपों का उपयोग करके अब कुछ वाक्य देते हैं—

१. देवः तत्र गच्छति=देव वहा जाता है।

२. हे देव ! त्वं तत्र गच्छसि किम् ?=हे देव ! तू वहां जाता है क्या ?

३. तत्र देवं पश्य*=वहा देव को देख।

---

* उक्त वाक्यों में "पश्य" आदि शब्द नये आए हैं, उनका अर्थ भाषा के वाक्यों को देख कर पाठक जान सकते हैं। अर्थ देखने के लिये १, २, ३, ४ ऐसे अक शब्दों के ऊपर रखे हैं।

१. देव तत्र न गच्छति।

२. हे देव ! त्वं तत्र न गच्छसि किम् ?

३. स तत्र देवं न पश्यति।

४. देवेन अन्नं न दत्तम्।

५. देवाय फलं न देहि।

६. देवात् ज्ञानं न लभते।

४. देवेन अन्नं दत्तम्=देव ने अन्न दिया।
५. देवाय फलं देहि=देव के लिए फल दे।
६. देवात् ज्ञानं लभते=देव से ज्ञान मिलता है।
७. देवस्य गृहं अस्ति=देव का घर है।
८. देवे ज्ञानं अस्ति=देव में ज्ञान है।

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकेंगे, उनको उचित है कि वे इस प्रकार प्राप्त शब्दों का उपयोग करते रहें। अब उक्त वाक्यों के निषेध अर्थ के वाक्य देते हैं। इनका अर्थ पाठक स्वयं जान सकेंगे इस लिए दिए नहीं–

वाक्य

अहं नैव गमिष्यामि। स मांसं नैव भक्षयिष्यति। स आम्रं कदा भक्षयिष्यति ? यदा त्वं मोदकं भक्षयिष्यसि। स नित्यं कदलीफलं आनयति। देवः इदानीं कुत्र अस्ति ? देवः सर्वत्र अस्ति। स कदा आगमिष्यति ? स अत्र श्वः प्रातः आगमिष्यति। यत्र यत्र अहं गच्छामि तत्र तत्र स नित्यं आगच्छति।

---

७. देवस्य गृहं न अस्ति।
८. देवे ज्ञानं न अस्ति।

पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये कि ये वाक्य कोई खास अर्थ नहीं रखते हैं। यहाँ इतना ही बताया है, कि प्रकार के साथ वाक्य कैसे बनाये जाते हैं। इनको देख पाठक बहुत नये वाक्य बना कर बोल सकते हैं।

पाठ ५

पूर्वोक्त वाक्यों को तथा शब्दों को याद करने से पाठक स्वयं कई वाक्य बना कर प्रयोग में ला सकेंगे। हमने शब्द तथा वाक्य इस प्रकार रखे हैं, कि व्याकरण का बोझ पाठकों पर न पड़ कर उनके मन के ऊपर व्याकरण का संस्कार स्वयं हो जाय, और वे स्वयं वाक्य बना सकें, इस लिये पाठकों से प्रार्थना है कि वे पहिला पाठ पकाये बिना आगामी पाठ को प्रारम्भ न करें, तथा जो जो शब्द पाठों में दिये हुए हैं उनसे अन्यान्य वाक्य स्वयं बनाने का यत्न करें। अब नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये —

नक्तं=रात्री में।	नयति=वह ले जाता है।
नयसि=तू ले जाता है।	नयामि=मैं जाता हूँ।
नेष्यति=वह ले जायगा।	नेष्यसि=तू ले जायगा।
नेष्यामि=ले जाऊँगा।	नवीनं=नया।
सर्व=सब।	आनयति=लाता है।
आनयसि=तू लाता है।	आनयामि=लाता हूँ।
आनेष्यति=वह लायगा।	आनेष्यसि=तू लायगा।
आनेष्यामि=लाऊगा।	पुराणं=पुराना।

१. स फलं नयति=वह फल ले जाता है।

२. अहं आम्रं आनयामि=मैं आम लाता हूँ।

३ त्वं अन्नं आनेष्यसि किं=तू अन्न लायेगा क्या ?

४ अहं तत्र गमिष्यामि=मैं वहां जाऊँगा।

५ फलं च आनेष्यामि=और फल लाऊँगा ।

६ त्वं श्वः कुत्र गमिष्यसि ?=तू कल कहां जायगा ?

८ त्वं कदा आगमिष्यसि=तू कब आवेगा?

शब्द

जलं=जल। पुष्पं=फूल। अपूपं=पूड़ा। सूपं=दाल।
पुस्तकं=पुस्तक। किमर्थं=किस लिए।

१ अहं जलं आनयामि=मैं जल लाता हूँ।

२ त्वं पुष्पं आनयसि=तू फूल लाता है।

लेखनीं=लेखनी, कलम। मसीं=स्याही को।
मसीपात्रं=दवात। वस्त्रं=कपड़ा। उत्तरीयं=दुपट्टा।
व्यर्थं=व्यर्थ, नाहक है।

३ स वस्त्रं तत्र नयति=वह वस्त्र वहां ले जाता है।

४ स सदा नगरं गच्छति च पुस्तकं आनयति=वह हमेशा शहर जाता है और पुस्तक लाता है।

५ स अद्य आगमिष्यति वस्त्रं च नेष्यति=वह आज आवेगा और कपड़ा ले जायगा।

६ अहं आम्रं आनयामि=मैं आम लाता हूं।

७ त्वं अपूपं आनयसि=तू पूड़ा लाता है।

८ स उत्तरीयं नयति=वह दुपट्टा ले जाता है।

९ कदा स मसीपात्रं पुस्तकं च तत्र नेष्यति=कब वह दवात और पुस्तक वहां ले जायगा?

१० स सायं तत्र मसीपात्रं लेखनीं च नेष्यति-वह शाम क
वहां दवात और लेखनी ले जायगा।

११ त्वं रात्रौ हरिद्वारं गमिष्यसि किं=तू रात्रि में हरिद्वा
जाएगा क्या?

१२ नहि, अहं श्वः मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि=नहीं मैं कल
दोपहर को वहां जाऊँगा।

१३ अद गृहं गमिष्यामि सूप च भक्षयिष्यामि=मैं घर जाऊँगा
और दाल खाऊँगा।

इस समय तक पाठकों के पास बहुत कुछ वाक्य बनाने का मसाला पहुँच चुका है। पूर्व पाठ में जैसे 'देव' शब्द की सातों विभक्तियों के रूप दिये थे वैसे इस पाठ में राम शब्द के रूप हैं–

राम' शब्द के रूप •

विभक्तियों के नाम	शब्दों के रूप	भाषामें अर्थ
१ प्रथमा	राम	रा
२ द्वितीया	रामम्	राम को
३ तृतीया	रामेण	राम द्वारा
४ चतुर्थी	रामाय	राम के लिये
५ पञ्चमी	रामात्	राम से
६ षष्ठी	रामस्य	राम का
७ सप्तमी	रामे •	राम में
सम्बोधन	(हे) राम!	हे राम।

देव और राम इन दो शब्दों के रूप अगर पाठक अच्छी प्रकार स्मरण करेंगे तो वे निम्न शब्दों के रूप बना सकेंगे।

• जिन शब्दों में र अथवा ष हुआ करता है उनके न को ण हो जाता है। इस विषय का नियम 'स्वयं शिक्षक' के दूसरे भाग में आ जायगा।

यज्ञदत्त, ईश्वर, गणेश, पुरुष, मनुष्य, अश्व, खग, पाठ, दीप, उदय, गण, समूह, दिवस, मास, वर्ष। ये शब्द उक्त देव नाम के समान ही चलते हैं। इनके रूप बना कर थोड़े से वाक्य नीचे देते हैं—

१ यज्ञदत्तः गृहं गच्छति=यज्ञदत्त घर को जाता है।
२ ईश्वरः सर्वत्र अस्ति=ईश्वर सब स्थान पर है।
३ हे ईश्वर ! दयां कुरु=हे ईश्वर ! दया करो।
४ हे पुरुष ! धर्मं कुरु=हे पुरुष ! धर्म कर।
५ तत्र अश्वं पश्य=वहां घोड़े को देख।
६ अत्र दीपं पश्य=यहां दीवे को देख।
७ सः रात्रौ दीपेन पुस्तकं पठति=वह रात्रि में दीवे से पुस्तक पढ़ता है।
८ ईश्वरेण धनं दत्तं=ईश्वर ने धन दिया।
९ मनुष्याय ज्ञानं देहि=मनुष्य के लिए ज्ञान दे।
१० अश्वाय जलं देहि=घोड़े के लिये जल दे।
११ दीपात् प्रकाशः भवति=दीवे से प्रकाश होता है।
१२ ईश्वरात् ज्ञानं भवति=ईश्वर से ज्ञान होता है।
१३ सः गणस्य ईश्वरः अस्ति=वह गण समूह का मालिक है।
१४ सः समूहस्य ईशः अस्ति=वह समूह का मालिक है।
१५ पुस्तके ज्ञानं अस्ति=किताब में ज्ञान है।
१६ मासे दिवसाः सन्ति=महीने में दिन होते हैं।
१७ समूहे मनुष्याः सन्ति=समूह में मनुष्य होते हैं।
१८ आकाशे खगाः सन्ति=आकाश में पक्षी हैं।

इनके निषेध के वाक्य पाठक स्वयं बना सकते हैं। तथा पाठकों को चाहिए वे उक्त शब्दों की अन्य विभक्तियों के रूप बना कर उनसे वाक्य बन वें और अपना अभ्यास करें।

वाक्य

१ तत्र आकाशे खगं पश्य। २ हे देवदत्त! यज्ञदत्तः कुत्र गच्छति? ३. इदानीं यज्ञदत्तः गृहं गच्छति। ४ श्रीकृष्णस्य उत्तरीयं अत्र आनय। ५ स तत्र व्यर्थं गच्छति। ६ स पुरुषः किमर्थं पुष्पं आनयति?

पाठ ६

लेखकः=लिखने वाला।	कृष्णचन्द्रः=कृष्णचन्द्र।
करोति=वह करता है।	करोषि=तू करता है।
करोमि=करता हूँ।	चित्रं=चित्र, तस्वीर।
पटं=वस्त्र, कपड़ा।	पुष्पमालां=फूलों की माला।
लवणं=नमक।	

रामचन्द्रः पाठशालां गमिष्यति लेखं च लेखयिष्यति। उपदेशकः=उपदेशक। देवदत्तः=देवदत्तः।
२ सत्यकामः गृहं गमिष्यति मधुरं च फलं भक्षयिष्यति=सत्यकाम घर जावेगा और मधुर फल खावेगा।
३ अहं वनं गमिष्यामि पुष्पमालां च करिष्यामि=मैं वन में जाऊँगा और फूलों की माला बनाऊँगा।
४ हरिश्चन्द्रः कदा उद्यानं गमिष्यति=हरिश्चन्द्र कब बाग को जावेगा।

५ स श्वः तत्र गमिष्यति=वह कल वहाँ जायेगा ।

६ देवदत्तः सर्वदा उद्यानं गच्छति पुष्पमालां च करोति किं=
देवदत्त हमेशा बाग में जाता है और पुष्पमाला बनाता है क्या ?

७ यदि हरिश्चन्द्रः उद्यानं न गमिष्यति=अगर हरिश्चन्द्र बाग को न जायगा ।

८ तर्हि देवदत्तः अपि न गमिष्यति=तब देवदत्त भी न जायगा ।

शब्द

गच्छ=जा ।	आगच्छ=आ ।
नय=ले जा ।	आनय=ले आ ।
धन=द्रव्य ।	रूप्यकं=रुपया ।
आगारं=मकान ।	द्रव्यं=धन ।
पूतं=पूत को ।	भक्षय=खा ।
कुरु=कर ।	देहि=दे ।
स्वीकुरु=स्वीकार कर ।	गृहाण=ले ।
एकं=एक ।	अन्य=दूसरा ।
धौतं=धुला हुआ ।	सूत्र=सूत ।

१ त्वं गृहं गच्छ, धौतं वस्त्रं च आनय=तू घर जा और धोया हुआ वस्त्र ले आ ।

२. त्वं अत्र आगच्छ मधुरं च फलं भक्षय=तू यहाँ आ और मीठा फल खा ।

३. स वनं गच्छति अन्य पुष्प च आनयति=वह वन में जाता है और दूसरा फूल लाता है।

४. एकं रूप्यकं देहि=एक रुपया दे।

५. अत्र आगच्छ च मधुरं दुग्धं गृहाण=यहाँ आ और मीठा दूध ले।

६. उद्यान गच्छ फल च भक्षय=बाग को जा और फल खा।

७. अन्य वस्त्रं देहि=दूसरा वस्त्र दे।

८. अन्यं पुस्तकं आनय=दूसरा पुस्तक ले आ।

९. अपूप देहि सूपं च स्वीकुरु=पूआ दे और दाल ले।

१०. मुद्गौदन देहि दुग्ध च तत्र नय=खिचडी दे और दूध वहां ले जा।

११. अत्र त्वं आगच्छ स्वादु फल च देहि=यहाँ तू आ और मीठा फल दे।

१२. ओदनं भक्षय, यत्र कुत्रापि च गच्छ=चावल खा और जहां कहीं भी जा।

पूर्व दो पाठों में 'देव तथा राम' इन दो शब्दों की सातों विभक्तियों के एक वचन के रूप दिये हैं। एक वचन वह होता है कि जो एक संख्या का बोधक हो, जैसे—छत्र (एक छाता)। 'छाता' शब्द से ही एक छाते का बोध होता है। बहुत हुए तो उनको 'छाते' कहेंगे।

भाषा में एक संख्या के दर्शक वचन को 'एकवचन' कहते हैं। तथा एक से अधिक संख्या का बोधक जो वचन होता है उसको अनेक वचन कहते हैं। जैसे—छाता (एकवचन)। छाते अनेक वचन)।

संस्कृत में तीन वचन हैं। एक संख्या बताने वाला 'एकवचन' होता है। दो संख्या बताने वाला 'द्विवचन' कहलाता है। तथा तीन अथवा तीन से अधिक संख्या बताने वाले को 'बहुवचन' कहते हैं।

द्विवचन तथा बहुवचन के रूप संस्कृत स्वयं शिक्षक के दूसरे भाग में दिये जायेंगे। इस प्रथम भाग में केवल एकवचन के ही रूप दिये जाते हैं। अगर पाठक एकवचन के ही रूप ध्यान में रखेंगे तो वे बहुत से उपयोगी वाक्य बना सकेंगे। इस लिये पाठकों को चाहिये कि वे इन रूपों की ओर विशेष ध्यान दें। अब कुछ वाक्य देते हैं:—

१. विष्णुमित्रस्य गृहं कुत्र अस्ति ?=विष्णुमित्र का घर कहां है।
२. तस्य गृहं तत्र न अस्ति=उसका घर वहाँ नहीं है।
३. हुसेनेन द्रव्यं दत्तम्=हुसैन ने धन दिया।
४. यज्ञदत्तः कदा अत्र आगमिष्यति=यज्ञदत्त कब यहां आवेगा।
५. फलस्य बीजं कुत्र अस्ति ?=फल का बीज कहां है।
६. पश्य स तत्र न अस्ति=देख वह वहां नहीं है।
७. दीपस्य प्रकाशः नास्ति=दीये का उजाला नहीं है।
८. पर्वतस्य शिखरं रमणीयं अस्ति=पर्वत का शिखर रमणीय है।
९. पाठे शब्दाः सन्ति=पाठ के अन्दर शब्द हैं।
१०. शब्दे अक्षराणि सन्ति=शब्द के अन्दर अक्षर हैं।
११. पुस्तकं त्यक्त्वा गच्छ=किताब को छोड़कर जा।
१२. एकस्य पुस्तकं अन्यः कथं नेष्यति=एक की पुस्तक दूसरा कैसे ले जावेगा।
१३. मनुष्यस्य बलं नास्ति=मनुष्य का बल नहीं है।

१४. बालकस्य मुखं मलिनं अस्ति=लडके का मुख मलिन है।
१५. तस्य मुखं मलिनं न अस्ति=इसका मुँह मलिन नहीं है।
१५. राजपुरुषस्य आज्ञा अस्ति=राजा के मनुष्य की आज्ञा है।

पाठ ७

पाठकों को उचित है कि वे प्रतिदिन पूर्व पाठों में से भी शब्द कण्ठ किया करें तथा वाक्यों की ओर वारंवार ध्यान दिया करें तथा आये हुए शब्दों से अन्यान्य नये नये वाक्य घडते रहें, ऐसा प्रयत्न करने से ही उनकी इस देव भाषा में शीघ्र गति हो जावेगी, अन्यथा नहीं, अब नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये:—

कथय=कह।	दर्शय=बता।
अस्ति=वह है।	असि=तू है।
अस्मि=हूं।	सत्यं=सचाई।
दयां=दया को।	संध्यां=सध्या को।
आगच्छ=आ।	शृणु=सुन।
ब्रूहि=बोल।	वद=कह।
पश्य=देख।	पाकं=पाक।
पाठं=पाठ को।	कार्यं=काम कार्य।

वाक्य

१. सत्यं ब्रूहि=सत्य बोल।
२. उद्यानं पश्य=बाग को देख।
३. दया कुरु=दया कर।

४. संध्यां कुरु=संध्या कर।
५. सत्यकामः तत्र अस्ति=सत्यकाम वहां है।
६. हरिश्चन्द्र अत्र अस्ति=हरिश्चन्द्र यहां है।
७. अहं अस्मि=मैं हूं।
८. त्वं असि=तू है।
९. सः अस्ति=वह है।
१० विष्णुमित्रः कुत्र अस्ति=विष्णुमित्र कहां है?
११ पश्य, स तत्र अस्ति=देख वह वहां है।
१२ नहि नहि, स तत्र नास्ति=नहीं, नहीं, वह वहां नहीं है।

शब्द

द्वारं=द्वार, दरवाजा।	रथं=गाड़ी, रथ।
वातायनं=खिड़की।	पात्रं=बरतन।
मुखं=मुंह।	उद्घाटय=खोल।
पिधेहि=बंद कर।	कपाटं=दरवाजे के पट्टे, किवाड़े।
पिब=पी।	नेत्र=आंख।

१ द्वारं उद्घाटय पात्रं च अत्र आनय=दरवाजा खोल और बरतन यहां ले आ।
२ वातायनं पिधेहि जलं च पिब=खिड़की बन्द कर और जल पी।
३ रथं अत्र आनय फलं च तत्र नय=रथ यहां ले आ और फल वहां ले जा।

४ पात्रं अत्र न आनय=बरतन यहां न ला।

५ कथं त्वं अन्यं पात्रं आनयसि=कैसे तूं दूसरा बरतन लाता है।

६ अहं अन्यं पात्रं न आनयामि=मैं दूसरा बरतन नहीं लाता।

७ रथं आनय वनं च श्वः प्रभाते गच्छ=रथ ले आ और बन को कल सवेरे जा।

८ जलं देहि मोदकं दुग्धं च स्वीकुरु=जल दे और लड्डू और दूध ले।

९ त्वं कुत्र असि=तू कहां है।

१० अहं अत्र अस्मि=मैं यहां हूं।

११ धनं देहि स्वादु दुग्धं च अत्र आनय=धन दे और मीठा दूध यहां ले आ।

१२ कपाटं उद्घाटय पुष्पमालां च तत्र नय=किवाड़ खोल और फूलों की माला वहां लेजा।

१३ त्वं फलं भक्षयसि किं=तू फल खाता है क्या?

१४ नहि, अहं मोदकं आम्रं च भक्षयामि=नहीं मैं लड्डू और आम खाता हूं।

१५ यदि त्वं रथं आनेष्यसि तर्हि अहं हरिद्वारं गमिष्यामि अगर तू रथ ले आयगा तो मैं हरिद्वार को जाऊँगा।

अब 'रथ' और 'मार्ग' शब्द के सातों विभक्तियों के एक-वचन के रूप देते हैं—

रथ शब्द के रूप	मार्ग शब्द के रूप
१. रथः=रथ।	मार्गः=मार्ग।
२. रथं=रथ को।	मार्गं=मार्ग को।
३. रथेन=रथ ने।	मार्गेण=मार्ग ने।
४. रथाय=रथ के लिये।	मार्गाय=मार्ग के लिये।
५. रथात्=रथ से।	मार्गात्=मार्ग से।
६. रथस्य=रथ का	मार्गस्य=मार्ग का।
७. रथे=रथ में।	मार्गे=मार्ग में।
(हे) रथ=हे रथ।	(हे) मार्ग=हे मार्ग।

शब्द

इसी प्रकार राम, बालक, मृग सर्प, सूर्य, आनंद, आकार कुमार, देव, दण्ड, इत्यादि अकारान्त पुल्लिंग शब्द चलते हैं। जिन शब्दों के अंत में अकार का उच्चारण होता है उनको अकारान्त शब्द कहते हैं। अब कुछ अकारान्त शब्द देते हैं जिनके रूप 'देव' 'राम' शब्द के समान ही होते हैं।

इन्द्रः=राजा, मुख्य।	अर्भकः=लड़का।
ग्रामः=गांव।	चरणः=पांव।
नृपः=राजा।	प्रसादः=मेहरबानी।
मूषकः=चूहा।	रक्षकः=रक्षा करने वाला।
रसः=रस।	बालः=लड़का।
वासः=रहना, कपड़ा।	वृक्षः=दरख्त।
समुद्रः=समुद्र सागर।	सर्पः=सांप।
स्वरः=आवाज़।	आचार्यः=गुरु।

चोरः=चोर । जनः=लोक ।
पुत्रः=लड़का । वेदः=वेद, ज्ञान ।
दण्डः=सोटी । मनुष्यः=मनुष्य ।

वाक्य

१. अर्भकः रथं पश्यति=लड़का गाड़ी देखता है ।
२. नृपः चोरं ताडयति=राजा चोर को पीटता है ।
३. स रथेन अन्य ग्रामं * शीघ्रं गच्छति=वह रथ से दूसरे ग्राम को जल्दी जाता है ।
४. वृक्षात् फलं पतति=दरख्त से फल गिरता है ।
५. समुद्रात् जलं आनयति=समुद्र से पानी लाता है ।
६. आचार्यः धर्मस्य मार्गं † शिष्याय दर्शयति=गुरु धर्म का मार्ग शिष्य के लिये दर्शाता है ।
७. तस्य वासः तत्र भविष्यति=उसका रहना वहाँ होगा ।
८. चोरः धनं चोरयति=चोर धन चुराता है ।
९. नृपः जनं रंजयति=राजा लोगों का रंजन (समाधान) करता है ।
१०. इन्द्रः स्वर्गस्य राजा अस्ति=इन्द्र स्वर्ग का राजा है ।

अब कुछ वाक्य नीचे देते हैं जो पाठक स्वयं समझ सकेंगे ।

१ पुत्रः रसं ‡ पिबति । २ वत्सः रथं न पश्यति । ३ सः मार्गेण न गच्छति । ४ किं स रथेन ग्रामं न गमिष्यति । ५ यज्ञ-

* शीघ्र=जलदी ।
† शिष्य=शागिर्द ।
‡ पिबति=पीता है ।

मित्रः कदा तत्र गमिष्यति । ६ रथे नृपः * उपविष्टः । ७ तेन लेखः † लिखितः । ८ आचार्यः कदा आगमिष्यति । ९ मनुष्यः दण्डेन मूषकं § ताडयति । १० मार्गे तस्य पुस्तकं ‡ पतितम् ।। ११ यथा त्वं गच्छसि तथा रामकृष्णः अपि गच्छति । १२ यथा त्वं वदसि तथा सः न वदति । १३ त्वं किमर्थं फलं न भक्षयसि । १४ स इदानीं नैव ग्रामं गमिष्यति । १५ यथा नृपः अस्ति तथा एव विप्रः अस्ति । १६ यदा आचार्यः तत्र गमिष्यति तदा एव त्वं तत्र गच्छ । १७ तस्य पुत्रः पात्रेण जलं पिबति । १८ यः पात्रेण जलं पिबति स तस्य पुत्रः नास्ति । १९ तर्हि कः सः । २० स आचार्यस्य पुत्रः अस्ति ।

पाठ ८

श्रवणाय=सुनने के लिये ।	दर्शनाय=देखने के लिये ।
गमनाय=जाने के लिये ।	शयनाय=सोने के लिये ।
क्रीडनाय=खेलने के लिये ।	पठति=वह पढ़ता है ।
पठसि=तू पढ़ता है ।	पठामि=पढ़ता हूँ ।
पठ=पढ़ो ।	स्नानाय=स्नान के लिये ।
पानाय=पीने के लिये ।	भोजनाय=भोजन के लिये ।
भक्षणाय=खाने के लिये ।	पठनाय=पढ़ने के लिये ।
पठिष्यति=वह पढ़ेगा ।	पठिष्यसि=तू पढ़ेगा ।
पठिष्यामि=पढ़ूँगा ।	लिख=लिखो ।

---

* उपविष्टः=बैठा है ।
† लिखितः=लिखा है ।
§ ताडयति=पीटता है ।
‡ पतितं=गिरा है ।

अकारान्त पुल्लिंग शब्द

लेख:=लेख ।	पाठ:=पाठ ।
दैत्य:=राक्षस ।	पान्थ:=मुसाफिर ।
अर्थ:=पैसा, धन ।	कर:=हाथ ।
कर्ण:=कान ।	चन्द्र:=चांद ।
विप्र:=ब्राह्मण ।	सूर्य:=सूरज ।
दीप:=दीप, दिया ।	जन:=मनुष्य ।
समाज:=समाज ।	मृग:=हिरण ।
वानर:=बंदर ।	अस्ताचल:=सूरज जहाँ डूबता है वह पश्चिम दिशा का पहाड़ ।
दिवस:=दिन ।	यत्न:=प्रयत्न, पुरुषार्थ ।
स्वर्ग:=स्वर्ग ।	पाद: =पाँव ।
कुमार:=लड़का ।	देव:=राजा, विद्वान् ।

पाठकों को चाहिये कि वे इनके सातों विभक्तियों के रूप देव, राम शब्दों के समान बनावें ।

१. स्नानाय जल देहि=स्नान के लिए जल दे ।
२. पठनाय पुस्तक अस्ति=पढ़ने के लिये पुस्तक है ।
३. भोजनाय अन्न भविष्यति किं ?=भोजन के लिये अन्न होगा क्या ?
४. भक्षणाय फलं देहि=खाने के लिये फल दे ।
५. तत्र सूर्यं पश्य=वहाँ सूर्य को देख ।
६. विष्णुमित्रः कुमारं अत्र किमर्थं आनयति=विष्णुमित्र लड़के को यहां किस लिये लाता है ।

७. हरिश्चन्द्रः आम्रं तत्र नेष्यति किं=हरिश्चन्द्र आम को वहाँ वहां ले जायगा क्या ?

८. पठनाय दीपं पुस्तकं च अत्र आनय=पढ़ने के लिये दीप और पुस्तक यहाँ ले आ।

९. प्रातः स्नानाय गच्छामि=सवेरे स्नान के लिये जाता हूँ।

१०. पानाय मधुरंदुग्धं देहि=पीने के लिये मीठा दूध दे।

११. अत्र स्वादुदुग्धं अस्ति=यहां मीठा दूध है।

१२. स्वादु दुग्धं अत्र नास्ति=क्या दूध मीठा यहां नहीं है ?

१३. स्नानाय जलं नय=स्नान के लिये जल ले जा।

शब्द

किमर्थं=किसलिये।	अधुना=अब।
पश्चात्=पीछे से।	पूर्वं=पहिले।
शीघ्रं=जल्दी।	कृत्वा=करके।
गत्वा=जाके।	दत्वा=देके।
भक्षयित्वा=खाके।	विचार्य=सोच कर।
किं अर्थं=किस लिये।	इदानीं=अब।
सत्वरं=शीघ्र, जल्दी।	एव=हि।
परन्तु=परन्तु, लेकिन।	स्नात्वा=स्नान करके।
पठित्वा=पढ़ के।	नीत्वा=लेके।
दृष्ट्वा=देख कर।	विलोक्य=देख कर।

वाक्य

१. तत्र जलं पीत्वा शीघ्रं अत्र आगच्छ=वहां जल पीकर यहां आ।

२. स्नानाय जलं दत्वा सत्वरं उद्यानं गच्छ=स्नान के लिये पानी देकर शीघ्र बाग को जा।

३. त्वं इदानीं पठसि परन्तु अहं न पठामि=तू अब पढ़ता है परन्तु मैं नहीं पढ़ता

४. विष्णुमित्रः कर्म कृत्वा स्नानं करिष्यति=विष्णुमित्र काम करके स्नान करेगा।

५. त्वं पूर्वं गृहं गत्वा पश्चात् स्नानं कुरु=तू पहिले घर जाकर पीछे से स्नान कर।

६. तत्र स्नानाय जलं अस्ति किं=वहां स्नान के लिये जल है क्या?

७. तत्र स्नानाय जलं नास्ति परन्तु अत्र अस्ति=वहां स्नान के जल नहीं है, परन्तु यहां है।

८. देवदत्तः अन्नं भक्षयित्वा पाठशालां गमिष्यति=देवदत्त भोजन खाकर पाठशाला को जायगा।

९. त्वं पठित्वा शीघ्रं आगच्छ मसीपात्रं च देहि=तू पढ़ कर जल्दी आ और दवात दे।

१०. मोदकं भक्षयित्वा त्वं कुत्र गमिष्यसि=लड्डू खाकर तू कहां जायगा।

११. मोदकं शीघ्रं भक्षय पश्चात् जलं पिब=लड्डू जल्दी खा और पीछे से पानी पी।

१२. प्रातः वनं गत्वा सायं आगमिष्यामि=सवेरे बन को जाकर शाम को आऊँगा।

अकारान्त पुलिंग शब्द

अपराधः=कसूर।	उपायः=उपाय।
कुमारः=लड़का।	ज्वरः=बुखार।
पर्वतः=पहाड़।	विनयः=नम्रता।
कामः=इच्छा, कामवासना।	गुणः=गुण।
भृत्यः=नौकर।	विहगः=पक्षी।

मोह:=संशय, भूल । समागम=सहवास, मुलाकात ।
धूम:=धूआँ ! Smoke लोभ:=लालच ।
संमान:=मान, आदर । कासार:=तालाब ।
बुध:=ज्ञानी । योध:=लड़ने वाला, शूर ।
संग:=सोहबत, साथ । सैनिक:=फौजी आदमी ।
मनोरथ:=इच्छा ।

इस सब शब्दों के रूप देव-राम के समान बनते हैं । पाठकों को उचित है कि, वे इनके सातों विभक्तियों के एक वचन के रूप बनायें । अब इनके रूप बनाकर कुछ वाक्य देते हैं—

१. तेन अपराध: कृत:=उसने अपराध किया ।

२. स पर्वतस्य उपरि गत:=वह पहाड़ के ऊपर गया ।

३. स बुध: सायं अत्र आगमिष्यति=वह ज्ञानी शाम को यहाँ आवेगा ।

४. एक: विहग: वृक्षे अस्ति तं पश्य=एक पक्षी दरख्त पर है उसको देख ।

५. भृत्य: तत्र गत:=नौकर वहाँ गया ।

६. मम कुमार: अधुना पुस्तकं पठति=मेरा लड़का अब किताब पढ़ता है ।

७. योध: युद्धं करोति=लड़ने वाला लड़ाई करता है ।

८. सैनिक: तत्र न अस्ति=फौजी आदमी वहाँ नहीं है ।

९. स ज्वरेण पीड़ित: अस्ति=वह बुखार से पीड़ित हुआ है ।

१०. गुण: संमानाय भवति=गुण आदर के लिये होता है ।

११. कुमारस्य पुस्तकं कुत्र अस्ति, दर्शय=लड़के की किताब कहाँ है, बता ।

१२. बुधस्य समागमेन तेन ज्ञानं प्राप्तम्=ज्ञानी के सहवास से उसने ज्ञान प्राप्त किया !

अब नीचे ऐसे वाक्य देते हैं जो कि भाषान्तर बिना ही पाठक समझ जायेंगे :—

(१) त्वं इदानीं किं तत् पुस्तकं पठसि ? (२) तत्र स्नानाय शुद्धं जलं अस्ति । (३) तव भृत्यः कुत्र गतः ? (४) मम भृत्यः आपणे गतः । (५) किमर्थं स आपणे गतः ? (६) स फलं अन्न च आनेष्यति । (७) अहं फलं अन्नं च भक्षयितुं इच्छामि । (८) स मोदकं भक्षयित्वा पाठशालां पठितुं गतः । (९) स दिने दिने प्रातः स्नानं कृत्वा वनं गच्छति । (१०) स तत्र किं करोति ? (११) स वनं गत्वा संध्यां करोति ? (१२) नृपः अत्र आगतः (१३) बुधः इदानीं एव तत्र गतः । (१४) तस्य मनोरथः उत्तमः अस्ति । (१५) स कासारं स्नानाय गच्छति । (१६) तत्र कासारस्य जलं स्वादु अस्ति । (१७) तत्र कूपस्य जलं स्वादु नास्ति ।

अब निम्नलिखित भाषा के वाक्यों का संस्कृत में भाषान्तर कीजिये :—

(१) स्नान के लिये जल दे । (२) खाने के लिये अन्न दे । (३) स्नान के लिये पानी दे । (४) हरिश्चन्द्र कहां जाता है ? (५) हरिश्चन्द्र गांव को जाता है । (६) पीने के लिये मीठा दूध दो । (७) तू अब पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ता । (८) वहां स्नान के लिये जल है क्या ? (९) उसका मनोरथ उत्तम है । (१०) वह तालाब के पास स्नान के लिये जाता है । (११) तेरे कुएँ का जल मीठा है ।

पाठ ६

शिष्यः=शिष्य, पढ़ने वाला ।
दासः=नौकर ।
भानुः=सूर्य ।
गुरुः=पढ़ाने वाला ।
बन्धु=भाई ।
पुत्रः=पुत्र, लड़का ।
तव=तेरा ।
मम=मेरा ।
तस्य=उसका ।

कृपा=दया, मेहरबानी ।
स्वसा=बहिन ।
माता=मां ।
पिता=पिता, बाप ।
भगिनी=बहिन ।
तुभ्यं=तेरे लिये ।
मह्यं=मेरे लिये ।
तस्मै=उसके लिये ।
अस्मै=इसके लिये ।

वाक्य

१. तव गुरुः कुत्र अस्ति=तेरा गुरु कहां है ?
२. इदानीं मम गुरुः तत्र अस्ति=अब मेरा गुरु वहां है ।
३. मम माता अद्य सायं वनं गमिष्यति=मेरी माता आज शाम को वन को जावेगी ।
४. अधुना मह्यं पठनाय पुस्तकं देहि=अब मुझको पढ़ने के लिए पुस्तक दे ।
५. तस्य गृहं कुत्र अस्ति=उसका घर कहाँ है ?
६. तव दासः ग्रामं गमिष्यति किं ?=तेरा नौकर गाँव को जावेगा क्या ?
७. तव पुत्रः कदा वनं गमिष्यति=तेरा पुत्र कब वन को जायगा ?
८. मम बन्धुः इदानीं पुस्तकं पठति=मेरा भाई अब पुस्तक पढ़ता है ।
९. मम माता पुष्पमालां करोति=मेरी माता पुष्पमाला करती है ।
१०. तव पिता तव च माता=तेरा पिता और तेरी माता ।

११. पानाय मह्यं जलं देहि=पीने के लिये मुझे पानी दे।
१२. स्नात्वा सायं आगमिष्यति=वह स्नान करके शाम को आवेगा।
१३. नहि नहि स ग्रामं गत्वा रात्रौ आगमिष्यति=नहीं नहीं वह गांव को जाकर रात्रि को आवेगा।

शब्द

इच्छति=वह चाहता है। लिखति=वह लिखता है।
इच्छसि=तू चाहता है। लिखसि=तू लिखता है।
इच्छामि=चाहता हूँ। लिखामि=लिखता हूँ।
पत्रं=पत्र। कूपं=कूएं पर।
शुद्धं=शुद्ध, पाक, साफ। औषधं=औषध, दवा।
मार्गं=मार्ग, रास्ता। उत्तरीयं=दुपट्टा।
कर्तुं=करने के लिये। लेखितुं=लिखने के लिये।
भोक्तुं=खाने के लिये। स्वीकर्तुं=स्वीकार करने के लिये।
दातुं=देने के लिये।
भक्षयितुं=भक्षण करने के लिये। गन्तुं=जाने के लिये।
पातुं=पीने के लिये। आगन्तुं=आने के लिये।
पठितुं=पढ़ने के लिये। नेतुं=ले जाने के लिये।
आनेतुं=लाने के लिये।

वाक्य

१. रामचन्द्रः पुस्तकं पठितुं इच्छति=रामचन्द्र पुस्तक पढ़ने की इच्छा करता है।
२. हरिश्चन्द्रः शुद्धं जलं पातुं इच्छति=हरिश्चन्द्र शुद्ध जल पीने की इच्छा करता है।
३. अहं कूपं गत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि=मैं कूएं पर जाकर स्नान करना चाहता हूँ।

४. त्वं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यसि किं=तू कल प्रातः स्नान करेगा क्या ?

५. नहि अहं श्वः प्रातः स्नानं कर्तुं न इच्छामि=नहीं, मैं कल सवेरे स्नान करना नहीं चाहता।

६. यदि प्रातः न करिष्यसि तर्हि कदा करिष्यसि=अगर सवेरे नहीं करेगा तो कब करेगा।

७. सायं करिष्यामि=शाम को करूँगा।

८. त्वं इदानीं पठितुं इच्छसि किं ?=तू अब पढ़ना चाहता है क्या ?

९. नहि इदानीं अहं फलं भक्षयितुं इच्छामि=नहीं, अब मैं फल खाना चाहता हूँ।

अकारान्त पुल्लिंग शब्द

अलंकारः=जेवर।	दण्डः=सोटी।
छात्रः=शिष्य, शागिर्द।	ब्राह्मणः=पंडित।
व्याधः=शिकारी।	स्तेनः=चोर।
स्नेही=दोस्त।	वर्णः=रङ्ग।
कपोलः=गाल।	चातकः=एक पक्षी।
तरंगः=लहर (पानी)।	द्विरेफः=भ्रमर।
नयनः=आँख।	नेत्रः=आँख।
प्रवाहः=वेग।	शक्रः=इन्द्रः।
आतपः=सूर्य की धूप।	उद्यमः=उद्योग।
पुरुषार्थः=प्रयत्न।	उपदेशः=उपदेश।
ओष्ठः=होंठ।	कुक्कुरः=कुत्ता।

इन सब शब्दों के रूप राम, देव शब्दों के समान ही होते हैं। पाठकों को चाहिये कि वे इनके सातों विभक्तियों के रूप बनायें, और इनका वाक्यों में प्रयोग करें।

२. उत्तिष्ठ ! शौच कृत्वा शीघ्रं स्नानं कुरु=उठ शौच करके जल्दी स्नान कर।

३. अहं शौचं कृत्वा मुखप्रक्षालनं करिष्यामि=मैं शौच करके मुँह धोऊँगा।

४. पश्चात् स्नानं कृत्वा सन्ध्यां करिष्यसि किं=पीछे स्नान करके सन्ध्या करेगा क्या ?

५. नहि, अहं पश्चाद् व्यायामं कृत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि=नहीं, मैं पीछे से व्यायाम करके स्नान करना चाहता हूँ।

६. तथा कुरु=वैसा कर।

७. स्नानं सन्ध्यां च कृत्वा पुस्तकं पठिष्यामि=स्नान और सन्ध्या करके पुस्तक पढ़ूँगा।

८. भो मित्र ! किं त्वं प्रातः अग्निहोत्रं न करोषि=हे मित्र ! क्या तू सवेरे अग्निहोत्र नहीं करता है ?

९. कुतः न करोमि, सदैव करोमि एव=क्यों नहीं करता ? हमेशा करता ही हूँ।

१०. पश्चात् मध्याह्ने किं किं करिष्यसि=पीछे दोपहर को क्या क्या करेगा।

११. भोजनं कृत्वा पठनाय पाठशालां गच्छामि=भोजन करके पढ़ने के लिये पाठशाला को जाता हूँ।

१२. अहं सर्वदा पुस्तकं पठितुं इच्छामि=मैं हमेशा पुस्तक पढ़ना चाहता हूँ।

शब्द

भ्रमणाय=घूमने के लिये। दानाय=देने के लिये।
किमर्थं=किस के लिये। तिष्ठति=ठहरता है, बैठता है।

११. पीतं पुष्पं न आनय=पीला फूल न ला ।

१२. अत्र शुद्धं जलं अस्ति=यहां शुद्ध जल है ।

१३. किमर्थं स्नानं इदानीं एव न करोषि=क्यों स्नान अभी नहीं करता ।

१४. इदानीं एव स्नानं कर्तुं न इच्छामि=अभी स्नान करने की इच्छा नहीं ।

अकारान्त पुल्लिंग शब्द

अक्षः=आँख, जूआ ।	अनर्थः=कष्ट, दुःख ।
ग्रन्थः=पुस्तक ।	प्रभवः=उत्पत्ति ।
पार्थिवः=राजा ।	विन्ध्यः=एक पर्वत ।
शृगालः=गीदड़ ।	कपोतः=कबूतर ।
मेघ=बादल ।	सिंहः=बबर, शेर ।
आश्रमः=आश्रम,रहने का स्थान	कोपः=क्रोध, गुस्सा ।
तापः=गरमी ।	दुर्गः=किला ।
वरः=वर, इष्ट ।	वायसः=कौवा ।
शुकः=तोता ।	देहः=शरीर, जिस्म ।
नगः=पाँव ।	याचकः=मांगने वाला ।
जनकः=पिता ।	सैनिकः=सिपाही ।

इन शब्दों के रूप भी देव-राम शब्द के समान ही होते हैं । पाठक इनके रूप सब विभक्तियों में बना सकते हैं ।

वाक्य

*पाठक इन वाक्यों को पढ़ते ही समझ जायेंगे, इसलिये इनके अर्थ नहीं दिये हैं ।

१ तेन, शुकेन ग्रन्थः लिखितः । २ पर्वते सिंहः अस्ति ३ नगरे अद्य नृपः आगतः । ४ श्वः स सैनिकः दुर्गं गमिष्यति ।

५ याचकः मार्गे तिष्ठति । ६ तस्य जनकः गृहे तिष्ठति । ७ तस्य पुत्रः पाठशालां गतः । ८ आकाशे मेघः अस्ति । ९ पार्थिवः युद्धं करोति । १० नृपस्य प्रसादेन तेन धनं प्राप्तम् । ११ तेन मित्रस्य गृहात् पुस्तकं आनीतम् । १२ स वनस्य मार्गं पश्यति । १३ आकाशे सूर्यः अस्ति । १४ वने वृक्षः अस्तिः । १५ वृक्षे खगः अस्तिः ।

परीक्षा

पाठकों को उचित है कि वे इन प्रश्नों के ठीक उत्तर देकर ही आगे बढ़ें । अगर इनका ठीक उत्तर वे न दे सकें तो पहिले इस पाठ दुबारा पढ़ें :—

(१) निम्न शब्दों के सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप लिखिये—

ग्राम । चरण । देव । नृप । मार्ग । रक्षक । राम । वृक्ष । दुर्ग । ग्रन्थ । आश्रम । अनर्थ ।

(२) निम्नलिखित शब्दों का पञ्चमी तथा षष्ठी का एकवचन लिखिये । इस प्रश्न का उत्तर अतिशीघ्र लिखना चाहिये ।

नाग । पर्वत । देह । दिन । कपोत । कृष्ण । सिंह । लोभ । विनय । धनिक । खल । समागम ।

(३) निम्न वाक्यों का अर्थ दीजिये :—

(१) त्वं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यासि किम् । (२) त्वं इदानीं पठितुं इच्छसि किम् । (३) अहं कासारं गत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि । (४) त्वं तं रथम् अत्र आनय । (५) अन्य पुस्तकं आनय (६) मुद्गौदनं याचकाय देहि । याचकः तत्र मार्गे तिष्ठति । तं पश्य । (७) अत्र त्वं आगच्छ । शीघ्रं आगच्छ । (७) स सायं तत्र पुस्तकं नेष्यति । (९) कदा स आगमिष्यति । (१०) स श्वः प्रभाते आगमिष्यति ।

(४) भाषा के निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइये —

(१) वह दुपट्टा ले जाता है। (२) मैं कल दोपहर को जाऊँगा। (३) लड्डू जलदी खा और पीछे से पानी पी ले। (४) देवदत्त भोजन खाकर पाठशाला को जायगा। (५) तू अब पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ता। (६) बाग को जा और फल खा (७) तू घर जा और धोया हुआ वस्त्र ले आ।

पाठ ११

अब दस पाठ हो चुके है, इतने थोड़े समय में पाठक बहुत से वाक्य बनाने में समर्थ हो रहे होंगे, वे अगर धैर्य से और और वाक्य घड़ते जावेंगे, तो उनकी संस्कृत मे बात चीत करने की शक्ति स्वय बढ़ती ज वेगी, संस्कृत भाषा की वाक्य रचना अत्युत्तम है, अंग्रेजी तथा उर्दू क समान निश्चित स्थान पर शब्द रखने की आवश्यकता नहीं, देखिये —

अहं मोदकं भक्षयामि	ये सब वाक्य शुद्ध हैं और
अहं भक्षयामि मोदकं	इन सब का अर्थ
मोदकं भक्षयामि अहं	' मैं लड्डू खाता हूँ"
मोदकं अहं भक्षयामि	इतना ही है इसलिये पाठकों
भक्षयामि अहं मोदकं	को उचित है कि वे प्रसन्न हुए
भक्षयामि मोदकं अहं	हुए शब्दों को यथा संभव
	उपयोग में लाकर नये नये
	वाक्य बन वें।

अब इस पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता, पाठक आज के दिन कोई नया शब्द याद न करें और पिछले पाठों में से कोई वाक्य या शब्द भूला हो तो उसको ठीक ठीक स्मरण करें।

अब इस पाठ में पाठकों को ऐसे वाक्य दिये जावेंगे कि जिनके शब्दों का प्रयोग पहिले आ चुका है. यहाँ एक बात पाठकों को स्मरण रखनी चाहिए कि मनुष्यों के नाम वाक्य में आने से कोई नई रचना संस्कृत में नहीं होती, देखिये :—

रामचन्द्रः वनं गच्छति=रामचन्द्र वन को जाता है।

विलियमः वनं गच्छति=विलियम वन को जाता है।

महम्मदः वनं गच्छति=महम्मद (खान) वन को जाता है।

अर्थात् बोलने के समय पाठक जिस किसी का नाम वाक्य में रखकर अपना आशय प्रकट कर सकते हैं।

संस्कृत भाषा में दूसरी आसानी (सुभीता) यह है, कि लिंग के अनुसार शब्दों की विभक्तियाँ नहीं बदलती जिस अवस्था में बदलती हैं उस अवस्था का वर्णन हम आगे करेंगे, इस समय पाठक ऐसा समझें कि नहीं बदलतीं, देखिये :—

तस्य लेखनी=उसकी लेखनी।

तस्य पुस्तकं=उसकी किताब।

तस्य फलं=उसका फल।

तस्य पुत्रः=उसका लड़का।

पाठक यहां देखेंगे कि भाषा में "उसकी उसका" शब्दों में जिस कारण "की, का" यह भेद हुआ है वैसा कोई भेद संस्कृत में नहीं है, इस कारण संस्कृत के वाक्य बनाना भाषा के वाक्य बनाने से सुगम अर्थात् आसान हैं।

वाक्य

१. त्वं अद्य गृहं गन्तुं किमर्थं इच्छसि=तू आज घर जाने को क्यों इच्छा करता है ?

२. अद्य मम पिता गृहं आगमिष्यति=आज मेरा पिता घर आवेगा।

३. स कदा आगमिष्यति त्वं जानासि किं=वह कब आवेगा तू जानता है क्या ?

४. नहि अहं न जानामि परन्तु स रात्रौ आगमिष्यति=नहीं, मैं नहीं जानता, परन्तु वह रात्रि में आवेगा।

५. जानसनः इदानीं किं करोति=जानसन (साहिब) अब क्या करता है ?

६. स पत्रं लिखति=वह पत्र लिखता है ?

७. दिवानचन्द्रः धौतं वस्त्रं आनयति=दिवानचन्द्र धोया हुआ कपड़ा लाता है।

८ रामकृष्णः इदानीं दीपं कुत्र नयति=रामकृष्ण अब दीवा कहां ले जाता है ?

९. स पठनार्थं दीपं पुस्तकं च नयति=वह पढ़ने के लिये दीवा और पुस्तक ले जाता है।

१०. कस्य पुस्तकं अस्ति=किसकी पुस्तक है ?

११. मम पुस्तकं अस्ति=मेरी पुस्तक है।

१२. तव वस्त्रं नास्ति किं=तेरा कपड़ा नहीं है क्या ?

१३ सत्वरं अत्र आगच्छ पीतं पुष्पं च पश्य=शीघ्र यहाँ आ और पीला फूल देख।

पूर्व पाठों में आकारान्त शब्दों के रूप बनाने का प्रकार बताया है। अब इकारान्त पुल्लिंगी शब्दों के रूप बनाने का प्रकार बताते हैं:—

इकारान्त, पुल्लिंग 'रविः' शब्दः

१ प्रथमा	रविः	रवि (सूर्य)
२ द्वितीया	रवि—म्	रवि=को।
३ तृतीया	रवि-णा	रवि-ने

४. चतुर्थी	रवये	रवि के लिये।
५. पञ्चमी	रवेः	रवि से।
६. षष्ठी	रवेः	रवि का
७. सप्तमी	रवौ	रवि में
संबोधन	(हे) रवे	हे रवे,

इस प्रकार अग्नि, अरि, अहि, उदधि, कवि, इत्यादि इकारान्त पुल्लिंगी शब्द भी इसी प्रकार से चलते हैं।

अग्निः=आग।	अहिः=सांप।
अरिः=शत्रु।	उदधिः=समुद्र।
कविः=काव्य रचयिता।	बृहस्पतिः=गुरू।
पतत्रिः=पक्षी।	कपिः=बन्दर।
शनिः=शनि तारा।	नृपतिः=राजा।
पाणिनिः=व्याकरणाचार्य।	गिरि=पहाड़।

उक्त रवि शब्द के अनुकूल ही इनके एक वचन के रूप होते हैं।

वाक्य

१. रविः आकाशे आगतः=सूर्य आकाश में आगया।
२. बालक रविं पश्यति=लड़का सूर्य को देखता है।
३. रविणा प्रकाशः कृत=सूर्य ने रौशनी की।
४. रवये नमः कुरु=सूर्य के लिये नमस्कार कर।
५. रवेः प्रकाशः भवति=सूर्य से प्रकाश होता है।
६. रवेः प्रकाश पश्य=सूर्य का प्रकाश देख।
७. रवौ प्रकाश अस्ति=सूर्य में प्रकाश है।

१ तत्र अग्निः अस्ति, २ नरेन्द्रः अग्निं अत्र आनयति, ३

विष्णुमित्रः अग्निना जलं उष्णं[1] करोति। ४ नृपतिः अरिणा सह युद्धं करोति। ५ कवेः काव्यं[3] पठामि। ६ तं हिमगिरिं[4] पश्य। ७ हिमगिरेः गङ्गा प्रभवति[5]। ८ कपिः वृक्षे अस्ति, तं पश्य, कथं स मुखं करोति। ९ तस्य मुखं कृष्णं[6] अस्ति। १० बृहस्पतिः आकाशे उदितः[7]। ११ हिमगिरौ मेघः आगतः १२ जलधौ जलं अस्ति। १३ तत्र अहिः अस्ति, अतः तत्र न गच्छ। १४ पाणिनिना व्याकरणं[8] रचितम्[9]। १५ पतत्रिः आकाशे गच्छति। १६ पश्य यथं स पतत्रः आकाशे गच्छति। १७ यथा पतत्रिः आकाशे गच्छति, न तथा कपिः गच्छति।

निम्न भाषा वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइये :—

१ तू अब क्या पढ़ता है ? २ तेरा नौकर कहाँ गया ? ३ मैं बाजार में जाता हूँ। ४ मैं फल और अन्न खाना चाहता हूँ। ५ राजा आ गया। ६ ज्ञानी अभी वहाँ गया। ७ मेरे कुएं का पानी मीठा है। ८ वह बाग में जाकर सन्ध्या करता है। ९ मोदक खा और पानी पी। १० देख ! लड़का कैसा दौड़ता है।

पाठ ११

धावन=दौड़ना।	स्वीकरण=स्वीकार करना।
धावति=वह दौड़ता है।	धावसि=तू दौड़ता है।
धावामि=दौड़ता हू।	इच्छया=इच्छा से।

१ उष्णं=गरम । २ सह=साथ । ३ काव्य=कवितामय पुस्तक। ४ हिमगिरि=हिमालय। ५ प्रभवति=उत्पन्न होती है। ६ कृष्णं=काला ७ उदितः=उदय हुआ। ८ व्याकरणं=व्याकरण (ग्रामर)। ९ रचितं=रचा।

अंतरिक्षे=आकाश में । नगरे=शहर में ।
शीतं=ठण्डा । रचनं=रचना ।
भ्रमणं=घूमना । पश्यति=देखता है ।
पश्यसि=देखता है । पश्यामि=देखता हूँ ।
धूम्रयानेन=रेल गाड़ी से । पिपासा=प्यास ।
बुभुक्षा=भूख । उष्णं=गरम ।

वाक्य

१. स इच्छया स्वीकरिष्यति=वह इच्छा से स्वीकार करेगा ।
२. प्रकाशदेवः स्थाने व्यर्थं धावति=प्रकाशदेव थान में व्यर्थ दौड़ता है ।
३. त्वं इदानीं किमर्थं धावसि=तू अब क्यों दौड़ता है ?
४. अहं अधुना धावामि=मैं अब दौड़ता हूं ।
५. अंतरिक्षे सूर्यं पश्यति किं=आकाश में सूर्य को देखता है क्या ?
६. रात्रौ सूर्यं न पश्यामि=रात्रि में सूर्य को नहीं देखता हूँ ।
७. विश्वामित्रः भ्रमणाय सायं गमिष्यति किं=विश्वामित्र घूमने के लिये शाम को जायगा क्या ?
८. स तत्र स्थातुं इच्छति=वह वहाँ ठहरना चाहता है ।
९. जालंधरनगरे मम गृहं अस्ति=जालंधर शहर में मेरा घर है ।
१०. भो मित्र ! तव गृहं कुत्र अस्ति=हे मित्र ! तेरा घर कहां है ?
११. मम गृहं पेशावरनगरे अस्ति=मेरा घर पेशावर शहर में है ।
१२. धूम्रयानेन त्वं तत्र गमिष्यसि किं=रेल गाड़ी से वहां जायगा क्या ।
१३. अथ किं, धूम्रयानेन अहं तत्र परश्वः गमिष्यामि=और क्या ? रेलगाड़ी से मैं वहां परसों जाऊँगा ।

१४. इदानीं पिपासा अस्ति मह्यं शीतं जलं देहि=अब प्यास है, मुझे ठण्डा जल दे।

१५. अधुना बुभुक्षा न अस्ति, अन्नं न देहि=अब भूख नहीं है, अन्न न दे।

शब्द

कन्या=पुत्री, लड़की।	भ्राता=भाई।
कृशः=दुबला।	सयोगः=मिलाप।
मित्रं=मित्र, दोस्त।	स्वसा=बैन, बहिन।
वितृष्यः=चचा।	जामाता=दामाद।
पिबसि=तू पीता है।	अवश्यं=अवश्य।
पिबति=वह पीता है।	नोचेत्=नहीं तो।
पिबामि=पीता हूँ।	सन्धिः=सुलह, मित्रता।
संघातः=समूह।	नैव=नहीं।
पास्यामि=पीऊँगा।	पास्यसि=तू पीयेगा।
पास्यति=वह पीयेगा।	न एव=नहीं।
नास्ति=नहीं है।	स्पष्ट=निश्चय से।

१. तव जामाता मधुरं दुग्धं रात्रौ पास्यति=तेरा दामाद मीठा दूध रात्रि में पीयेगा।

२. अहं रात्रौ दुग्धं नैव पिबामि=मैं रात्रि में दूध नहीं पीता।

३. मम स्वसा उष्णं जलं पिबति=मेरी बहिन गरम पानी पीती है।

४. अहं कदापि, उष्णं जलं पातुं न इच्छामि=मैं कभी भी गरम जल पीना नहीं चाहता।

५. तव भ्राता मद्रासनगरं कदा गमिष्यति=तेरा भाई मदरास शहर कब आवेगा।

६. यदि तव पिता गमिष्यति तर्हि सोऽपि गमिष्यति= अगर तेरा पिता जावेगा तो वह भी जायगा

७. नोचेत् नैव गमिष्यति=नहीं तो नहीं जायगा।

८. स पीतं उत्तरीयं कदा आनयति=वह पीला दुपट्टा कब लाता है।

९. भो मित्र! इदानीं पीतं वस्त्रं न आनय=हे मित्र! इस समय पीला वस्त्र न ला।

१० मम रक्तं वस्त्रं कुत्र अस्ति जानासि किं=मेरा लाल कपड़ा कहां है जानते हो क्या?

११. अत्र दीपः नास्ति, न जानामि तव रक्तं वस्त्रं=यहाँ दीप नहीं है (मैं) नहीं जानता तेरा लाल कपड़ा।

१२. इदानीं सायंकालः जातः, भ्रमणाय गच्छ=अब शाम हो गई। घूमने के लिये जा।

१३ त्वं कदा भ्रमणं करिष्यसि=तू कब भ्रमण करेगा।

१४. अहं प्रातः भ्रमणाय गच्छामि न सायं=मैं सवेरे घूमने जाता हूं शाम को नहीं।

१५. त्वं कदा अपि न आगच्छसि=तू कभी भी नहीं आता है।

इकारान्त पुल्लिंग शब्द

भूपतिः=राजा। नृपतिः=राजा।
क्षेत्रपतिः=स्थान का मालिक। प्रजापतिः=ईश्वर राजा।
प्राणपतिः=प्राणों का स्वामी। सुमतिः=उत्तम बुद्धि वाला
मारुतिः=हनुमान्। मुरारिः=विष्णु।
यतिः=तापसी। वह्निः=आग।
सेनापतिः=फौज का बड़ा अफसर।
दुर्मतिः=बुरी बुद्धि वाला। मुनिः=तपस्वी।

ष्यति । १५) यत्र जगदीशचन्द्रः गमिष्यति तत्र विष्णुदत्त अपि गमिष्यति एव । (१६) अहं ओदनं नैव भक्षयिष्यामि (१७) स दुग्धं एव पिबति कदापि अन्नं नैव भक्षयति । (१८) स व्यर्थं तत्र गतः, तस्य पुस्तकं तत्र नास्ति ।

पाठ १३

मंद =सुस्त ।	मूकः=गूंगा ।
उपरि=ऊपर ।	अधः=नीचे ।
मध्ये=बीच में ।	शनैः = आहिस्ता, धीरे २
वदामि=बोलता हूँ ।	वदसि=(तू) बोलता है ।
वदति=(वह) बोलता है	डिंडिमः=ढोल ।
अगदः=दवाई ।	उच्चैः=ऊंचे से ।
नीचैः=नीचे से ।	वक्तुं=बोलने के लिये ।
उक्त्वा=बोल कर ।	वदिष्यामि=बोलूँगा ।
वदिष्यामि=तू बोलेगा ।	वदिष्यति=वह बोलेगा ।

वाक्य

१. त्वं उपरि गच्छ अहं अधः गमिष्यामि=तू ऊपर जा मैं नीचे जाऊंगा ।

२. न, अहं उपरि तिष्ठामि, त्वं अधः गच्छ=नहीं, मैं ऊपर ठहरता हूं तू नीचे जा ।

३. भो मित्र ! इदानीं शनैः शनैः अधः गच्छ=हे मित्र ! अब धीरे २ नीचे जा ।

४. स सदा तत्र तिष्ठति उच्चैः वदति च=वह हमेशा वहां बैठता और ऊंचे से बोलता है ।

५. त्वं किं सर्वदा नीचैः एव वदसि=तू क्या हमेशा धीमे ही बोलता है ?

अहं सदा नीचैः एव वक्तुं इच्छामि=मैं हमेशा धीमे ही बोलना चाहता हूं ।

७. भो मित्र ! त्वं मध्ये किमर्थं तिष्ठसि=हे मित्र ! तू बीच में किसलिये ठहरता है ।

८. अहं जलं पीत्वा रात्रौ उपरि गमिष्यामि=मैं जल पीकर रात्रि में ऊपर जाऊंगा ।

९. अहं रात्रौ नैव जलं पिबामि=मैं रात्रि में जल नहीं पीता

०. किं त्वं रात्रौ उष्णं मिष्टं च दुग्धं न पास्यसि=क्या तू रात्रि में गरम और मीठा दूध नहीं पीयेगा ।

१. कुतः न ? पास्यामि एव=क्यों नहीं, पीऊंगा ही ।

२. उत्तिष्ठ, इदानीं तस्मै फलं देहि=उठ अब उसके लिये फल दे ।

३. फलं स्वादु नास्ति, कथं दास्यामि=फल मीठा नहीं है कैसे दूंगा ?

३. यथा अस्ति तथा एव देहि=जैसा है वैसा ही दे ।

शब्द

इति=ऐसा ।	पर्यन्तं=तक ।
वा=अथवा; या ।	क्रीडामि=खेलता हूँ ।
अथवा	क्रीडसि=तू खेलता है ।
किंवा= ,,	क्रीडति=वह खेलता है ।
अवश्यं=अवश्य जरूर ।	सुष्ठु=ठीक अच्छा ।
वरं=श्रेष्ठ, अच्छा ।	कंदुकः=गेंद ।
क्रीडयिष्यति=खेलेगा ।	क्रीडयिष्यामि=तू खेलेगा ।
क्रीडयिष्यामि=मैं खेलूंगा ।	मदीयः=मेरा ।

वाक्य

१. देवदत्तः तत्र क्रीडति=देवदत्त वहां खेलता है ।

२ स तत्र सायं काले गत्वा क्रीडयिष्यति=वह वहां शाम को जाकर खेलेगा ।

३. स तत्र प्रातः गमिष्यति न वा=वह वहाँ सवेरे जायगा या नहीं ?

४. अहं तत्र सायंकाल पर्यंत स्थास्यामि=मैं वहां शाम तक ठहरूंगा ।

५ त्वं अवश्यं आगच्छ=तू अवश्य आ ।

६. स कंदुकेन सुष्ठु क्रीडति=वह गेंद से अच्छा खेलता है ।

७. स न तथा सुष्ठु क्रीडति यथा विष्णुमित्रः=वह वैसा अच्छा नहीं खेलता जैसा विष्णुमित्र ।

८ सत्यं अस्ति=सत्य है ।

९. यथा त्वं वदसि तथा एव अस्ति=जैसा तू बोलता है वैसा ही है ।

१० रात्रौ जलं उपरि नयसि न वा=रात्रि में जल ऊपर ले जाता है या नहीं ?

११. अवश्य नेष्यामि सत्यं वदामि=अवश्य ले जाऊंगा सत्य बोलता हूँ ।

१२. यदि त्वं सत्यं वदसि नेष्यसि एव=अगर तू सच बोलता तो ले जायगा ही ।

१३. वरं यथा वदसि तथा कुरु=अच्छा, जैसा बोलता वैसा कर ।

१४. इदानीं भोजनं कर्तुं इच्छामि, अन्नं आनय=अब भोजन करना चाहता हूँ, अन्न ले आ ।

१५ अन्न नास्ति, मोदक अस्ति=अन्न नहीं है, लड्डू है।

यहाँ तक पाठक जान चुके हैं कि अकारान्त तथा इकारान्त पुल्लिंग शब्द कैसे चलते हैं। अब उकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप बनाना पाठकों ने सीखना है आशा है कि पूर्व का ज्ञान न भूल कर पाठक आगे पढ़ेंगे —

उकारान्त पुलिंग 'भानु' शब्द के रूप

१ प्रथमा	भानु	भानु (सूर्य)
२ द्वितीया	भानुम्	भानु को
३ तृतीया	भानुना	भानु ने
४ चतुर्थी	भानवे	भानु के लिये
५ पचमी	भानो	भानु से
६ षष्ठी	,,	भानु का
७ सप्तमी	भानौ	भानु में
सम्बोधन	हे भानो	हे भानु

इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिंगी शब्दों के पचमी तथा षष्ठी के कवचन के रूप एक जैसे होते हैं। पाठकों ने यह बात रवि, पति, मुनि इन शब्दों में पृ० ५८ पर देखी होगी तथा भानु शब्द के रूपों मे इस पाठ म स्पष्ट हो गई होगी। पचमी षष्ठी के रूप समान होते हैं इस कारण षष्ठी के स्थान (,,) ऐसा चिह्न दिया है जिसका मतलब यह है कि यहा का रूप पूर्व की विभक्ति के समान ही है। आशा है कि पाठक इस विशेषता को ध्यान में रखेंगे।

उकारान्त पुलिंग शब्द

भानु =सूर्य। गुरु=अध्यापक।

कारु:=कारीगर।	विष्णु:=विष्णुदेव।
अंशु:=किरण।	तरु:=दरख्त।
सिंधु=समुद्र, दर्या।	मरु=रेत वाला देश, मारवाड़।
वसु:=धन।	शत्रु:=दुश्मन।
शम्भु:=शिवजी।	अगरु:=चन्दन।
जिष्णु=विजय शील।	मृत्यु:=मौत।
क्रतु:=यज्ञ।	बाहु=हाथ भुजा।
साधु:=सन्त, महात्मा।	पङ्गु=लङ्गड़ा, पेड़ा।
शंकु=होने वाला पदार्थ।	शन्तनु=भीष्मपितामह का पिता।
स्नायु:=पुट्ठा, रग।	

ये सब शब्द पूर्वोक्त भानु शब्द के समान ही चलते हैं।

वाक्य

१. गुरु: पाठशालां गच्छति=गुरु पाठशाला को जाता है।
२. भानो: अंशुं पश्य=सूर्य का किरण देख।
३. सिंधो: जलं आनयति=दर्या से जल लाता है।
४. मरौ देशे जलं नास्ति=रेत के देश में जल नहीं है।
५. मृत्यवे किं दास्यसि=मौत के लिये क्या देओगे।
६. शत्रुं पश्यसि किम्=दुश्मन को देखते हो क्या?
७. शन्तनुःराजा आसीत्=शन्तनु राजा था।
८. शन्तनुना क्रतुः समाप्तः=शन्तनु ने यज्ञ समाप्त किया।
९. शम्भुना राक्षसो हतः=शिवजी ने राक्षस मारा।
१०. साधुना उपदेशः कृतः=साधु ने उपदेश किया।
११. तरोः फलं पतितं=दरख्त से फल गिरा।

अब थोड़े से ऐसे वाक्य देते हैं कि जो पाठक स्वयं जान सकते हैं:—

स तं मार्गं पृच्छति । मृग: मृगेण सह गच्छति मनुष्य: मनुष्येण सह न गच्छति । सदा मूर्ख. मूर्खेण सह वदति । वानर: वने धावति । विष्णु: सर्वत्र अस्ति । ईश्वर सदा सर्वं पश्यति । नृप: रक्षक वदति । स नगरात् धन आनयति । वसिष्ठस्य चरणं पश्य । बालकाय मोदकं देहि । ब्राह्मणाय धनं देहि । तस्मै जलं देहि शम्भु: राक्षसं हन्ति । उद्याने तरु: अस्ति । शत्रु: ग्रामे नास्ति । कारु गृहं करोति । भानु प्रकाश ददाति[1] । स कदापि न तुष्यति[2] । पुष्प आनयति । पुष्प जले पतितम्, तस्य पुत्र कूपे पतित: । तस्य बाहु: शोभन:[3] अस्ति । स कंदुकेन क्रीडति । तत्र गत्वा तं पश्य । बालक: अधुना न आगत: । त्वं गच्छ भोजन च कुरु ।

भाषा क निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य कीजिए :—

१ वह आंख से देखता है । २ कैसे वह बालक गया । ३ बालक धूप में गया । उसको यहां लेआ । ४ अब राजा कहां । ५ नौकर ने हाथ में सोटी ली । ६ गांव में शत्रु है । ७ वह फूल लाता है । ८ वहां जाकर देख । ९ वह दुर्मति के साथ मित्रता करता है । १० जहां राम जायगा वहां कृष्ण जायगा । ११ जहां मैं जाऊंगा वहां तू जा ।

पाठ १४

श्रम:=कष्ट	अत:=इसलिये ।
कुत =किसलिये ।	यत:=जिसलिये ।
ताडयति=वह पीटता है ।	ताडयति=तू पीटता है ।
ताडयामि=पीटता हूं ।	ज्वरित:=ज्वर से पीड़ित ।

१ ददाति देता है । २ तुष्यति-खुश होता है । ३ शोभन:-उत्तम ।

दुर्बलः=बलहीन ।	अतीव=बहुत ।
परिश्रमः=मेहनत ।	एतत्=यह ।
यद्=जो कि ।	तत्=वह ।
ताडयिष्यति=पीटेगा ।	ताडयिष्यसि=पीटेगा ।
ताडयिष्यामि=पीटूँगा ।	केवलं=केवल, सिर्फ ।
अल्पं=थोड़ा ।	नीरोगः=स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

वाक्य

१. यज्ञदत्तः किमर्थं न पठति=यज्ञदत्त क्यों नहीं पढ़ता ।

२. स ज्वरेण पीडितः अस्ति, अतः न पठति=वह ज्वर से पीड़ित है, इस कारण नहीं पढ़ता ।

३. किम् एतत् सत्यमस्ति यत् स ज्वरेण पीडितः अस्ति=क्या यह सत्य है कि वह ज्वर से पीड़ित है ।

४. अथ किं, स न केवलं ज्वरितः अस्ति, परन्तु स अतीव दुर्बलः अपि अस्ति=और क्या ? वह न केवल ज्वरित है, परन्तु वह बहुत दुर्बल भी है ।

५. किं स अन्नं भक्षयति न वा । कथय=क्या वह अन्न खाता है वा नहीं । कह ।

६. न भक्षयति परन्तु अल्पं अल्पं दुग्धं पिबति=नहीं खाता परन्तु थोड़ा थोड़ा दूध पीता है ।

७. कदा स पुनः नीरोगः भविष्यति=कब वह फिर स्वस्थ होगा ?

८. एतद् अहं न जानामि=यह मैं नहीं जानता ।

९. स किं किं वदति=वह क्या २ बोलता है ?

१०. स किमपि न वदति=वह कुछ भी नहीं बोलता ?

११. यदा स पुनः नीरोगः भविष्यति=जब वह फिर नीरोग होगा ।

१२. तदा स अत्र आगमिष्यति एव=तब वह यहां आवेगा ही

१३. पाठं च पठिष्यति=और पाठ पढ़ेगा।

वाक्य

स्वपिति=वह सोता है।	स्वपिषि=तू सोता है।
स्वपिमि=सोता हूं।	दश-वादने=दस बजे।
दशघण्टासमये=दस बजे।	तदानीं=उस समय।
एष:=यह।	शोभने=उत्तम।
इतिहास:=इतिहास।	खादति=वह खाता है।
खादसि=तू खाता है।	खादामि=खाता हूं।
भवति=वह होता है।	भवसि=तू होता है।
भवामि=होता हूं।	दरिद्र:=निर्धन।
भृत्य:=सेवक।	मेरु:=मेरुपर्वत।

वाक्य

१. त्वं रात्रौ कदा स्वपिषि=तू रात्री कब सोता है।

२. अहं दशघण्टासमये स्वपिमि=मैं दस बजे सोता हूं।

३. परन्तु विश्वनाथः तदानीं न स्वपिति=परन्तु विश्वनाथ उस समय नहीं सोता।

४. यदि स न स्वपिति तर्हि तदा स किं करोति=अगर वह नहीं सोता तो वह तब क्या करता है।

५. स तदानीं पुस्तकं पठति अतीव कोलाहलं च करोति=तब वह पुस्तक पढ़ता है और बहुत शोर मचाता है।

६. स किमर्थं कोलाहलं करोति=वह क्यों कोलाहल करता है

७. स उच्चैः पठति अतः कोलाहलः भवति=वह ऊँचे से पढ़ता है इसलिये शोर होता है।

८. कोलाहलं न कुरु इति त्वं तं वद=गड़बड़ न कर, ऐसा तू उसको कह।

९. स मध्याह्ने किं किं भक्षयति किं किं पिबति =वह मध्याह्न में क्या २ खाता है और क्या २ पीता है।

१०. स प्रातः काले दुग्धं पिबति मध्याह्ने च स्वादु भोजनं खादति= वह सवेरे दूध पीता है और दुपहर को उत्तम भोजन खाता है।

११. स इदनीं तं किमर्थं ताडयति=वह अब उस को क्यों पीटता है।

१२. यतः स न लिखति=किस कारण वह नहीं लिखता।

१३. एष शोभनः समयः भ्रमणाय गच्छामि=यह उत्तम समय है घूमने के लिये जाता हूं।

१४. स दरिद्रः अस्ति अतः द्रव्यं न ददाति=वह निर्धन है इसलिये पैसा नहीं देता है।

उकारान्त शब्दों के रूप बनाने का प्रकार पिछले पाठ में आ चुका है। अब ऋकारान्त शब्दों के रूप इस पाठ में बतायेंगे:—

ऋकारान्त पुलिंग 'धातृ' शब्द

१ धाता	ब्रह्मा
२ धातारं	ब्रह्मा को
३ धात्रा	ब्रह्मा ने
४ धात्रे	ब्रह्मा के लिये
५ धातुः	ब्रह्मा से
६ धातुः	ब्रह्मा का
७ धातरि	ब्रह्मा में
सं० (हे) धातः	हे ब्रह्मा

ऋकारांत पुलिंग शब्द

धातृ=ब्रह्मा, विश्वकर्ता, उत्पन्न कर्ता।

कर्तृ=बनाने वाला। नेतृ=ले जाने वाला।

शास्तृ=शासन करने वाला। उद्गातृ=गाने वाला।
गातृ=गाने वाला। नप्तृ=पोता।
गंतृ=जाने वाला। दातृ=देने वाला।
वक्तृ=बोलने वाला। द्रष्टृ=देखने वाला।
श्रोतृ=सुनने वाला। भोक्तृ=खाने वाला।
स्रष्टृ=उत्पन्न करनेवाला। पातृ=रक्षा करने वाला।
द्वेष्टृ=द्वेष करने वाला। ध्यातृ=ध्यान करने वाला।

वाक्य

१. धाता सकलं विश्वं रचयति=ब्रह्मा सब विश्व को रचता है।
२. दातुः इच्छा कीदृशी अस्ति=दाता की इच्छा कैसी है।
३. भोक्त्रे मोदकं देहि=खाने वाले को लड्डू दे।
४. नप्त्रा भोजनं न कृतं=पोते ने भोजन नहीं किया।
५. मम द्वेष्टारं पश्य=मेरे द्वेष करने वाले को देख।
६. ध्याता ईश्वरं ध्यायति=ध्यान करने वाला ईश्वर का ध्यान करता है।
७. मूषकः धान्यं खादति=चूहा धान खाता है।
८. वक्ता सत्यं वदति=बोलने वाला सच बोलता है।
९. भुवनस्य कर्तारं ईश्वरं कुत्र पश्यसि=जगत् के कर्ता ईश्वर को कहां देखता है।
१० अहं भुवनस्य कर्तारं ईश्वरं वन्दे=मैं जगत्कर्ता ईश्वर को नमस्कार करता हूँ।

(१) त्वं तं ग्रामं गच्छसि। (१२) त्वं तं ग्रामं कदा गमिष्यसि (३) त्वं तं ग्रामं किमर्थं न गच्छसि। (४) त्वं तं ग्रामं गत्वा किं आनेष्यसि। (५) त्वं तं बहुशोभनं ग्रामं गत्वा शीघ्रं अत्र आगच्छ। (६) त्वं तं शोभनं उदयपुर नामकं नगरं गत्वा तव मित्रं दृष्ट्वा शीघ्रं

एव अत्र आगच्छ। (७) हे धातः! त्वं भुवनस्य कर्ता असि त्वया एव सर्वं एतत् निर्मितम्। (८) ब्राह्मणाय धन, दुग्धं च देहि। (९) ब्राह्मण अत्र एव अस्ति। १० तं अत्र आनय।

पाठ १५

साधु=साधु, फकीर। वेतन=तनख्वाह।
धावति=वह दौड़ता है। धावसि=तू दौड़ता है।
धावामि=दौड़ता हूँ। पतित.=गिर गया।
कर्दमे=कीचड़ में। स्खलितः=फिसल गया।
दुकूल=रेशमी वस्त्र। अंजन=सुरमा, अंजन।
यत्र=यहां। हसति=वह हँसता है।
हससि=तू हँसता है। हसामि=हंसता हूं।
वृद्धः=बूढ़ा। युवा=जवान।
बाल=लड़का। पट्टाः=वस्त्र।

वाक्य

१ स किमर्थं हसति=वह क्यों हँसता है।
२. यतः विष्णुदत्तः तत्र कर्दमे पतित=क्योंकि विष्णुदत्त वहां कीचड़ में गिर गया है।
३. कथ स कर्दमे पतितः=कैसे वह कीचड़ में गिर पड़ा।
४ स पूर्वं स्खलित पश्चात् पतित=वह पहिले फिसला और पीछे गिर गया।
५. त्वं तथा धावसि किं यथा अहं धावामि=क्यों तू वैसा दौड़ता है जैसे मैं दौड़ता हूँ।

६ त्व अपि तथा न लिखसि यथा विष्णुशर्म्मा लिखति=तू भी वैसा नहीं लिखता जैसा विष्णुशर्म्मा लिखता है ।

७. यदा त्वं पठसि तदा अहं क्रीडामि=जब तू पढ़ता है तब मैं खेलता हूँ ।

८ स कदुकेन वर क्रीडति=वह गेंद से अच्छा खेलता है ।

९. यदा स कन्दुकेन क्रीडति तदा स धावति=जब वह गेंद से खेलता है तब वह खेलता है ।

१० यदा स धावति तदा अहं हसामि=जब वह दौड़ता है तब मैं हँसता हूँ ।

११. मह्य आम्र देहि=मुझे आम दे ।

१२. किम् अद्य त्वम् आम्र भक्षयिष्यसि=क्या तू आज आम खावगा ? ।

१३ किम् अद्य अस्ति=आज क्या है ?

१४. अद्य उष्ण दिन अस्ति अत आम्र न भक्षय=आज गर्म दिन है इसलिये आम न खा ।

१५. तर्हि शीत दुग्धम् देहि=तो ठण्डा दूध दे ।

१६. स्वीकुरु, अत्र शीत मिष्ट च दुग्ध अस्ति=ले, यहा ठण्डा और मीठा दूध है ।

शब्द

खनति=(वह) खोदता है ।	खनसि=(तू) खोदता है ।
खनामि=खोदता हू ।	रक्षसि=वह रक्षा करता है ।
रक्षसि=तू रक्षा करता है ।	रक्षामि=मैं रक्षा करता हूँ ।
भूमिं=ज़मीन को ।	व्यर्थं=व्यर्थ ।
गां=गाय को ।	गायनं=गाना ।

स्वकीय=अपनी ।   परकीयं=दूसरे की ।

कूपं=कुएँ को ।   नर्तनं=नाचना ।

वाक्य

१. तस्य पिता अतीव वृद्धः अस्ति=उसका पिता बहुत ही बूढ़ा है।

२. परन्तु तस्य भ्राता युवा अस्ति=परन्तु उसका भाई जवान है ।

३ स भूमिं किमर्थं अद्य खनति=वह भूमि को आज किस लिये खोदता है ।

४. स अद्य व्यर्थं खनति=वह आज व्यर्थ खोदता है ।

५. स स्वकीयां भूमिं रक्षति न वा=वह अपनी भूमी की रक्षा करता है या नहीं ।

६. स स्वकीयां गां आनयति=वह अपनी गाय को लाता है ।

७. स गृहं रक्षति किं=वह घर की रक्षा करता है क्या ?

८. अथ किं, स न केवलं गृहं रक्षति=और क्या ? वह न केवल घर की रक्षा करता है ?

९. परन्तु उद्यानं अपि वरं रक्षति=परन्तु बाग की भी अच्छी तरह रक्षा करता है ।

१०. स न तथा रक्षति यथा देवप्रियः=वह नहीं वैसी रक्षा करता जैसी देवप्रिय ।

११. देवप्रियः अतीव बालः अस्ति=देवप्रियः अत्यन्त बालक (छोटा) है ।

१२ परन्तु भद्रसेनः युवा अस्ति=परन्तु भद्रसेन जवान है ।

१३. अतः स प्रातः काले सुष्ठु धावति=इस कारण वह प्रातः अच्छा दौड़ता है ।

यामि=(तू) जाता है । यातिः=(वह) जाता है ।
उदकं=जल । गुणः=गुण ।

संस्कृत वाक्य

यत्र धूमः तत्र अग्निः अस्ति । अहं तं ग्रामं गच्छामि, यत्र वेदस्य ज्ञाता वसति । तस्मै गुरवे नमः । नृपतिः शास्त्रस्य ज्ञात्रे द्रव्यं ददाति । यस्य बुद्धिः बलं अपि तस्य एव । शत्रुं भूपतिः जयति अहं मार्यं नगराद् बहिः गच्छामि । तस्य हस्तात् माला पतिता । स एव पर्वतः यत्र वसिष्ठः मुनिः वसति । 'व्याघ्रात् भयं भवति । गुरोः ज्ञानं भवति । मृगः वनात् वनं गच्छति ।।

भाषा के निम्न वाक्यों को संस्कृत कीजिये :—

(१) ऊंचे से न बोल । (२) तू उस गांव को जा । (३) उसका धन दे । (४) मुझे अन्न दे । (५) मैं ऊपर ठहरता हूँ । (६) मैं गर्म जल कभी नहीं पीता । (७) उठ तेरे गुरु के लिये फल दे । (८) अब तू खेल । (९) आज मैं नहीं खेलूँगा । (१०) तू सच बोलता है ।

पाठ १६

शब्द

यस्य=जिसका । कस्य=किसका ।
अस्य=इसका । क्व=कहां ।
दूरं=दूर । नियमः=नियम ।
सर्वस्य=सब का । मित्रस्य=मित्र का ।
देवस्य=ईश्वर का । नितान्तं=बिलकुल ।
पादत्राणं=जूता, बूट । मिष्टं=मिठाई ।
वैद्यः=वैद, डाक्टर ।

१. यस्य पुस्तकं अस्ति तस्मै देहि=जिसकी पुस्तक है उसी को दे।
२. एतत् कस्य गृहं अस्ति=यह किसका घर है।
३. एतत् मम मित्रस्य गृहं अस्ति=यह मेरे मित्र का घर है।
४. त्वं कथं जानासि=तू कैसे जानता है।
५. यद् अहं वदामि तत् सत्यं अस्ति=जो मैं बोलता हूँ वह सच है।
६. तस्य माता किं वदति=उसकी माता क्या बोलती है।
७. मम पादत्राणं आनय=मेरा जूता ले आ।
८. कुत्र अस्ति तव पादत्राणं=कहां है तेरा जूता?
९. तत्र अस्ति तत् पश्य=वहां है वह देख।
१०. स दूरं गच्छति किं=वह दूर जाता है क्या।
११. स मिष्टं भक्षयति=वह मिठाई खाता है।
१२. अस्य लेखनी कुत्र अस्ति=इसकी कलम कहां है?
१३. त्वं इदानीं किं लिखसि=तू अब क्या लिखता है?
१४. स रक्तं पुष्पं पश्यति=वह लाल फूल देखता है।

शब्द

करपट्टिका=रोटी, फुलका।	तक्रं=छाछ, लस्सी दही की
कुण्डलिनीः=जलेबियां।	दधि=दही।
कथिका=कढ़ी।	व्यंजनं=चटनी।
गृह्णामि=लेता हूँ।	गृह्णासि=तू लेता है।
गृह्णाति=वह लेता है।	दैवं=नसीब।
नवनीत=मक्खन।	घृतं=घी।
दुग्ध=दूध।	सूपं=दाल।
गृहाण=ले।	पद=सिर।
लिख=लिख।	दुर्दैवं=दुर्भाग्य आफत।

१. मह्यं इदानीं एव करपट्टिकां देहि=मुझे अभी रोटी दे ।

२. त्वं प्रातः तक्रं पिबसि किं=तू सवेरे लस्सी पीता है क्या ।

३. स प्रातः कुंडलिनीः भक्षयति=वह प्रातः जलेबियां खाता है ।

४. मह्यं कथिकां ददासि किं=मुझे कढ़ी देगा क्या ?

५. स व्यंजनं भक्षणार्थं इच्छति=वह चटनी भक्षण करना चाहता है ।

६. एतत् नवनीतं गृहाण=यह मक्खन ले ।

७. घृतं तत्र किमर्थं नयसि वद=घी वहां किस लिये ले जाता है, कह ।

८. अहं भक्षणार्थं घृतं दधि च नयामि=मैं खाने के लिये घी और दही ले जाता हूँ ।

९. यदि त्वं सूपं इच्छसि तर्हि गृहाण=अगर तू दाल चाहता है तो ले ।

१०. स बहु व्यञ्जनं भक्षयति तत् न वरं=वह बहुत चटनी खाता है, यह अच्छा नहीं ।

११. वद त्वं कुत्र गच्छसि=बोल तू कहां जाता है ।

पूर्व पाठों में ऋकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप बनाने का प्रकार दिया है । कई ऋकारान्त शब्दों के रूप भिन्न २ प्रकार से भी होते हैं । विशेष भिन्नता नहीं होती है केवल एक रूप में भेद होता है :—

ऋकारान्तः पुलिंगः 'पितृ' शब्दः ।

१ प्रथमा	पिता	पिता
२ द्वितीया	पितर	पिता को
३ तृतीया	पित्रा	पिता ने

४ चतुर्थी	पित्रे	पिता के लिये
५ पंचमी	पितु:	पिता से
६ षष्ठी	,	पिता का
७ सप्तमी	पितरि	पिता में
सम्बोधन	(हे) पित:	हे पिता

पिता शब्द में और धाता शब्द में इतना ही फरक है कि धाता शब्द का द्वितीया का एकवचन 'धातारं' हुआ है और पिता शब्द का 'पितरं' हुआ है। शब्द 'पितारं' नहीं हुआ। यही विशेषता निम्न शब्दों में हुआ करती है। पाठकों को उचित है कि वे इस बात को स्मरण रक्खें।

पितृ शब्द के समान चलने वाले ऋकारान्त पुलिंग शब्द

भ्रातृ=भाई	जामातृ=दामाद।
नृ=नर, पुरुष।	देवृ=देवर।
सस्तृ=स्तुति करने हारा।	सव्येष्टृ=गाड़ीवान।

वाक्य

१ पिता पुत्रं पश्यति=पिता लड़के को देखता है।
२. पुत्र पितरं पश्यति=लड़का पिता को देखता है।
३ पित्रा पुत्राय वस्त्रं दत्तं=पिता ने पुत्र के लिये वस्त्र दिया।
४ भ्राता भ्रातरं द्वेष्टि=भाई भाई से द्वेष करता है।
५ भ्रात्रा धनं दत्तं=भाई ने धन दिया।
६ जामात्रे वस्त्रं देहि=दामाद के लिये वस्त्र दे।
७ पित्रे नमः कुरु=पिता को नमस्कार कर।

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकते हैं। उक्त वाक्यों के निषेध अर्थ के वाक्य:—

१ पिता पुत्रं न पश्यति। २ पुत्रः पितरं न पश्यति। ३ पित्रा पुत्राय वस्त्रं न दत्तम्। भ्राता भ्रातरं न द्वेष्टि। ४ भ्रात्रा धनं न दत्तम्। ६ जामात्रे वस्त्रं न देहि।

निम्न वाक्यों का संस्कृत कीजिए:—

वह गांव को जाता है। २ जहां तू जाता है, वहां मैं जाता हूं। ३ क्या तू सदा बाग में जाता है। ४ तू कहां जाता है। ५ वह दिन में नगर को जाता है और रात में घर को जाता है। ६ हरिश्चन्द्र फल खाता है।

निम्न वाक्यों के भाषा के वाक्य बनाइए:—

१ अहं इदानीं फलं नैव भक्षयामि। २ हरिश्चन्द्रः पुस्तकं तत्र नयति। ३ किमर्थं त्वं अपूपं तत्र नयसि। ४ अहं गृहं गत्वा मम धौतं वस्त्रं आनयिष्यामि। ५ ब्रूहि, यज्ञ प्रयः कुत्र अस्ति।

पाठ १७

शक्तिः=सामर्थ्य।	शक्यः=मुमकिन।
शक्नोमि=सकता हूँ।	शक्नोषि=(तू) सकता है।
शक्नोति=(वह) सकता है।	वक्तुं=बोलने के लिये।
स्वभाषां=अपनी भाषा।	नारंगः=संगतरह का वृक्ष।
चन्द्रः=चांद।	संस्कृतं=संस्कृत भाषा।
आंग्लभाषा=अँग्रेजी भाषा।	देश भाषा=देशी भाषा।
नवीनं=नवीन, नई।	पुराणं=पुराना।
मातृभाषा=मातृभाषा (मादरी) जबान।	
आपणं=बाजार।	नारंगं=संगतरह (फल)

वाक्य

१. त्वं संस्कृतं वक्तुं शक्नोषि किं ?=क्या तू संस्कृत भाषा बोल सकता है ?
२. नहि नहि, अहं आंग्ल भाषा वक्तुं शक्नोमि=नहीं नहीं, मैं अँग्रेज़ी बोल सकता हूँ।
३. किं एतत् वरं अस्ति यत् त्व स्वभाषां वक्तुं न शक्नोषि ?=क्या यह अच्छा है कि तू अपनी भाषा नहीं बोल सकता ?
४. कः एवं वदति ?=कौन ऐसा कहता है ?
५. तर्हि संस्कृतं किं न पठसि ?=तो संस्कृत क्यों नहीं पढ़ता ?
६. अहं पठामि एव=मैं पढ़ता ही हूँ।
७. त्वं तत्र गन्तुं शक्नोषि किं ?=क्या तू वहाँ जा सकता है ?
८. स क्रीडितुं शक्नोति=वह खेल सकता है।
९. अहं लेखितुं न शक्नोमि=मैं लिख नहीं सकता।
१०. स वरं लेखितुं शक्नोति=वह अच्छा लिख सकता है।
११. स नवीनं पुस्तकं लिखति किम् ?=क्या वह नवीन पुस्तक लिखता है।
१२. तस्य गृहं अतीव पुराणं अस्ति=उसका घर बहुत ही पुराना है।
१३. भो मित्र ! एतत् आसनं गृहाण=हे मित्र ! यह आसन ले।

शब्द

अनृतं=असत्य।	अप्रियं=अप्रिय।
प्रियं=प्रिय।	भव=हो।
अलंकारः=भूषण, जेवर।	आचार्यः=गुरु, शिक्षक।
अध्यापकः=पढ़ाने वाला।	तूष्णीं=चुप चाप।
वक्ता=बोलने हारा।	प्रियवादः=प्रिय बोलने वाला।
किरणः=किरना।	वृथा=व्यर्थ।

असत्यवादी=असत्य बोलने वाला।
आमः=कच्चा।

१. किमर्थं अनृतं वदसि=क्यों असत्य बोलता है।

२. अहं कदापि असत्यं नैव वदामि=मैं कभी असत्य बोलता ही नहीं।

३. स वक्ता सदा एव अप्रियं वदति=वह बोलने वाला सदा अप्रिय बोलता है।

४. किं त्वम् अलंकारं गृह्णासि=क्या तू जेवर लेता है।

५. आचार्यः सत्वरं आगमिष्यति=गुरु शीघ्र आवेगा।

६. स अध्यापकः शीघ्रं न गमिष्यति=वह अध्यापक शीघ्र नहीं जावेगा।

७. सत्यं प्रियं च वद=सत्य और प्रिय बोल।

८. स तत्र तूष्णीं तिष्ठति=वह वहाँ चुप चाप खड़ा है।

९. बालकः तूष्णीं नैव तिष्ठति=बालक चुप नहीं रहता है।

१०. स आचार्यं सदा पुस्तकं पठति=वह शिक्षक सदा पुस्तक पढ़ता है।

११. स एव वृथा वदति=वह ऐसा व्यर्थ बोलता है।

१२ स प्रियवादी आचार्यः कुत्र गतः=वह प्रिय बोलने वाला आचार्य कहां गया ?

१३. स अन्यं नगरं गच्छति=वह दूसरे शहर को जाता है।

इस समय तक पाठकों ने अ, इ, उ, ऋ ये स्वर जिनके अन्त में हैं, ऐसे पुल्लिंगी शब्द चलाने का प्रकार जान लिया है। अब कुछ पुल्लिंग सर्वनामों के रूप देते हैं। जिनको जानने से पाठक संस्कृत में अनेक प्रकार के वाक्य बना सकते हैं।

अकारान्तः पुल्लिंग 'सर्व' शब्दः

१ प्रथमा	सर्वः	सब
२ द्वितीया	सर्वं	सब को
३ तृतीया	सर्वेण	सब ने
४ चतुर्थी	सर्वस्मै	सब के लिये
५ पंचमी	सर्वस्मात्	सब से
६ षष्ठी	सर्वस्य	सब का
७ सप्तमी	सर्वस्मिन्	सब में

इन रूपों को जानने से पाठक बहुत कुछ वाक्य बना सकते हैं। देखिये :—

१. सर्वः जनः अन्नं भक्षयति=सब लोग अन्न को खाते हैं।

२. सर्वं धनं तस्मै देहि=सारा धन उसको दे।

३. सर्वेण द्रव्येण स किं करोति=सारे धन से वह क्या करता है।

४. सर्वस्मै याचकजनाय मोदकान् देहि=सब मांगने वालों को लड्डू दे।

५. सर्वस्मात् ग्रामात् जनः आगत=सब गांवों से लोग आये हैं।

६. सर्वस्य पुस्तकस्य किं मूल्यं अस्ति=सारी पुस्तक का क्या मूल्य है।

७ सर्वस्मिन् ग्रन्थे धर्मः प्रतिपादित=सारे ग्रन्थ में धर्म का प्रतिपादन किया है।

इसी प्रकार निम्न सर्वनाम चलते हैं :—

अन्य=दूसरा।	विश्व=सब।
एक=एक।	कः=कौन।

पाठक इनके रूप बना सकते हैं और वाक्यों में इनको प्रयुक्त कर सकते हैं। अब नीचे कुछ वाक्य देते हैं, जो पाठक पढ़ते ही समझ जायेंगे।

१ एकस्मिन् दिवसे अहं तस्य गृहं गतः। २ अन्यस्मिन् दिने जगदीशरायः अत्र आगतः। ३. अन्यस्य धनं न स्वीकुरु। ४ देवदत्तः सर्वं द्रव्यं तस्मै न ददाति किम्। ५ यदि एकस्मात् ग्रामात् पुरुषः न आगतः। ६ तर्हि अन्यस्मात् ग्रामात् स कथं आगमिष्यति? ७ एकस्मिन् मार्गे यथा दुःखम्[1] अस्ति न तथा अन्यस्मिन् मार्गे अस्ति। ८ अतः अन्येन मार्गेण एव तं ग्रामं गच्छ। ९ एकेन गुरुणा एव सर्वं पुस्तकं पाठितम्[2]। १० अन्यस्मिन् पुस्तके सा[3] कथा नास्ति।

१ द्वारं पिधेहि। २ पात्रं इदानीं कुत्र नयसि। ३ स मोदकं आम्रं च मध्याह्ने भक्षयति। ४ वृक्षे मूषकं पश्य। ५ नृपतिः चौरं ताडयति। ६ यदा चौरः तत्र गमिष्यति तदा त्वं अपि तत्र एव गच्छ। ७ यथा त्वं दुग्धं पिबसि तथा एव स पिबति। ८ स्वर्गस्य द्वारं तेन उद्घाटितम्। ९ हरद्वार नगरे यथा 'स्वादु दुग्धं' भवति न तथा अमृतसरे। १० यथा विहगः आकाशे गच्छति, तथा मनुष्यः अत्र गच्छति। ११ अद्य कुमारः पुत्र वर्तते।

पाठ १८

मार्जनलेपः=साबून।	पर्यंकः=पलंग।
आलस्यं=आलस।	आनदः=आनन्द।
इन्धनं=लकड़ी, ईंधन।	शौचं=शौच।

१ दुःखं—तकलीफ। २ पाठितं—पढ़ाया। ३ सा—वह।

उत्तिष्ठामि=उठता हूँ।	उत्तिष्ठसि=(तू) उठता है।
पंकः=कीचड़।	सूत्रं=धागा।
हवनार्थं=हवन के लिये।	इह=यहां।
इति=ऐसा।	उत्तिष्ठति=(वह) उठता है।
हवनकुंडं=हवनकुंड।	यज्ञसामग्री=हवन सामग्री।

१. भो शिष्य! उत्तिष्ठ आलस्यं न कुरु=हे शिष्य! उठ आलस न कर।

२. अहं उत्तिष्ठामि, शौचं स्नानं च कृत्वा हवनार्थं आगच्छामि=मैं उठता हूँ, शौच और स्नान करके हवन के लिये आता हूँ।

३. शीघ्रं उत्तिष्ठ च अत्र सत्वरं आगच्छ=जल्दी उठ और यहां शीघ्र आ।

४. तत्र हवनार्थं इन्धनं नास्ति=वहां हवन के लिये लकड़ी नहीं है।

५. यज्ञकुण्डं कुत्र अस्ति=हवन कुण्ड कहाँ है।

६. अहं न जानामि=मैं नहीं जानता।

७. तत्र एव पश्य शीघ्रं च अत्र आनय=वहाँ ही देख और शीघ्र यहाँ ले आ।

८. भो मित्र! हवनकुंडं अहं आनयामि त्वं इन्धनं आनय=हे मित्र हवनकुण्ड मैं लाता हूँ तू लकड़ी ले आ।

९. यज्ञसामग्री अत्र अस्ति=हवन सामग्री यहाँ है।

१०. स्नानं कृत्वा एव हवनं करोमि=स्नान करके ही हवन करता हूँ।

११. स्नानं संध्यां च कृत्वा हवनं कुरु=स्नान और संध्या करके हवन कर।

१२. इदानीं देवदत्तः संध्यां करोति=अब देवदत्त संध्या करता है।

शब्द

आरभे=मैं आरम्भ करता हूँ।	आरभसे=तू आरम्भ करता है।
आरभते=वह आरम्भ करता है।	उपास्य=उपासना करके।
एहि=आओ।	कुशलः=निरोगी, प्रवीण।
मां=मुझे।	कंबलं=कंबल।
आज्ञापयति=आज्ञा करता है।	आज्ञापयसि=आज्ञा करता है।
आज्ञापयामि=आज्ञा करता हूँ।	त्वां=तुझे।
तं=उसको।	शुभं=अच्छा।
इति=ऐसा, यह।	ऊर्णावस्त्र=ऊनी कपड़ा।

वाक्य

१. रामचन्द्रः इदानीं कुशलः अस्ति=रामचन्द्र अब कुशल है।

२. स प्रातः एव संध्यां उपास्य बहिः गच्छति=वह सवेरे ही संध्या करके बाहर जाता है।

३. स मध्याह्ने आगच्छति तदा भोजनं च करोति=वह दोपहर (के समय) आता है और तब भोजन करता है।

४. स मां आज्ञापयति=वह मुझे आज्ञा करता है।

५. अहं त्वां न आज्ञापयामि=मैं तुझको नहीं आज्ञा करता।

६. स तं किमर्थं आज्ञापयति=वह उसको किस लिये आज्ञा करता है?

७. स कदापि तं न आज्ञापयति=वह उसको कभी नहीं आज्ञा करता।

८. एहि पश्य एतत्=आ इसको देख।

९. स शुभं कर्म इदानीं आरभते=वह श्रेष्ठ कार्य अब आरम्भ करता है।

१०. अहं इदानीं संस्कृतं पठितुं आरभे=मैं अब संस्कृत पढ़ना प्रारंभ करता हूँ।

११. त्वं अपि किं न आरभसे=तू भी क्यों नहीं आरम्भ करता।

१२. समयः न अस्ति अतः न आरभे=समय नहीं है इसलिये नहीं आरम्भ करता।

१३ त्वं इदानीं कुशलः असि किं ?=तू अब कुशलपूर्वक है क्या ?

१४. स तत्र गत्वा भूमिं खनति=वह वहाँ जाकर जमीन खोदता है।

१५. तत्र न गच्छ इति स त्वां आज्ञापयति=वहाँ तू न जा ऐसी वह तुझे आज्ञा करता है।

पुल्लिंग में "किं" शब्द के रूप

१. प्रथमा	कः	कौन
२ द्वितीया	कं	किसको
३. तृतीया	केन	किसने
४ चतुर्थी	कस्मै	किसके लिये
५. पंचमी	कस्मात्	किस से
६. षष्ठी	कस्य	किसका
७. सप्तमी	कस्मिन्	किस में

गत=गया।	आलेख्यं=चित्र, तसवीर।
मंदिरं=घर, तसवीर।	आलिख्यं=लिख कर।
ददाति=(वह) देता है।	ददासि=(तू) देता है।
भवति=(वह) होता है।	भवसि=(तू) होता है।
भवामि=होता है।	मत्वा=मान कर।
गृहीत्वा=लेकर।	भूत्वा=होकर।

१. कः तत्र अस्ति=कौन वहाँ है ?

२. त्वं कं पश्यसि=तू किसको देखता है ?

३. केन मार्गेण स गतः=किस मार्ग से वह गया ?

४ कस्मै धनं ददासि=किसके लिये धन देते हो ?

५. कस्मात् ग्रामात् स आगच्छति=किस गाँव से वह आता है।

६. कस्य इतत् पुस्तक अस्ति=किस की यह पुस्तक है ?

७ कस्मिन् पुस्तके तत् आलेख्यम् अस्ति=किस पुस्तक में वह तसवीर है ?

८. कः तत्र न गच्छति=कौन वहाँ नहीं जाता ?

९. कस्मै कारणाय त्वं धनं न ददासि=किस कारण से तू धन नहीं देता ?

१०. कस्मिन् स्थाने तस्य पाठशाला अस्ति=किस स्थान में उसकी पाठशाला है ?

किं कृष्णः मंदिर न गच्छति ? अद्य कृष्णः मंदिरं नैव गच्छति। देवदत्तः यदि रामचन्द्राय पुस्तकं न ददाति तर्हि कस्मै ददाति। त्वं कुत्र गत्वा इदानीं अत्र आगतः। मित्र, पश्य तस्य गृहं अत्र एव अस्ति। मम गृहं अत्र नास्ति। तव वस्त्र मलिनम्। कं प्रणम्य स आगतः। स गुरु प्रणम्य अत्र आगतः।

निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइए।

हे विष्णुदत्त तू कब आवेगा। मैं शाम के समय सध्या करके वहां जाऊँगा। तू वहां क्यों नहीं जाता, कह। यदि तू जायगा तो मैं अवश्य जाऊँगा। यह तुम को पीटता है। रामचन्द्र यज्ञदत्त के लिये पुस्तक नहीं देता। देख, मेरा घर कैसा उत्तम है। मैं ठंडे पानी से स्नान करके आया। तू अब पुस्तक पढ़। मैं भोजन करके पत्र पढ़ूँगा।

पाठ १६

मसूराः=मसूर।	यवाः=जौ।
तिलाः=तिल।	गोधूमाः=गेहूँ, कनक।
मनुष्यः=मनुष्य।	जनः=मनुष्य।
पुरुषः=मनुष्य।	काचः=शीशा।
कलम=कलम, लेखनी।	तण्डुलाः=चावल।
मुद्गाः=मूँग	माषाः=माष, माँह।
स्त्री=स्त्री।	सन्ति=हैं।
कृष्णाः=काले।	अर्ध=आधा।

वाक्य

१. स पुरुषः नगरं गत्वा जलं आनयति=वह पुरुष शहर जाकर जल लाता है।

२ अत्र गोधूमाः सन्ति परन्तु यवा न सन्ति=यहाँ गेहूँ हैं परन्तु जौ नहीं हैं।

३. तिलाः कृष्णाः सन्ति तथा एव माषा अपि=तिल काले हैं वैसे ही माष भी।

४. माषाः न तथा कृष्णाः यथा तिलाः=माष वैसे काले नहीं, जैसे तिल।

५. पश्य, अत्र पुरुषः अस्ति=देख यहां मनुष्य है।

६. अत्र पुरुषः अस्ति परन्तु स्त्री नास्ति=यहां मनुष्य है परन्तु स्त्री नहीं है।

७. दुर्गादासः किं करोति=दुर्गादास क्या करता है?

८. बापूरामः अत्र तिष्ठति लिखति च=बापूराम यहाँ ठहरता है और लिखता है।

९. तव दूतः लिखितु न शक्नोति=तेरा दूत लिख नहीं सकता ।
१०. मम स्त्री संस्कृतं वक्तु शक्नोति=मेरी स्त्री संस्कृत बोल सकती है ।
११. तत्र उपविश, यत्र बालकः स्वपिति=वहां बैठ, जहाँ बालक सोता है ।
१२. अत्र बालकः नास्ति=यहां बालक नहीं है ।
१३. तर्हि स कुत्र अस्ति इति अहं न जानामि=तो वह कहा है यह मैं नहीं जानता ।
१४. स इदानीं उपरि अस्ति=वह अब ऊपर है ।
१५. त्वं नीचैः गच्छ=तू नीचे जा ।

शब्द

त्यजति=छोड़ता है ।	त्यजसि=तू छोड़ता है
त्यजामि=छोड़ता हूँ ।	त्यक्त्वा=छोड़कर ।
त्यक्तुं=छोड़ने के लिये ।	हस्तौ=दोनों हाथ ।
प्रक्षालयति=(वह) धोता है ।	प्रक्षालयसि=(तू) धोता है ।
प्रक्षालयामि=धोता हूँ ।	प्रक्षालयितु=धोने के लिये ।
प्रक्षालय=धो ।	मुखं=मुँह ।
पादौ=दोनों पांव ।	प्रक्षालनं=धोना ।
कठिनं=सख्त ।	त्यज=छोड़ ।
प्रथमं=पहिले ।	जडः=मूर्ख

१. स हस्तौ पादौ च प्रक्षालयति=वह हाथ और पाँव धोता है ।
२. अहं वस्त्रं प्रक्षालयामि=मैं कपड़ा धोता हूँ ।
३. त्वं किं इदानीं प्रक्षालयसि=तू क्या अब धोता है ?
४. त्वं इदानीं एव किमर्थं तत् प्रक्षालयसि=तू अभी किस लिये उसे धोता है ।

५ अद्य सायङ्काले जलं आनय वस्त्रं च प्रक्षालय=आज सायंकाल जल ला और वस्त्र धो।
६. त्वं असत्यं किमर्थं न त्यजसि=तू असत्य बोलना क्यों
७. स असत्यं शीघ्रं एव त्यजति=वह असत्य को जल्दी ही छोड़ देता है।
८. प्रथमं हस्तौ पादौ च प्रक्षालय=पहिले हाथ और पाँव धो।
९. पश्चात् भोजनं कुरु=पीछे भोजन कर।
१०. प्रातः एव उत्तिष्ठ मुखं च प्रक्षालय=सबेरे ही उठ और मुँह धो।
११. स प्रातः उत्तिष्ठति बहिः गच्छति तत्र मुखं प्रक्षालयति=वह सबेरे ही उठकर बाहर जाता है और वहाँ मुँह धोता है।
१२ स उष्णं जलं न पिबति=वह गरम जल नहीं पीता।
१३. अहं शीतं जलं पिबामि=मैं ठंडा जल पीता हूँ।
१४. त्वं तत्र गच्छ वस्त्रं च प्रक्षालय=तू वहाँ जा और कपड़ा धो।
१५. जडः न पठति=मूर्ख नहीं पढ़ता।
१६. स बालकः मूढः नैव अस्ति=वह बालक मूढ़ नहीं है।

पुल्लिंगः "अस्मत्" शब्दः।

१ प्रथमा	अहं	मैं
२ द्वितीया	मां	मुझे
३ तृतीया	मया	मैंने
४ चतुर्थी	मह्यं	मेरे लिये
५ पंचमी	मत्	मेरे से
६ षष्ठी	मम	मेरा
७ सप्तमी	मयि	मुझ में

किं करोति ? स प्रातः उत्थाय तपः आचरति । यज्ञमित्रः भूमित्रस्य पुत्रः अस्ति । स तं मुनिं प्रणम्य अत्र आगच्छति । स मुनिः कस्मात् स्थानात् अत्र आगतः इति त्वं जानासि किम् ? स मुनिः कस्मात् ग्रामाद् अत्र आगतः अहं नैव जानामि । यज्ञमित्रः जानाति । हे मित्र किं त्वं जानासि ? स मुनिः अयोध्यानगरात् अत्र आगतः । कदा आगतः इति अहं न जानामि । स सर्वं शास्त्रं जानाति ।

पाठ २०

पाठक ! इस समय तक आपके उन्नीस पाठ हो चुके हैं, और आपके पास उपयोगी अर्थात् नित्य व्यवहार में उपयुक्त होने वाले बहुत शब्द आ चुके हैं, अगर आपने ये शब्द स्मरण किये होंगे तथा उस उस पाठ में जो जो वाक्य दिये हैं, उनकी पद्धति की ओर ध्यान देकर, उन वाक्यों को अच्छी प्रकार कण्ठ किया होगा, तो निःसन्देह दैनिक व्यवहार के उपयोगी कतिपय वाक्य आप, पढ़ सकेंगे । प्रत्येक पाठ में आपके पास दस बीस उपयोगी शब्द आते हैं, और जो पाठक उनका उपयोग अधिक करेंगे वे संस्कृत भाषा जल्दी बोल सकेंगे ।

आज के पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता, परन्तु जो शब्द और वाक्य पूर्वोक्त उन्नीस पाठों में आ चुके हैं उन्हीं को आज दुबारा याद कीजिये, ताकि वे भूल न जांय । अगर आप पिछला भूलेंगे तो आप आगे नहीं बढ़ सकेंगे, हम ऐसे क्रम से वाक्य देने का यत्न करते हैं कि शब्दों को कण्ठ किये बिना ही शब्द आप ही स्मरण हो जायँ । तथापि हमारा प्रयत्न सफल होने के लिये आप का दृढ़ अभ्यास भी तो होना चाहिये ।

आप नये संस्कृत वाक्य बनाने के समय डरते होंगे, कि शायद

परीक्षा

सूचना—पाठकों के इस समय तक बीस पाठ हो चुके हैं। यहाँ उचित है कि पाठक पूर्व पाठों को दुबारा पढ़ कर सब शब्द तथा वाक्य स्मरण करें। और इन प्रश्नों का उत्तर देने के पश्चात् इक्कीसवें पाठ को प्रारम्भ करें।

परीक्षा के प्रश्न

(१) निम्न स्वरों के सन्धि कीजिये:—

इ + ई	आ + औ
आ + इ	उ + अ
अ + ए	इ + आ
ओ + आ	ऐ + इ

(२) निम्न शब्दों की सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप दीजिये:—

रामः। देवदत्तः। ग्रामः। इन्द्र। नृपति। भूपतिः। भानु। कर्तुः। कर्तृ। धर्तृ।

(३) निम्न शब्दों के पञ्चमी के एक वचन के रूप लिखिये:—

नरपति.। चित्रभानु.। वसुः। कः। अस्मद्। भोक्तृ। दातृः। रथः। कविः शम्भु।

निम्न वाक्यों के अर्थ कहिए।

(१) किं त्वं अद्य ग्रामं न गच्छसि? (२) स तत्र गत्वा किं किं करोति? (३) अहं रात्रौ ग्रामाद् बहिः न गच्छामि। (४) स दिवा यत्र कुत्र अपि भ्रमति। (५) अहं परश्वः हरिद्वारं गत्वा गंगाजलं आनेष्यामि। (६) पर्वतस्य शिखरं रमणीयं नास्ति। (७) तेन उत्तम पुस्तकं रचितम्। (८) स स्नात्वा पठति, पठित्वा भोजनं करोति। (९) रवेः प्रकाशो भवति। (१०) नृपतेः प्रसादेन

तेन धनं प्राप्तम्। (११) मुनिना मोदकः न भक्षितः। (१२) स रात्रौ भोजनं न करोति। (१३) सेनापतिना सैन्यं अत्र आनीतम्। (१४) वह्निना सर्वं गृहं दग्धम्[1]। (१५) वाल्मीकिना रामायणं रचितम्। (१६) व्यासेन महाभारतं लिखितम्।

(५) निम्न वाक्यों का संस्कृत कीजिए:—

१ कब वह नगर को जायगा। २ अब तू कहां जाता है। ३ बोल, तू वहां क्यों नहीं जाता। ४ हे भाई! तू वहां शीघ्र जा। ५ जहाँ तू दिन में जाता है वहां वह रात्री में जाता है। ६ वहां वह कैसे परसों जा सकता है। ७ तू अब वन को जा, मैं नगर को जाऊँगा और मेरा भाई गांव को जायगा। ८ मैं घर जाऊँगा। ९ तू वहाँ जल्दी जा। १० आज विष्णु शर्मा आ गया ११ मैं परसों स्नान करूँगा।

पाठ ११

रेखा=लकीर।	लोभः=लालच।
सिद्धं=तैयार।	शुद्धं=स्वच्छ।
वायुः=हवा।	नगरे=शहर में।
स्वभावः=आदत।	वेषः=पहनाव।
मार्जारं=बिल्ली को।	अरवं=घड़े को।
आकाशः=आकाश।	तारकाः=तारागण।

१. तव भोजनं सिद्धं अस्ति इति त्वं जानासि किम्=तेरा भोजन तैयार है ऐसा तू जानता है क्या?

२. भो मित्र! अहं न जानामि=हे मित्र! मैं नहीं जानता।

३. एतत् ज्ञात्वा भोजनाय कथं न आगमिष्यामि=यह जानकर

१ दग्धं=जला।

भोजन के लिये कैसे नहीं आऊँगा।

४. प्रातः एव उत्तिष्ठ। व्यायाम च कुरु=सवेरे ही उठ और व्यायाम कर।

५. त्वं प्रात· वनं किमर्थं गच्छसि=तू सवेरे वन को क्यों जाता है।

६. तत्र प्रात शुद्ध· वायु· भवति=वहाँ सवेरे शुद्ध हवा होती है।

७. किं नगरे शुद्धः वायु न भवति=क्या शहर मे शुद्ध वायु नही होता।

८. नगरे शुद्धः वायुः कदापि न भवति=शहर में शुद्ध वायु कभी नहीं होती।

९ त्वं अत्र सायंकाल पर्यंत स्थातुं शक्नोपि किम्=तू यहा शाम तक ठहर सकता है क्या ?

१०. स अतीव दुर्बलः जात अत· गन्तुं न शक्नोति=वह बहुत दुर्बल हो गया है, इसलिए चल नहीं सकता।

११. त्व इदानीं ज्वरितः असि, अत. अल्पं अन्न भक्षय=तू अब ज्वर युक्त है, इसलिये थोड़ा अन्न खा।

१२. स किमर्थं मार्जार ताडयति=वह किस लिये बिल्ली को मारता है ?

१३. स कदा नीरोग भविष्यति=वह कब नीरोग होगा ?

१४. आकाशे तारकाः पश्य=आकाश में तारे देख।

१५. बालकः वने क्रीडति किम्=बालक वन में खेलता है क्या

भानु=सूर्य।	अस्तसमये=सूर्य डूबने के समय
उदयसमये=उदयकाल में	उदयते=उगता है।
हसन=हसना।	प्रतिमा=मूर्ति।

रजकः=धोबी। गृहीत्वा=लेकर।
दुग्धपानार्थं=दूध पीने के लिये।
गोदुग्धं=गाय का दूध! नमनं=नमस्कार।
आलोकचित्रं=फोटोग्राफ।

१. एष भानुः आकाशे उदयते!=यह सूर्य आकाश में निकलता है।
२. यदा भानुः उदयते तदा आकाशः रक्तो जायते=जब सूर्य निकलता है तब आकाश लाल होता है।
३. यथा उदय-समये तथा अस्त-समये अपि भवति=जैसा उदय काल में वैसा अस्त समय में भी होता है।
४. भद्रसेनः अतीव दरिद्रः अस्ति इति त्वं न जानासि किम्=भद्रसेन अत्यन्त दरिद्र है, यह तू नहीं जानता क्या।
५. पश्य स किमर्थं हसति=देख वह क्यों हंसता है।
६. अहमदः मार्गे पतित अतः स हसति=अहमद रास्ते पर गिर पड़ा इसलिये वह हंसता है।
७. किं एतद् वरं अस्ति=क्या यह ठीक है।
८. एवं हसनं वरं नैव अस्ति=इस प्रकार हंसना ठीक नहीं है।
९. इदानीं सः रजकः वस्त्रं कुत्र नयति=अब वह धोबी वस्त्र कहां ले जाता है।
१०. रजकः प्रातः एव वस्त्रं गृहीत्वा कूपं गच्छति=धोबी सवेरे ही वस्त्र लेकर कूएं पर जाता है।
११. स तत्र गत्वा वस्त्रं प्रक्षालयति=वह वहां जाकर वस्त्र धोता है।
१२. स परकीयां गां किमर्थं गृहं आनयति=वह दूसरे की गाय किस लिये घर में लाता है।

१३. स दुग्धपानार्थं गां आनयति=वह दूध पीने के लिये गाय लाता है।

१४. गोदुग्धं त्वं पिबसि किं=गाय का दूध तू पीता है क्या ?

१५. गोदुग्धं मिष्टं भवति अतःतद् एव अहं पिबामि=गाय का दूध मीठा होता है। इसलिये वही मैं पीता हूँ।

१६. शृणु ! अद्य अहं तत्र नैव गच्छामि=सुन ! आज मैं वहां नहीं जाऊँगा।

पुल्लिंग में 'युष्मत्' शब्द

१. प्रथमा	त्वं	तू
२. द्वितीया	त्वां	तुझे
३. तृतीया	त्वया	तू ने
४. चतुर्थी	तुभ्यं	तेरे लिये
५. पंचमी	त्वत्	तुझ से
६. षष्ठी	तव	तेरा
७. सप्तमी	त्वयि	तुझ में

स्थातुं=बैठने के लिये। उत्थातुं=उठने के लिये।
आसितुं=बैठने के लिये। भोक्तुं=खाने के लिये।
पातुं=पीने के लिये। स्वप्तुं=सोने के लिये।
जेतुं=विजय पाने के लिये। वक्तुं=बोलने के लिये।
स्वीकर्तुं=स्वीकार करने के लिये।
गणयितुं=गिनने के लिए। चोरयितुं=चोरने के लिये।
हसितुं=हंसने के लिये। पठितुं=पढ़ने के लिए।
मार्ष्टुं=मांजने के लिये। ताडयितुं=मारने के लिये।
जागरितुं=जागने के लिये। चिन्तयितुं=विचार करने के लिये।

द्रष्टुं=देखने के लिये। स्मर्तुं=याद करने के लिये।
भक्षयितुं=खाने के लिये।

वाक्य

१. त्वं प्रष्टुं गच्छ=तू पूछने के लिये जा।
२. स तत्र अन्नं भोक्तुं गच्छति=वह वहां अन्न खाने के लिये जाता है।
३. अहं जलं पातुं अत्र आगतः=मैं जल पीने के लिये यहां आया।
४. ईश्वरदत्तः स्वप्तुं स्वगृहं गतः=ईश्वरदत्त सोने के लिये अपने घर गया।
५. बालकः पठितुं न इच्छति=बालक पढ़ने के लिए नहीं चाहता।
६. सेनापतिः जेतुं उद्यमं करोति=सेनापति विजय पाने के लिये उद्योग करता है।
७. त्वं अध्यापकस्य समीपे तं प्रश्नं प्रष्टुं गच्छसि किं ?=तुम गुरु के पास वह प्रश्न पूछने के लिये जाते हो क्या ?
८. अः! विष्णुशर्मा तत्र शीघ्रं गन्तुं धावति=अरे! विष्णुशर्मा वहाँ जलदी जाने के लिये दौड़ता है।
९. स गुरुं प्रणम्य अध्ययनं करोति=वह गुरु को नमन कर के अध्ययन करता है।

सरल वाक्य

१ किं त्वं तस्य गृहे तिष्ठसि ?। २ अहं आचार्यस्य समीपे वेदं पठितुं नित्यं गच्छामि। ३ त्वं तस्मात् स्थानात् अपयातुं न इच्छसि किम्। ४ स आसनात् उत्थातुं अपि न इच्छति। ५ त्वं कदा ग्रामं गन्तुम् इच्छसि। ६ अहं वने गत्वा व्याघ्रं हन्तुं इच्छामि। ७ केन

सह त्वं वनं गमिष्यति । ८ अहं अद्य रात्रौ सरदार-दिलीपसिंहेन सह वनं गमिष्यामि । ९ केन दिलीपसिंहेन सह त्वं गन्तुम् इच्छसि। १० यः दिलीपसिंहः अमृतसर-नगरे निवसति । ११ कस्य स पुत्रः। १२ स सरदार कर्तारसिंहस्य पुत्रः ज्वालासिंहस्य च भ्राता अस्ति। १३ अहं अपि तं द्रष्टुं आगमिष्यामि । १४ देवशर्मा इदानीं कुत्र गतः । १५ यत्र विश्वदेवः गतः तत्र एव देवशर्मा अपि गतः । १६ देवदत्तः पुष्पमालां गृहीत्वा धावति । १७ किमर्थं स धावति । १८स शीघ्रं गृहं गन्तुम् इच्छति अतः एवं धावति । १९तेन द्रव्यं दत्वा पठितम् ।२०परंतु मया द्रव्यं अदत्त्वा एव पठितम् ।२१यदि स वेदं पठति तर्हि त्वं अपि वेदं पठ । २२ प्रातःकाल उत्थाय ईश्वरस्य स्मरणं कर्तव्यम् । २३ प्रातःकाल उत्थाय विद्याऽभ्यासः कर्तव्यः । २४ प्रातःकाले अभ्यासे कृते विद्या सत्वरं आगमिष्यति । २५ विद्यां विना व्यर्थं जीवनम् । २६ स तत्र गत्वा आगतः किं ?

१ क्या तू उसके घर रहता है । २ मैं गुरु के पास वेद पढ़ने के लिये हमेशा जाता हूँ । ३ तू उस स्थान से उठना नहीं चाहता है क्या । ४ वह आसन से उठना भी नहीं चाहता । ५ तू कब गाँव को जाना चाहता है । ६ मैं वन जाकर बाघ को मारना चाहता हूँ ।

---

१ निवसति=रहता है । २ भ्राता=भाई । ३ द्रष्टुं=देखने के लिये । ४ अदत्त्वा=न देकर ।

५ स्मरणं=याद । ६ विद्याभ्यासः=पढ़ना । ७ अभ्यासेकृते=अभ्यास करने पर । ८ व्यर्थं जीवनं=जिंदगी व्यर्थ है ।

७ किसके साथ तू वन को जायगा। ८ मैं आज सरदार दिलीपसिंह के साथ जाना चाहता हूँ। ९ कौन से दिलीपसिंह के साथ जाना चाहते हो? १० जो अमृतसर में रहता है! ११ किसका वह लड़का है। १२ देवशर्मा आज यहाँ नहीं है। १३ तू पर जा मैं नीचे जाता हूँ। १४ जल्दी जलेबियाँ ले आ।

पाठ २२

स्मृत्वा=स्मरण करके	ज्ञानं=ज्ञान
सदाचारः=सदाचार	शृंगवेरं=अदरक
स्मरति=वह स्मरण करता है	स्मरसि=तू स्मरण करता है
स्मरामि=स्मरण करता हूँ	गणयति=वह गिनता है
स्थान=जगह	सकलं=सम्पूर्ण
विषये=विषय में।	शास्त्रस्य=शास्त्र का।
स्मरिष्यति=स्मरण करेगा।	स्मरिष्यसि=तू स्मरण करेगा
स्मरिष्यामि=स्मरण करूँगा।	चोरयति=चुराता है।

वाक्य

१. स स्मृत्वा स्मृत्वा वदति=वह स्मरण कर करके बोलता है।
२. यस्यज्ञानं नास्ति तस्मिन् विषये सः किमर्थं वदति=जिसको ज्ञान नहीं है उस विषय में वह क्यों बोलता है।
३. सदाचार एवधर्मः अस्ति=सदाचार ही धर्म है।
४. शृंगवेरं त्वं भक्षयसि किं=अदरक तू खाता है क्या?
५. देवदत्तस्य स्थानं त्वं जानासि किं=देवदत्त का स्थान तू जानता है क्या?
६. इदानीम् तु न जानामि=अब तो नहीं जानता।
७. परन्तु स्मृत्वा वदिष्यामि=परन्तु स्मरण करके बताऊँगा।

८. तस्य गृहं अतीव दूरं अस्ति=उसका घर बहुत ही दूर है।

९. तत्र त्वं इदानीं किमर्थं गन्तुम् इच्छसि=वहां तू अब क्या जाना चाहता है ?

१०. स शास्त्रस्य सर्वं ज्ञान जानाति=वह शास्त्र का सब ज्ञान जानता है।

११. यदि त्वं तद् ज्ञातु इच्छसि तर्हि आगच्छ=अगर तू उसे जानना चाहता है तो आ।

१२. त्वं घृतं कथं पिबसि=तू घी कैसे पीता है ?

१३. अहं तु न पातु शक्नोमि=मैं तो नहीं पी सकता।

१४. पश्य कथं अहं पिबामि=देख कैसे पीता हूँ।

शब्द

शत्रु:=शत्रु।	केशा:=केश।
हस्त:=हाथ	रोचते=पसन्द है।
मालिन्य=मलीनता।	मापवटी:=कचौरी।
क्रीय=बेच कर।	क्रीणाति=वह खरीदता है।
क्रीणासि=तू खरीदता है।	क्रीणामि=खरीदता हूँ।
विलोकयति=देखता है।	कृष्णा:=काला।
चेत्=यदि।	मा=नहीं।
अथवा=अथवा।	विलोकयति=देखता है।

१. मालिन्यं वरं नास्ति=मलिनता अच्छी नहीं है।

२. तस्य केशा: अतीव कृष्णा: अस्ति=उसके केश बहुत काले हैं।

३. यदि रोचते तर्हि गृहाण=अगर पसन्द है तो ले।

४. न रोचते*चेत् मा कुरु=*यदि पसन्द नहीं है (*तो) न कर।

---

* "चेत्" शब्द वाक्य के पश्चात् आता है, परन्तु उसका भाषा में अर्थ पहिले लिखा जाता है तथा "तो" यह शब्द संस्कृत में न हुआ भी भाषा में अर्थ से बोला जाता है।

५. किं इदानीं क्रीणासि पुष्पं फलं वा=क्या अब खरीदता है फूल या फल ?

६. न अहं इदानीं पुष्पं क्रीणामि नापि फलम्=न मैं अब फूल खरीदता हूँ न फल।

७. तर्हि किमर्थं अत्र मार्गे तिष्ठसि=तब क्यों यहाँ मार्ग पर ठहरता है ?

८. मम मित्र इदानीम् अत्र आगमिष्यति=मेरा मित्र अब यहाँ आवेगा।

९. स किं आनेष्यति=वह क्या लायेगा ?

१०. स इदानीं माषवटीः भक्षणार्थं आनेष्यति=वह अब कचौरी खाने के लिये लायेगा।

११. स दुग्धं विक्रीय आगच्छति=वह दूध बेच कर आता है

दकारान्तः लिंगः 'तद्' शब्दः

१ प्रथमा	सः	वह
२ द्वितीया	तं	उसको
३ तृतीया	तेन	उसने
४ चतुर्थी	तस्मै	उसके लिये
५ पंचमी	तस्मात्	उस से
६ षष्ठी	तस्य	उसका
७ सप्तमी	तस्मिन्	उस में

दकारान्तः पुलिंगो 'यद्' शब्दः

१ प्रथमा —	यः	जो
२ द्वितीया	यं	जिसको
३ तृतीया	येन	जिसने

४ चतुर्थी	यस्मै	जिस के लिये
५ पंचमी	यस्मात्	जिससे
६ षष्ठी	यस्य	जिसका
७ सप्तमी	यस्मिन्	जिसमें

१. येन सह त्वं वदसि स न साधुः अस्ति=जिसके साथ तू बोलता है, वह उत्तम मनुष्य नहीं (है)।

२. यस्मै त्वं धनं दातुं इच्छसि तत्र नास्ति=जिसके लिये तू धन देना चाहता है, वह वहाँ नहीं है।

३. यस्य गृहं अग्निना दग्धं, स अत्र आगतः=जिस का घर आग से जला, वह यहाँ आ गया है।

४. यस्मिन् पात्रे दुग्धं रक्षितं, तत् पात्रं भिन्नम्=जिस बरतन में दूध रखा था वह बरतन टूट गया।

५. यस्मात् ग्रामात् त्वं इदानीम् आगतः तस्य किं नाम अस्ति=जिस गाँव से तू अब आया उसका क्या नाम है?

६. यं त्वं पश्यसि सः कः अस्ति=जिसको तू देखता है वह कौन है।

७. यः पुस्तकं पठसि स एव मम भ्राता अस्ति=जो पुस्तक पढ़ता है वह भी मेरा भाई है।

८. यस्मै धनं दातुं इच्छसि किं स दरिद्रः अस्ति=जिसको धन देना चाहते हो क्या वह दरिद्र है?

९. येन सह वदसि तं एवं कथय=जिसके साथ बोलते हो उस को ऐसा कह।

१०. यः कूपस्य जलं पातुम् इच्छसि तस्मै कूपस्य एव जलं देहि=

जो कुएं का जल पीना चाहता है उसके लिए कुएं का ही जल दे।

११. यथा यः गंगाजलं पातुम् इच्छति तस्मै शुद्धं गंगाजलं देहि= जैसा ही गंगाजल पीना चाहता है उसके लिये शुद्ध गंगाजल दे।

सरल वाक्य

१ श्रीरामचन्द्रस्य पत्रं आगतम्[1]। २ अहं पत्रं पठामि। ३ देवदत्तः कंदुकेन क्रीडति। ४ पश्य ? स युवा लक्ष्मणशर्मा अत्र आगतः। ५ विष्णुदत्तेन रामायणं नाम[2] पुस्तकं आर्यभाषायां[3] लिखितम्। ६ तेन शूरेण व्याघ्रः हतः। ७ स आचार्यः सदा अत्र एव निवसति। ८ यदा स पाठशालां गच्छति तदा दशवादन-समयः[4] भवति। ९ यदा त्वं गंगाजलं आनेष्यसि तदा कूपस्य जलं अपि आनय। १० मध्याह्नसमयः जातः।

पाठ २३

"क्रीणाति" "खरीदता है" इस के पहले "वि" लगाने से "बेचता है" ऐसा अर्थ होता है, देखो:—

क्रीणाति=वह खरीदता है	क्रीणासि=तू खरीदता है
क्रीणामि=खरीदता हूँ	क्रीत्वा=खरीद कर
सूची=सुई	नौका=किश्ती, बेड़ा
विक्रीणीते=वह बेचता है	विक्रीणीषे=तू बेचता है
विक्रीणे=बेचता हूँ।	विक्रीय=बेचकर।

---

१ आगतं=आया। २ नाम=नामक। ३ आर्य भाषा=हिन्दी भाषा। ४ दश बजे।

समीपं=पास कंठः=गला .

वाक्य

१. अधुना त्वं आपणं गत्वा किं क्रीणासि=अब तू बाजार जाकर जाकर क्या खरीदता है।

२. अहं पुस्तकं मसीपात्रं लेखनीं च क्रीणामि=मैं पुस्तक, दवात और कलम खरीदता हूँ।

३. यत्र त्वं स्थास्यसि अहक्षमपि तत्र स्थातुं इच्छामि=जहां तू ठहरेगा मैं भीवहां ठहरना चाहता हूँ।

४. यत् त्वं लेखितुं इच्छसि, तद् अत्र लिख=जो तू लिखना चाहता है, वह यहां लिख।

५. नवनीतं विक्रीय, घृतं च क्रीत्वा, आगच्छ=मक्खन बेचकर और घी खरीद कर, आ।

६. अद्यश्वः आपणे पुराणं मलिनं च घृत मस्ति=आज-कल बाजार में पुराना और मलीन घी है।

७. यदि तत्र नवीनं शुद्धं स्वादु च घृतं नास्ति=अगर वहां नया शुद्ध और मीठा घी नहीं है।

८. तर्हि तद् न आनय=तो उसको न ला।

९. अहं शुद्धं घृतं एव भक्षयामि=मैं शुद्ध घी ही खाता हूँ।

पूर्व स्थल में कहा है कि स्वर आगे आने से अनुस्वारका 'म' बन जाता है, उदाहरण देखिये:—

क्ष "अहं+अपि" इन दो शब्दों का जोड़ "अहमपि" ऐसा होता है। शब्द के अन्त में जो नुकता होता है उसको अनुस्वार कहते हैं, जैसा "घृतं दुग्धं" इत्यादि इस अनुस्वार के आगे स्वर आने से उसका "म्" बनता है, जैसा "दुग्धं+अस्ति" इसका "दुग्धमस्ति" ऐसा होता है॥

अहं अस्मि	अहमस्मि	मैं हूं।
त्वं इच्छसि	त्वमिच्छसि	तू चाहता है।
दुग्धं आनय	दुग्धमानय	दूध ले आ।
घृतं उत्तमं अस्ति	घृतमुत्तममस्ति	घी उत्तम है।
त्वं औषधं आनय	त्वमौषधमानय	तू दवा ले आ।

इस प्रकार संस्कृत में जोड़ होते हैं, इनको देख कर पाठकों को घबराना नहीं चाहिये, इस समय तक हमने जोड़ (जिन को संस्कृत में सन्धि कहते हैं) नहीं बताये, परन्तु अब बताना चाहते हैं, यदि पाठक थोड़ा सा ध्यान देंगे, तो उनको कोई कठिनता नहीं प्रतीत होगी। जो जो जोड़ (संधि) हम देंगे उनको अलग् अलग् शब्द हम नीचे टिप्पणी में देंगे, जिस से किन किन शब्दों का यह जोड़ है, यह पाठक जान सकेंगे, जैसे—

त्वमत्र[1] आगच्छ=तू यहां आ

स दुग्धमानयति[2]=वह दूध लाता है।

त्वमिदानीं[3] कुत्र गच्छसि=तू अब कहां जाता है।

अहमत्र[4] तिष्ठामि=मैं यहां ठहरता हूं।

जहां जहां इस प्रकार का जोड़ आवेगा, वहां वहां पाठकों को सोचना चाहिये कि किन २ शब्दों का यह जोड़ (संधि) हो सकता है॥

पाठकों ने इस समय तक पुल्लिंग शब्दों को चलाने का प्रकार जान लिया है। प्रायः पन्द्रह शब्द सातों विभक्तियों में चलाकर

टिप्पणी—(१) त्वं अत्र, (२) दुग्धं आनयति (३) त्वं इदानीं (४) अहं अत्र

बताये है। अगर पाठक इनको ठीक स्मरण रखेंगे तो इनके समान शब्दों के रूप बनाने में इनके लिये कोई दिक्कत नहीं होगी। अब स्त्रीलिंग शब्दों के रूप किस प्रकार होते है यह बताना है। स्त्रीलिंग शब्दों के विषय में पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में नहीं है। आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग हुआ करते हैं। जैसे क्षमा, कृपा, दया भार्या, जाया, बालिका, गंगा, ब्रह्मपुत्र, विद्या, माला, लता, प्रविष्ठा इत्यादि शब्द आकारान्त हैं। इनको आकारान्त इसलिये कहते हैं कि इनके अंत में 'आ' रहता है। अब इनके रूप देखिये—

आकारान्तः स्त्रीलिंगी 'विद्या' शब्द'।

१ प्रथमा	विद्या	विद्या
२ द्वितीया	विद्यां	विद्या को
३ तृतीया	विद्यया	विद्या ने
४ चतुर्थी	विद्यायै	विद्या के लिये
५ पंचमी	विद्यायाः	विद्या से
६ षष्ठी	विद्यायाः	विद्या का
७ सप्तमी	विद्यायां	विद्या में
सम्बोधन	(हे) विद्ये	(हे) विद्ये

विद्या के समान चलने वाले आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

कृपा=दया	दया=कृपा, मेहरबानी
भार्या=स्त्री	बाला=लड़की
बालिका=लड़की	गंगा=गंगाजी
यमुना=यमुनाजी	अम्बा=माता
शाला=गृह, घर	ब्रह्मपुत्रा=ब्रह्मपुत्र नदी

लता=बेल — माला=माला
पुत्री=लड़की — जाया=स्त्री, धर्मपत्नी
प्रतिष्ठा=यश — सुता=लड़की
शर्करा=खांड, मिश्री — पाठशाला=पाठशाला
धर्मशाला=धर्मशाला, सराय — प्रजा=रियाया

वाक्य

१. दयां कुरु=दया कर
२. भार्यया सह रामचन्द्रः वनं गतः=स्त्री के साथ रामचन्द्र बन को गया।
३. यमुनायाः जलम् आनीतम्=यमुनाजी का जल लाया।
४. बालिकायाः वस्त्रम् आनय=लड़की का कपड़ा ले आ।
५. सुता कुत्र गता=लड़की कहां गई?
६. दुग्धाय शर्करां देहि=दूध के लिये मिश्री दे।
७ शर्करया मिष्टं भवति=मिश्री से मीठा होता है।
८. धर्मशालायाः रक्षकः कुत्र अस्ति=सराय का चौकीदार कहां है?
९. अंबा बालिकया सह अद्य ग्रामं न गता=माता लड़की के साथ आज गांव को नहीं गई।
१०. गंगायाः जलम् आनयामि=गंगा का जल लाता हूं।
११. ईश्वरस्य दया अस्ति=ईश्वर की दया है।
१२. ईश्वरस्य कृपया सर्वं शुभं भवति=ईश्वर की कृपा से सब शुभ होता है।
१३ तस्य शाला उत्तमा अस्ति=उसका मकान उत्तम है।
१४. या कृष्णस्य सुता सा बालकस्य भार्या=जो कृष्ण की लड़की वह बालक की धर्मपत्नी।
१५. त्वया कस्मात् स्थानात् सा पुष्पमाला आनीता=तुम ने किस

स्थान से वह फूलों की माला लाई।

सरल वाक्य

१ स तत्र तिष्ठति। २ अहं अत्र क्रीडामि। ३ स पाठशालां गत्वा पुस्तकं पठति। ४ त्वं शुद्धं गंगाजलं पिबसि। ५ त्वं तत् स्मरसि किम्। ६ स स्वगृहं गत्वा अन्नं भक्षयति। ७ रामः तम् एवं वदति। ८ शृणु, इदानीं हरिः देहली-नगरं गन्तुम् गच्छति। ९ इदानीं तत्र न गन्तव्यम् इति त्वं तं कथय। १० नरः ग्रामं गच्छति किम्। अथकिम् स अद्य एव ग्रामं गमिष्यति। ११ चोरः धनं चोरयति। पंडितः पुस्तकं पठति। धेनुः वनं गमिष्यति। १२ सा पुत्रिका पुष्पमालां करोति। रामः फलं भक्षयति। १३ या गच्छति सा एव गंगा भवति। १४ अद्य सा बालिका अम्बया सह वनं गता। १५ रामेण सह लक्ष्मण- वनं गतः। सीतया सह रामः वनं गतः। लक्ष्मणेन सह रामः वनं गतः।

पाठ २४

पादुके=जूता	वृषभः= बैल
मेषः=मेढा	शृणोति=वह सुनता है
शृणोषि=तू सुनता है	शृणोमि=सुनता हूँ
मस्तकपीड़ा=सिर दर्द	धूम्रयानं= रेल गाड़ी
घटिका=घड़ी	अश्वः=घोड़ा
श्रुत्वा=सुन कर	श्रोतुं=सुनने के लिये
श्रुतं=सुना	स्मरणपुस्तकं= डाय

वाक्य

१. मम पादुके गृहाण तस्मै च देहि=मेरा खड़ाऊं ले और उसको दे।

२. पश्य तत् धूम्रयानं कथं शीघ्रं गच्छति=देख वह रेल गाड़ी

कैसी जल्दी जाती है।

३. मेषः धावति परन्तु अश्वः तिष्ठति=मेढा दौड़ता है, परन्तु घोड़ा खड़ा है।

४. इह इदानीं श्रीकृष्णः हवनार्थं आगमिष्यति=यहां अब श्रीकृष्ण हवन करने को आवेगा।

५. स इदानीं सन्ध्यां उपास्य पठनं आरभते=वह अब सन्ध्या करके पढ़ना आरम्भ करता है।

६. त्वं मां अधुना किं आज्ञापयसि=तू मुझे अब क्या आज्ञा करता है ?

७. शृणु, त्वम् इदानीं वनं न गच्छ, अत्र एव तिष्ठ=सुन, तू अब बन को न जा (और) यहां ही ठहर।

८. किं त्वं कुशलः असि इदानीम्=क्या तू निरोग है अब ?

९. अहमिदानीं कुशलः अस्मि=मैं अब कुशल हूँ।

१०. भो मित्र ! तण्डुला अत्र सन्ति=हे मित्र चावल यहां हैं।

११. स यथा श्रुतमस्ति तथा एव वदति=वह जैसा सुना है वैसा ही बोलता है।

१२. यथा यथा स मालिन्यं त्यजति तथा तथा शुद्धो भवति=जैसे जैसे वह मलिनता छोड़ता है वैसे वैसे शुद्ध होता है।

शब्द

कथां=कथा	उपदेशं=उपदेश
व्याख्यानं=व्याख्यान को	पंडितः=पंडित
श्रवणाय=सुनने के लिये	उद्याने=बाग़ में

टिप्पणी—(१) अहं इदानीं (२) अतं अस्ति।

शिवालये=शिवालय में　　दास्यति=वह देगा
दास्यसि=तू देगा　　दास्यामि=दूँगा
त्यक्त्वा=छोड कर　　दृष्ट्वा=देख कर
स्थापय=रख　　जल=चल, जा

वाक्य

१. त्वम् इदानीं कुत्र गन्तु इच्छसि ?=तू अब कहाँ जाना चाहता है ?

२ अहमद्य * उपदेशं श्रोतुं गच्छामि=मैं आज उपदेश सुनने के लिये जाता हूँ।

३ कुत्र अस्ति उपदेश' अद्य=कहा है उपदेश आज ?

४. तत्र उद्याने पंडित' विश्वामित्रः उपदेशं दास्यति=वहा बाग मे पंडित विश्वामित्र उपदेश देगा।

५. न न, उद्याने उपदेश' नास्ति, शिवालये अस्ति=नहीं नहीं, बाग में उपदेश नहीं है, शिवालय मे है।

६ कः वरं व्याख्यान ददाति=कौन अच्छा व्याख्यान देता है।

७. पंडितवर' देवव्रत एव उत्तम व्याख्यान ददाति=प० देवव्रत ही अच्छा व्याख्यान देता है।

८ व्याख्यान श्रवणाय आलस्य त्यक्त्वा गच्छ=व्याख्यान सुनने के लिये आलस्य छोड़कर जा।

९ प्रथम शुद्ध जलं आनय पश्चाद् भोजन कुरु=पहिले शुद्ध जल ला पीछे भोजन कर।

१०. स अश्व दृष्ट्वा किं स्मरति=वह घोड़ा देख कर क्या सोचता है ?

---

* अद्य अद्य।

११. तत्रवायु' नास्ति, जलमपि* नैवास्ति=वहाँ वायु नहीं है और जल भी नहीं है।

१२ मंदिरे मार्जार. नास्ति अत' दुग्ध तत्र स्थापय=मंदिर में बिल्ली नहीं है इस लिये दूध वहाँ रख

१३. त्व गोदुग्ध गृहीत्वा एव शिवालय गच्छ=तू गाय का दूध लेकर ही शिवालय को जा।

१४ स पंडित' कुत्र अस्ति इदानीं=वह पंडित कहाँ है अब ?

आकारान्तः स्त्रीलिङ्गो 'प्रतिज्ञा' शब्दः

१. प्रथमा	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा
२. द्वितीया	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा को
३. तृतीया	प्रतिज्ञया	प्रतिज्ञा से
४. चतुर्थी	प्रतिज्ञायै	प्रतिज्ञा के लिये
५. पञ्चमी	प्रतिज्ञायाः	प्रतिज्ञा से
६ षष्ठी	,,	,, का
७ सप्तमी	प्रतिज्ञाँ	प्रतिज्ञा में
सम्बोधन	(हे) प्रतिज्ञे	(हे) प्रतिज्ञा

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्दों के पञ्चमी तथा षष्ठी के एक वचन के रूप एक जैसे ही होते हैं। इसलिये षष्ठी के रूप के स्थान पर (,,) ऐसा चिन्ह दिया है। इसका मतलब यह है कि यहाँ का रूप उपर के रूप के समान ही होता है। आगे भी जहाँ जहाँ रूपों के नीचे (,,) ऐसा चिन्ह दिया होगा, वहाँ वहाँ पाठक समझें की यहाँ का रूप पूर्ववत् ही होता है।

---

* जलं अपि। ॐ न एव-अस्ति।

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्द

इच्छा=ख्वाहिश	कामात्मता=विषयीपन, कामीपन
चिन्ता=फ़िकर	जिह्वा=ज़बान
दीक्षा=व्रत	मुक्ता=मोती
रेखा=लकीर	कन्या=लड़की
निद्रा=नींद	पूजा=सत्कार
पाषाणपट्टिका=स्लेट	मूर्खता=पागलपन
मलिनता=गंदगी	क्षुधा=भूख
कथा=कहानी	गीता=गीता जी
देवता=देवी	चेष्टा=प्रयत्न
आज्ञा=हुक्म	वाटिका=बाग
जरा=बुढ़ापा	अपूजा=सत्कार न करना
पत्रिका=पत्र, खत	पूपला=खाँड की पूरी
रूक्षता=रूखापन	सन्ध्या=ध्यान
हरिद्रा=हल्दी	

वाक्य

१. स इच्छां करोति=वह इच्छा करता है ।
२. त्वया सा मुक्ता कुत्र स्थापिता ?=तू ने वह मोती कहाँ रक्खा ?
३. गीतायां किम् उक्तम् ?=गीता में क्या कहा है ?
४. तस्य आज्ञया अहं इदं कार्यं करोमि=उसकी आज्ञा से मैं यह कार्य करता हूँ ।
५. त्वं देवतायाः पूजां कुरु=तू देवता की पूजा कर ।
६. तेन पत्रिका प्रेषिता किम् ?=उसने पत्र भेजा क्या ?
७. जरायै किम् औषधम् ? बुढ़ापे के लिये क्या दवा ?

८. हरिद्रायाः पीतः वर्णः=हल्दी का पीला रंग।

९. तस्य कन्यया मुक्ता न आनीता=उसकी लड़की ने मोती नहीं लाया।

१०. मनुष्यः जिह्वया वदति=मनुष्य ज़बान से बोलता है।

सरल वाक्य

१—रामः मित्रेण सह कुत्र तिष्ठति। आचार्यः शिष्येण सह वदति। गुरुः कुमारिकया सह कथां वदति। २—कन्यया सह स मनुष्यः उद्यानं गच्छति। किं स मनुष्यः प्रतिदिनं कन्यया सह उद्यानं गच्छति। अथकिम्। स पुरुषः प्रतिदिनं सायंकाले पञ्च-वादन समये भ्रमणाय कन्यया सह उद्यानं गच्छति। ३—तदा तत्र त्वं अपि गच्छसि किम्। अथकिम्। अहं अपि तस्मिन् एव समये उद्यानं गच्छामि। ४—रामाय नमः। ईश्वराय नमः। नमः ते। नमस्ते। तस्मै नमः। आचार्याय नमः। ५—वृक्षात फलं पतति। पर्वतात् वृक्षः पतति। नगरात् जनः आगच्छति। तडागात् जलं आनयामि। उद्यानात् पुष्पं आनयति। आपणात् वस्त्रं आनय।

पाठ २५

स्थापयति=वह रखता है।
स्थापयसि=तू रखता है
स्थापयामि=रखता हूँ
प्रत्येकं=हर एक
नित्यं=नित्य
परमेश्वरं=ईश्वर को
कृतं=किया
स्थापनं=रखना
स्रवति=चूता है
स्थापयित्वा=रख कर
स्थापयितुं=रखने के लिये
स्थापनाय=रखने के लिये
मञ्चः=टेबल, मेज़
विष्टरः=कुरसी
गतः=गया
आगतः=आ गया

संस्थाप्य=रख कर　　　　　　विरोध=मुकाबला

वाक्य

१ नित्य परमेश्वर स्मृत्वा कर्म कुरु=नित्य परमेश्वर का स्मरण करके कार्य कर।

२ स मम पुस्तकं कुत्र स्थापयति=यह मेरी पुस्तक कहाँ रखता है ?

३ यत्र मञ्च अस्ति तत्र स तत् स्थापयति=जहा टेबल है वहा वह उसे रखता है।

४ स तत्र दीप स्थापयितु गत=वह वहाँ दीप रखनेके लिये गया है।

५ त्व मसीपात्र कुत्र स्थापयितु इच्छसि=तू दवात कहाँ रखना चाहता है ?

६ स तत्र फल स्थापयित्वा अत्र आगत=वह वहाँ फल को रख कर यहा आया।

७ कृत कर्म स्मर=किया कर्म स्मरण कर।

८ अत्र स्थित्वा कर्म कुरु नोचेत् अत्र न तिष्ठ=यहा रह कर कार्य कर, नहीं तो यहा न बैठ।

९ यदि वर कर्म कर्तुमिच्छसि※ तर्हि एव अत्र तिष्ठ=अगर श्रेष्ठ कार्य करना चाहता है तो ही यहाँ रह।

१०. नोचेद् यत्र इच्छसि तत्र द्रुत गच्छ=नहीं तो जहाँ चाहता है वहा शीघ्र जा।

११. अह निर्धन अस्मि पुस्तक पठितुमिच्छामि[१]=मैं निर्धन हू पुस्तक पढना चाहता हूँ।

१२. स मचं गृहीत्वा अत्र एव आगच्छति=वह टेबल लेकर यहा ही आता है।

※ कर्तुं इच्छसि।　　(१) पठितु इच्छामि।

शब्द

आलेख्य=तस्वीर कस्य=किसका
तस्य=उसका उपविश=बैठ
उपविशति=(वह) बैठता है उपविशसि=(तू) बैठता है।
उपविशामि=बैठता हूँ उपविश्य=बैठकर

वाक्य

१. एतत् कस्य आलेख्यम् अस्ति=यह किस का चित्र है।

२. स पुरुषः श्रुतमपि न स्मरति=वह मनुष्य सुना हुआ भी नहीं स्मरण रखता।

३. त्वं तस्य व्याख्यानं शृणोषि किम्=तू उसका व्याख्यान सुनता है क्या?

४. अत्र एव उपविश व्याख्यानं च शृणु=यहां ही बैठ और व्याख्यान सुन।

५. स तत्र एव उपविश्य सर्वं पश्यति=वह वहां ही बैठकर सब कुछ देखता है।

६. कः अत्र उपविश्य आलेख्यं करोति=कौन यहां बैठकर तसवीर खेंचता है।

७. श्रीधरः अत्र स्थिरत्वा आलेख्यम् आलिखति=श्रीधर यहां ठहर कर चित्र खेंचता है।

८. स एतमेव पुनः पुनः वदति=वह कहा हुआ ही फिर फिर बोलता है।

९. यदि त्वम् अत्र एव उपविशसि तर्हि अहं त्वां द्रव्यं दास्यामि=

(१) श्रुत अपि। (२) एतं एव।

अगर तू यहां बैठेगा वो मैं तुझे द्रव्य दूंगा।

१०. स किमर्थं सदा शिवालयं गच्छति=वह क्यों हमेशा मन्दिर जाता है।

११. स तत्र गत्वा संध्यामुपास्ते, ईश्वरं च स्मरति=वह वहां जाकर संध्या करता है और ईश्वर का स्मरण करता है।

१२. अहं मम रथम् अत्र न स्थापयामि=मैं अपनी गाड़ी यहाँ नहीं रखूंगा।

१३. मम विष्टरः कुत्र अस्ति=मेरी कुर्सी कहां है।

१४. यत्र ह्यः स्थापितः तत्र एव अस्ति=जहां कल रखी थी वहाँ ही है।

ईकारान्त स्त्रीलिंग 'नदी' शब्दः।

१ प्रथमा	नदी	नदी
२ द्वितीया	नदीम्	नदी को
३ तृतीया	नद्या	नदी ने
४ चतुर्थी	नद्यै	नदी के लिये
५ पञ्चमी	नद्याः	नदी से
६ षष्ठी	"	" का
७ सप्तमी	नद्याम्	नदी में
सम्बोधन	(हे) नदि	हे नदी

नदी शब्द के समान चलने वाले शब्द—

मातुलानी, मातुली=मामा की स्त्री

पितृभगिनी=पिता की बहिन मातृभगिनी=माता की बहिन

(१) सन्ध्यां उपास्ते।

मातामही=माता की माता	भगिनी=बहिन
पृथ्वी=पृथ्वी	ब्राह्मणी=ब्राह्मण की स्त्री
पितामही=पिता की माता	कुंडलिनी=जलेबी
नीली=नीला रंग	कुमारी=लड़की
कमलिनी=कमल की बेल	

इन के सब विभक्तियों के रूप बनाकर पाठक उन से बहुत वाक्य बना सकते हैं।

सरल वाक्य

१ यज्ञदत्तात् देवदत्तः पुस्तकं गृह्णाति। २ सोमदत्तात् ब्राह्मणः धनं गृह्णाति। स ब्राह्मणः तडागात् रक्तं कमलं आनयति। ३ रामस्य रावणेन सह युद्धं भवति। रावणस्य रामेण सह युद्धं भवति। भीमस्य जरासंधेन सह युद्धं जातम्। जरासंधस्य भीमसेनेन सह युद्धं जातम्। ४ अत्र हरिः अस्ति। तं हरिं पश्य। हरिणा पुस्तकं लिखितम्। हरये नमः कुरु। हरेः लेखनीम् आनय। इदं हरेः गृहं अस्ति। हरौ भक्तिं कुरु।

पाठ २६

आक्रोशति=चिल्लाता है	पुरी=नगर, शहर
गर्जति=वह गरजता है	गर्जसि=तू गरजता है
गर्जामि=गरजता हूं	कीदृशः=कैसा
खलु=निश्चय से	सिंहः=शेर

---

१ भवति—होता है। २ जातं—हो गया। ३ हरेः—हरी से। ४ हरेः—हरी का।

पलर्यं=गोल   अंगणं=आंगन
उपधिः=स्टूल   घटिका=घड़ी
वृथा=व्यर्थ   शूकर=सूअर
तूष्णीं=चुपचाप   महिष=भैंसा

वाक्य

१. वने सिंहः गर्जति, ग्रामे शूकरः गर्जति=बन मे शेर गरजता है ग्राम में सूअर गरजता है।

२. त्वं वृथा किमर्थं गर्जसि=तू व्यर्थ क्यों गरजता है ?

३. आकाशे मेघः अधुना गर्जति=आकाश में मेघ अब गरजता है।

४. उद्याने सिंहः सायं प्रातः च गर्जति=बाग में शेर सायंकाल तथा प्रातःकाल गरजता है।

५. यदि त्वं तत्र न गमिष्यसि तर्हि तत् कथं ज्ञास्यसि=अगर तू वहाँ न जायगा तो उसे कैसे जानेगा।

६. त्वं इदानीमेव[1] औषधालयं गच्छ औषधं च आनय=तू अभी दवाखाने को जा और दवा ले आ।

७. यदि त्वं मुद्गौदनं भक्षयिष्यसि तर्हि वरं भविष्यति=अगर तू खिचड़ी खायेगा तो अच्छा होगा

८. स अपूपं दुग्धं च भक्षयितुमिच्छति[2]=वह पूड़ा और दूध खाना चाहता है।

९. सिंहः कदापि अन्नं न भक्षयति=शेर कभी अन्न नहीं खाता है।

१०. अहं इदानीमेव स्नात्वा शीघ्रमागमिष्यामि[3]=मैं अभी स्नान कर के जल्दी आऊँगा।

टिप्पणी—१ इदानीं एव। २ भक्षयितु इच्छति। ३ शीघ्रं आगमिष्यामि।

११. शुद्धं धौतं वस्त्रं देहि=शुद्ध, धोया हुआ वस्त्र मुझे दे।

भोजनात्=भोजन से	अभ्यंतरे=अन्दर
परिचारकः=नौकर	नगरात्=शहर से
ग्रामात्=गाँव से	गृहात्=घर से
कूपात्=कुएँ से	प्रायः=बहुधा

वाक्य

१. ब्रूहि, त्वं सन्ध्यां करोषि न वा=बोल, तू सवेरे सन्ध्या करता है या नहीं ?

२. वद. त्वं तत् पुस्तकं पठसि वा=बतला, तू वह पुस्तक पढ़ता है या नहीं ?

३. यद् अहं त्वामाज्ञापयामि तत् कर्म शीघ्रं कुरु=जो मैं तुझे आज्ञा करता हूँ वह कार्य जल्दी कर

४. नोचेत् त्वाम् अधुना एव ताडयामि=नहीं तो तुझे अभी ताड़ना करूँगा।

५. अहं भोजनात् पूर्वं किमपि कर्म कर्तुं न इच्छामि=मैं भोजन के पूर्व कोई भी कार्य करना नहीं चाहता।

६. हे परिचारक ! कपाटं उद्घाटय अहमभ्यन्तरे आगन्तुमिच्छामि=हे नौकर ! दरवाजा खोल मैं अन्दर आना चाहता हूँ।

७. यद् अहं वदामि तत् त्वं न शृणोषि किं=जो मैं बोलता हूँ वह तू नहीं सुनता है क्या ?

८ यदि त्वं उच्चैः वदसि तदा अहं तत्र भाषणं श्रोतुं शक्नोमि=अगर तू ऊँचा बोलेगा तो मैं तेरी बात सुन सकूँगा।

टिप्पणी—१ किं अपि। २ अहं अभ्यन्तरे। ३ आगन्तुं इच्छामि।

९ स नगरात् नगरं गच्छति=वह (एक) शहर से (दूसरे) शहर को जाता है।

१० स ग्रामाद् बहिः गत्वा वने गतः=वह गाँव से बाहर जाकर वन को गया।

११ स मनुष्यः कूपात् जलमानयति*=वह मनुष्य कूएँ से जल लाता है।

१२ स इदानीमेव? गृहात् बहिर्गतः=वह अभी घर से बाहर गया है।

१३ स पुनः कदा गृहमागमिष्यति*=वह फिर कब घर आवेगा।

१४ स प्रायः सायंकालमागमिष्यति?=वह प्रायः शाम को आवेगा

१५ सुतः रक्षति=लड़का रक्षा करता है।

१६ कुमारी तिष्ठति=लड़की ठहरती है।

१७ अहम् अत्र लिखामि=मैं यहां लिखता हूँ।

१८. मातामही नीचैः स्वपिति=माता की माता नीचे सोती है।

१९. तस्य भ्राता वरं न लिखति=उसका भाई अच्छा नहीं।

२०. कः त्वम्=कौन तू (है)?

२१. स कः अस्ति=वह कौन है?

२२. स दूरं तिष्ठति=वह दूर ठहरता है।

२३. तव उपानत् कुत्र अस्ति=तेरा जूता कहाँ है?

२४. तस्य भ्राता शीघ्रं न आगमिष्यति=उसका भाई जल्दी नहीं आयेगा।

---

* जलं आनयति।

? इदानीं एव।

* गृहं आगमिष्यति।

? कालं आगमिष्यति?

२५. एष कः अस्ति ?=यह कौन है ?
२६. तव भ्राता क अस्ति=तेरा भाई कहां है ।
२७. स किं लिखति=वह क्या लिखता है ।

सरल वाक्य

(१) तस्मै कुंडलिनीं देहि । (२) तस्य सुतः दुग्धं पिबति । (३) तस्य भ्राता गृहं न गच्छति । (४) धनं दत्त्वा फलं गृहाण । (५) मित्राय पत्रं लिख । (६) तस्मै पुष्पं देहि । (७) यदा त्वं स्वपिषि तदा तव भ्राता कुत्र भवति । (८) स वनं गत्वा फलं भक्षयति । (९) यदा स वनं गतः तदा अहं न गतः । (१०) स मां न ताडयति । (११) स तं एव किमर्थं ताडयति । (१२) त्वं तस्य पुस्तकं गृहीत्वा शीघ्रम् अत्र आगच्छ । (१३) स त्वां न जानाति किम् ? (१४) तस्य पुत्रः पुस्तकं चोरयति । (१५) कः त्वाम् अद्य भोजनं दास्यति ।

पाठ २७

अटति=वह घूमता है
अटसि=तू घूमता है
अटामि=घूमता हूँ
अटित्वा=घूम कर
अटितुं=घूमने के लिये
अटिष्यति=(वह) घूमेगा
अटिष्यसि=(तू) घूमेगा
अटिष्यामि=घूमूँगा
पक्वं=पका हुआ
पठितं=पढ़ा हुआ

शब्द

१. कृष्णचन्द्रः नित्यं ग्रामाद् ग्रामं अटति=कृष्णचन्द्र नित्य (एक) गाँव से [दूसरे] गाँव को घूमता है ।
२. तं कुमारं पश्य किं स करोति इति=उस लड़के को देख वह क्या करता है ?

३ स भोजनाय पक्व* म न पानाय जल च इच्छति=वह भोजन के लिये पका हुआ अन्न और पीने के लिये जल चाहता है।

४. स पठितमपि पाठ न स्मरति=वह पढ़े हुए पाठ को भी नहीं स्मरण करता।

५ स द्रव्य दत्त्वा धान्य क्रीणाति=वह द्रव्य देकर धान खरीदता है।

६ स रात्रौ किमपि न भक्षयति=वह रात्रि में कुछ भी नहीं खाता।

७ सूर्य दृष्ट्वा जन उत्तिष्ठति=सूर्य को देखकर मनुष्य उठता है।

८ तथा तारका दृष्ट्वा मनुष्य स्वपिति=वैसा ही सितारे देख कर मनुष्य सोता है।

६ स सर्वदा वृथा अटितुमिच्छति=वह हमेशा व्यर्थ घूमना चाहता है।

१०. स इदानीं किं करोति इति अह ज्ञातुमिच्छामि‡=वह अब क्या करता है यह मैं जानना चाहता हूँ।

११. शीघ्र रथमानय§ अह अन्यं नगरं गन्तुमिच्छामि‖=जल्दी गाड़ी ले आ मैं दूसरे गाँव को जाना चाहता हूँ।

१२ इदानीं मेघ गर्जति अत बहि न गच्छ=अब मेघ गरजता है, इस कारण बाहर न जा।

शब्द

अहं=पालक	पीडयति=वह दुःख देता है
पीडयसि=तू दुःख देता है	पीडयामि=दुःख देता हूँ
ऊर्ध्वं=ऊपर, पश्चात्	उपरि=ऊपर

---

* पक्व अन्न। † अटितु इच्छामि। ‡ ज्ञातु इच्छामि।
§ रथ आनय। ‖ गन्तु इच्छामि।

यति=सन्यासी पद्ध=गहुत
वृक्षस्य=वृक्ष के श्रान्त=थका हुआ
प्रतीयते=मालूम होता है उड्=उड्डा

वाक्य

१. पश्य स बालः कथं शीघ्रं शीघ्रं धावति=देख वह बालक कैसा जल्दी जल्दी दौड़ता है।
२ भो मित्र इदानीं मा बुभुक्षा अतीव पीडयति=हे मित्र! अब मुझे भूख बहुत दुःख देती है।
३. त्वं मह्यं पक्वम् अन्नं दातुं शक्नोसि किम्=तू मुझे पका हुआ अन्न दे सकता है क्या?
४. भोजनाद् ऊर्ध्वं त्वं शीतं जलमपि* पातुमिच्छसि किं= भोजन के पश्चात् ठण्डा जल भी पीना चाहता है क्या?
५. यदि त्वं शीतं जलमपि आनेतुं शक्नोपि तर्हि शीघ्रं आनय= अगर तू ठण्डा जल भी ला सकता है तो जल्दी ले आ।
६. यद् त्वं इच्छसि तद् अहमानेष्यामि=जो तू चाहता है वह मैं लाऊँगा।
७. एतद् अन्नम् अतीव उष्णम् अस्ति=यह अन्न बहुत गरम है।
८. मम भ्राता इदानीं कुत्र गतः न जानामि=मेरा भाई अब कहाँ गया है मैं नहीं जानता।
९ स उद्याने वृक्षस्य अधः इदानीं स्वपिति=वह बाग में वृक्ष के नीचे अब सोता है।

---

* जलम्+अपि। † पातु इच्छसि।

१०. स बहु कर्म कृत्वा श्रान्तः इति प्रतीयते=वह बहुत कार्य करके थका है ऐसा मालूम होता है।

११. स तत्र तूष्णीमेव१ स्थितः किमपि२ न वदति=वह वहाँ चुपचाप बैठा है कुछ भी नहीं बोलता।

१२. स स्वपाठं स्मरति इति प्रतीयते=वह अपना पाठ स्मरण करता है ऐसा मालूम होता है।

१३. स स्वगृहमिदानीं३ रक्षति अतः बहिः गन्तुं न शक्नोति=वह अब अपने घर की रक्षा करता है इसलिये बाहर जा नहीं सकता।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'धेनु' शब्द

१. प्रथमा	धेनुः	गौ
२. द्वितीया	धेनुँ	गौ को
३. तृतीया	धेनुना	गौ ने
४. चतुर्थी	धेनवे धेन्वै	गौ के लिये
५. पञ्चमी	धेनोः धेन्वाः	गौ से
६. षष्ठी	धेनोः धेन्वाः	गौ का
७. सप्तमी	धेनौ धेन्वाम्	गौ में
सं०	(हे) धेनो	हे गौ

चतुर्थी से सप्तमी पर्यन्त चारों विभक्तियों में एकवचन के रूप दो दो होते हैं यह बात ध्यान में अवश्य रखनी चाहिये।

१ तूष्णीं एव। २ किं अपि। ३ गृहं+इदानीम्।

रज्जु=रस्सा　　　　हनु=ठुड्डी

तनु=शरीर

वाक्य

१. मातृदेवो भव=माता को देवता समझ।
२. पितृदेवो भव=पिता को देवता समझ।
३. आचार्यदेवो भव=गुरु को देवता समझ।
४. अतिथिदेवो भव=अतिथि को देवता मान।
५. सत्यं ब्रूयात्=सच बोल।
६. प्रियं ब्रूयात्=प्रिय बोल।
७. सत्यं अप्रियं न ब्रूयात्=अप्रिय सत्य न बोल।
८. प्रियं असत्यं न ब्रूयात्=प्रिय असत्य न बोल।
९. सत्यात् परः धर्मः नास्ति=सत्य से परे दूसरा धर्म नहीं।
१०. असत्यसमः न कः अपि अधर्मः=असत्य के समान नहीं कोई भी अधर्म।
११. इह एहि=यहाँ आ।
१२. अः विसृष्टिः अस्ति=कल छुट्टी है।
१३. शास्त्रेण विना मनुष्यः अन्धः=शास्त्र के बिना मनुष्य अन्धा (है)।

सरल वाक्य। संवादः।

रामः—हे मित्र! त्वं कुत्र गच्छसि इदानीम्?
विष्णुः—इदानीमहं भ्रमणार्थं गच्छामि।
रा०—कः समयः इदानीम्।
वि०—इदानीं सप्तवादन-समयः।
रा०—इदानीं भ्रमणाय बहिः गत्वा पुनः कदा स्वगृहमागमिष्यसि

वि०—अहमवश्यमष्ट वादनसमये स्वगृहमागमिष्यामि ।
रा०—तर्हि अहमपि त्वया सह आगच्छामि ।
वि०—आगच्छ तर्हि शीघ्रम् । समय गच्छति ।
राम०—शीघ्रमागत[1] । सूर्य तिष्ठ[2] ।

पाठ २८

"स्मर" के पूर्व "वि" लगाने से "विस्मर" रूप बनता है और उसका अर्थ 'भूलना' ऐसा होता है, देखिये —

स्मरति=स्मरण करता है स्मरसि=स्मरण करता है
स्मरामि=स्मरण करता हूँ स्मरिष्यति=स्मरण करेगा
स्मरिष्यसि=तू स्मरण करेगा स्मरिष्यामि=स्मरण करूँगा
त्वया=तूने मया=मैंने
तेन=उसने विस्मरति=वह भूलता है
विस्मरसि=तू भूलता है विस्मरामि=भूलता हूं
विस्मरिष्यति=भूलेगा विस्मरिष्यसि=तू भूलेगा
विस्मरिष्यामि=भूलूँगा बालकेन=लड़के ने
पुरुषेण=मनुष्य ने पुत्रेण=पुत्र ने

वाक्य

१ यत् त्व पठसि तत् सर्वदा स्मरसि न वा=जो तू पढ़ता है उसे सदा स्मरण करता है या नहीं ।

२. यद् अहं पठामि तद् कदापि न विस्मरामि=जो मैं पढ़ता हूँ वह कभी नहीं भूलता ।

३ यदित्वमेवविस्मरिष्यसि तर्हि कथ पठिष्यति=अगर तू इस

---

१ जल्दी आया । २ क्षणभर ठहर ।

प्रकार भूलेगा तो कैसे पढ़ेगा।

४. अहं अतः ऊर्ध्वं न विस्मरिष्यामि=मैं इसके पश्चात् नहीं भूलूँगा।

५. यथा तव गुरुः आज्ञापयति तथा कुरु=जैसा तेरा गुरु आज्ञा करता है वैसा कर।

६. स मां वृथा पीडयति=वह मुझे व्यर्थ दुःख देता है।

७. अतः अहं तं अवश्यं ताडयिष्यामि=इसलिए मैं उसको अवश्य पीटूँगा।

८. स महिषः कस्य अस्ति=यह भैंसा किसका है ?

९. स महिषः नास्ति वृषभः अस्ति=वह भैंसा नहीं है, बैल है।

शब्द

गतं=गया	आगतं=आ गया
भक्षितं=खाया	दत्तं=दिया
स्वीकृतं=स्वीकार किया	उक्तं=कहा
नीतं=लिया	आनीतं=लाया
कृतं=किया	पीतं=पिया
स्नातं=स्नान किया	इष्टं=वांछित
जातं=उत्पन्न हुआ	उत्थितं=उठा हुआ
स्थितं=ठहरा हुआ	ताडितं=ताडना किया हुआ
गृहीतं=लिया	आज्ञापितं=आज्ञा की
स्मृतं=स्मरण किया	विस्मृतं=भूला
श्रुतं=सुना	दृष्टं=देखा
पठितं=पढ़ा	उद्घाटितं=खोला
पिहितं=बन्द किया	लिखितं=लिखा

ज्ञातं=जाना	विज्ञातं=जाना
प्रक्षालितं=धोया	क्रीडीत=खेला
रक्षित=रक्षा की	आरब्ध=आरम्भ किया
क्रीतं=खरीदा	विक्रीत=बेचा
अटित=घूमा	कथित=कहा

वाक्य

१ त्वया फलं नीत किं=क्या तू ने फल लिया ?

२. मया तत् अद्यापि* न दृष्टम्=मैंने वह अब तक नहीं देखा।

३ बालकेन वस्त्र प्रक्षालित=बालक ने कपड़ा धोया।

४. मया शोभन कर्म आरब्धम्=मैंने श्रेष्ठ कार्य आरम्भ किया।

५. त्वया तत् कथ विस्मृत किं=तूने वह कैसे भुला दिया।

ऋकारान्तः स्त्रीलिंग 'मातृ' शब्दः

१. प्रथमा	माता	माता
२. द्वितीया	मातर	माता को
३ तृतीया	मात्रा	माता ने
४. चतुर्थी	मात्रे	माता के लिये
५. पंचमी	मातुः	माता से
६. षष्ठी	,,	,, का
७. सप्तमी	मातरि	माता में
सम्बोधन	(हे) मातर्	(हे) माता

माता शब्द के समान चलने वाले शब्दः—

दुहितृ=लड़की	यातृ=चलने वाली
ननांदृ=ननद, पति की बहिन	ननदृ=ननद, पति की बहिन

---

* अद्य अपि।

वाक्य

१. सर्वदा उद्यमः कर्तव्यः=सदा उद्योग करना चाहिए।
२. उद्यमेन एव सुखं भवति=उद्योग से ही सुख होता है।
३. भुक्त्वा बदरीफलं भक्षणीयम्=भोजन करके बेर खाना चाहिए।
४. अभुक्त्वा आमलकः पथ्यः=भोजन न करके आंवला हितकर (है)
५. त्वं बालकेन सह क्रीडसि=तू लड़के के साथ खेलता है।
६. अहं तु न क्रीडामि=मैं तो नहीं खेलता।
७. स तत्र किमर्थं कोलाहलं करोति ?=वह वहां क्यों शोर करता है ?
८. यदि अहं क्रीडामि तर्हि गुरुः मां ताडयिष्यति=अगर मैं खेलूँगा तो गुरु मुझे मारेगा।
९. तव मातुः किं नाम अस्ति=तेरी माता का क्या नाम है।
१०. तस्य पितुः नामः यज्ञदत्तशर्मा इति=उसके पिता का नाम यज्ञदत्तशर्मा ऐसा (है)।
११. दुग्धं पीत्वा फलं भक्षयामि=दूध पीकर फल खाऊंगा।
१२. अश्वः शीघ्रं धावति=घोड़ा जल्दी दौड़ता है।

सरल वाक्य

(१) किमर्थं त्वं तत्र गत्वा मोदकं भक्षयसि। (२) मया अत्र कर्म न कृतम्। (३) दुर्जनः अन्यस्मै दुःखं ददाति। (४) सुजनः अन्यस्मै सुखं ददाति। (५) आकाशे रविं पश्य। (६) पाठशाला सदा नियमेन गंतव्यम्। (७) मित्रेण सह कलहः न कर्तव्यः। (८) यदा गुरुः पाठं कथयति तदा तत्र चित्तं देयम्। (९) इतस्ततः न द्रष्टव्यम्। (१०) सशर्करं दुग्धं पेयम्।

तत्=वह	कर्म=उद्योग
अन्यस्मै=दूसरे के लिये	कलहः=झगड़ा

देयं=देने योग्य	द्रष्टव्यं=देखने योग्य
पेय=पीने योग्य	दुर्जन=दुष्ट मनुष्य
सुजनः=सज्जन	नियम=नियम
चित्तं=मन, दिल	इतस्तत=इधर उधर
सशर्करं=खाड के साथ	बदरीफल=बेर

सरल वाक्य

१ स यत् पठति तत् कदाऽपि न विस्मरति। २ अहं यत् शृणोमि[1] तत् कदापि न विस्मरामि। ३ यथा गुरुः मां आज्ञापयति तथैव[2] अहं करोमि। ४ त्व बालकेन सह-किमर्थं क्रीडसि इदानीम्। ५ त पुरुषं त्वं पश्यसि किम्? ६ यदा यदा प्रकाशः न भवति तदा तदा दीपं प्रज्वालय[3]।

पाठ २६

१. इदानीं त्वया किं कृत=अब तूने क्या किया?
२. गृहं गत्वा अधुना मया अन्नं भक्षित=घर जाकर अब मैंने अन्न खाया।
३. तस्य पुस्तक त्वया नीतं किं=उसका पुस्तक तूने लिया क्या?
४ तेन तत् वरं अद्यापि न कृतम्=उसने वह अच्छा काम अब तक नहीं किया।
५. तत् सर्व शोभन जात=वह सब ठीक हुआ।
६. यत् त्वया पुस्तक गृहीतं तत् मम अस्ति=जो तूने पुस्तक लिया वह मेरी है।
७ यत् त्वया आज्ञापित तत् मया न श्रुतम्=जो तूने आज्ञा की

१ सुनता हूं। २ वैसा ही। ३ जलाओ।

वह मैंने नहीं सुनी।

८. किं त्वया न स्मृतं यत् तेन उक्तम्=क्या तुझे स्मरण नहीं जो उसने कहा था।

९. यत् तेन उक्तं तत् सर्वं मया पूर्वं एव विस्मृतम्=जो उसने कहा वह सब मैंने पहिले ही भुला दिया।

१०. यत् त्वया तत्र दृष्टं तत् सर्वं कथय=जो तूने वहाँ देखा वह सब कह।

११. यदि त्वया तद् ज्ञातं तत् मामपि वद=अगर तूने उसे जान लिया तो मुझे भी कह।

१२. यदि त्वया स्वगृहं रक्षितं तर्हि वरं कृतं=अगर तूने अपने मकान की रक्षा की तो अच्छा किया।

१३ यदि त्वया अद्यापि वस्त्रं न विक्रीतम्=अगर तूने अब तक कपड़ा नहीं बेचा।

१४. तर्हि तद् मह्यं देहि=तो उसे मुझे दे।

१५. यदि त्वया इदानीं पर्यंतं द्वारं न उद्घाटितं=अगर तूने अब तक दरवाजा नहीं खोला।

१६ तत् केन उद्घाटितं तत् शीघ्रं कथय=तो किसने उसे खोला यह शीघ्र कह।

१७. तद् अहं न जानामि=वह मैं नहीं जानता।

१८ त्वया जलं पीतं किम्=तूने जल पिया क्या ?

शब्द

ग्लानिः=शिथिलता	अभ्युत्थानं=चढ़ाई
खलु=निश्चय से	मूलं=जड़
सत्यात्=सत्य से	परः=श्रेष्ठ, दूसरा, भिन्न

प्रतिष्ठित=स्थित है   पिष्टक=डबलरोटी

वाक्य

१. यदा यदा धर्मस्य ग्लानिः भवति=जब जब धर्म की शिथिलता होती है।

२. तदा तदा अधर्मस्य अभ्युत्थानं भवति=तब तब अधर्म की चढ़ाई होती है।

३. सत्यात् परः धर्मः नास्ति=सत्य से श्रेष्ठ दूसरा धर्म नहीं।

४. असत्यात् परः अधर्मः न कः अपि अस्ति=असत्य से भिन्न अधर्म कोई भी नहीं है।

५. त्वं सत्यं वदसि इति वरं करोषि=तू सत्य बोलता है। यह ठीक करता है।

६. कदापि असत्य न वद=कभी असत्य न बोल।

७ सर्वं खलु धर्ममूलं सत्ये प्रतिष्ठितं=सब धर्म का मूल सत्य में स्थित है।

८. यः सत्यं न वदति स असत्यवादी भवति=जो सत्य नहीं बोलता है वह असत्यवादी होता है।

९. असत्यात् दारिद्र्य वरं अस्ति=असत्य से गरीबी अच्छी है।

१०. त्वं सर्वदा असत्य किमर्थं वदसि=तू सर्वदा असत्य क्यों बोलता है ?

११. मया कदापि असत्य न उक्तं=मैंने कभी असत्य नहीं कहा।

१२. यत् द्रव्य मया रक्षितं तत् सर्वं त्वया त्यक्तं=जो द्रव्य मैंने रखा था वह सब तूने छोड़ दिया।

१३ पुनः पुनः श्रुतम् अपि लिखितु न शक्नोमि=फिर फिर सुना हुआ भी (मैं) लिख नहीं सकता।

१४. यत् जलं त्वया आनीतं तत् शुद्धं नास्ति=जो जल तू ने लाया है वह शुद्ध नहीं।

१५. मया कूपात् जलम् आनीतम् अस्ति, अतः तत् शुद्धम् एव अस्ति=मैं कुँवे से जल लाया हूँ, इस लिये वह शुद्ध ही है।

दकारान्तः स्त्रीलिङ्ग 'तत्' शब्द

१. प्रथमा	सा	वह	[स्त्री]
२. द्वितीया	तां	उसको	[,,]
३. तृतीया	तया	उसने	[,,]
४. चतुर्थी	तस्यै	उसके लिये	[,,]
५. पञ्चमी	तस्याः	उससे	[,,]
६. षष्ठी	,,	उसका	[,,]
७. सप्तमी	तस्यां	उस में	[,,]

तद् शब्द के पुल्लिङ्ग रूप पाठ २२ पृष्ठ ११७ पर दिये हुए हैं। पाठकों को चाहिये कि वे पुल्लिङ्ग रूपों में जो भिन्नता है उसको ठीक प्रकार ध्यान में रखें। पुल्लिङ्ग शब्द के बदले पुल्लिङ्ग रूप आयेंगे और स्त्रीलिङ्ग रूप आयेंगे ये नियम हैं। निचले वाक्य ध्यान से देखने से इस नियम का पूरा पता लग जायगा :—

वाक्य

१. यः पुरुषः ग्रामत् आगतः स इदानीं अत्र नास्ति=जो पुरुष गाँव से आया वह अब यहाँ नहीं।

२. या बालिका नगरं गता सा कस्य पुत्री ?=जो लड़की शहर गई वह किसकी पुत्री ?

३. तं पुत्रं तस्मिन् स्थाने पश्य=उस पुत्र को उस स्थान में देख।

४. तां पुत्रीं तस्मिन् स्थाने पश्य=उस लड़की को उस स्थान में देख

४. अत्र तेन शोभनं व्याख्यातं दत्तम्=यहां उस ने अच्छा व्याख्यान दिया।

५. स वरं व्याख्यानं ददाति=वह अच्छा व्याख्यान देता है।

६. एवम् अत्र न कः अपि वक्तुं शक्नोति=इस प्रकार यहां कोई भी नहीं बोल सकता।

७. स संस्कृतभाषायाम् प्रवीणः अस्ति=वह संस्कृत भाषा में प्रवीण है।

८. यथा स्वामी सर्वदानन्दः प्रवीणः अस्ति=जैसा स्वामी सर्वदानन्द प्रवीण है।

९. न तथा पंडितः विश्वामित्र शर्मा=नहीं वैसा पं० विश्वामित्र शर्मा

१०. त्वया तस्य व्याख्यानं श्रुतं किम्=क्या तूने उसका व्याख्यान सुना?

११. कदा स पुनः स्वनरं गमिष्यति=कब वह फिर अपने गाँव को जायगा।

१२. स इदानीं नैव गमिष्यति=वह अब नहीं जायगा।

१३. अत्र स्थित्वा स किं कर्तुमिच्छति=यहां ठहर कर वह क्या करना चाहता है।

१४. अत्र स्थित्वा स धर्मप्रचारं करिष्यति=यहाँ ठहर कर वह धर्म का प्रचार करेगा।

१५. यदि स अत्र स्थास्यति तर्हि वरं भविष्यति=अगर वह यहां रहेगा तो अच्छा होगा।

दकारान्तः स्त्रीलिङ्ग 'यद्' शब्दः

१ प्रथमा	या	जो	स्त्री

(१) कर्तुं इच्छति।

२ द्वितीया	यां	जिस को	स्त्री
३ तृतीया	यया	जिस ने	,,
४ चतुर्थी	यस्यै	जिस के लिये	,,
५ पञ्चमी	यस्याः	जिस से	,,
६ षष्ठी	,,	जिसका	,,
७ सप्तमी	यस्यां	जिस में	,,

स्त्रीलिङ्गः 'किम्' शब्दः

प्रथमा	का	कौन	(स्त्री)
२ द्वितीया	कां	किस को	,,
३ तृतीया	कया	किस ने	,,
४ चतुर्थी	कस्यै	किस के लिये	,,
५ पञ्चमी	कस्याः	किस में	,,
६ षष्ठी	,,	किस का	,,
७ सप्तमी	कस्यां	किस में	,,

वाक्य

१. का पुत्रिका पुस्तकं पठति=कौन सी लड़की पुस्तक पढ़ती है

२. या बालिका पाठशालां गच्छति सा एव पठितुं शक्नोति=जो लड़की पाठशाला को जाती है वह ही पढ़ सकती है।

३. यया पुस्तकं पठितं तस्यै धनं वस्त्रं च देहि=जिस (स्त्री) ने पुस्तक पढ़ा है उसके लिये धन और कपड़ा दे।

४. यस्याः कृते त्वं तत्र गतः, सा न आगता किम्=जिसके कारण तू वहाँ गया, वह नहीं आई क्या?

५. यस्यां पाठशालायां मम पुत्रः पठति, तव अपि तस्यां

५. तव धर्मपत्नी अत्र अस्ति किं। यदि अस्ति तर्हि तया किं इदानीं कर्तव्यम्=तेरी धर्मपत्नी यहाँ है क्या ? अगर है तो उसने क्या अब करना है।

६. तस्मै जलं देहि=उसके लिये जल दे।

७. तस्याः वस्त्रं कुत्र अस्ति=उसका कपड़ा कहां है ?

८. तां पाठशालां पश्य तस्यां मम पुत्रः पठति=उस पाठशाला को देख उसमें मेरा लड़का पढ़ता है।

९. यत्र त्वं गच्छसि तत्र स न गच्छति किम् ?=जहाँ तू जाता है वह वहाँ नहीं जाता क्या ?

पाठ ३०

गजः=हाथी	सर्पः=सांप
लवपुरं=लाहौर	नैव=नहीं
विद्यालयं=पाठशाला को	ब्रह्मचारी=ब्रह्मचारी
शब्दः=शब्द	उदेति=उगता है, निकलता है
प्रयत्नः=उद्योग	अधिकारः=ओहदा
प्रकाशः=प्रकाश	अंधकारः=अंधेरा
घण्टानादः=घण्टे की आवाज	एकः=एक
प्रथमः=पहिला	द्वितीयः=दूसरा

वाक्य

१. पुस्तकं लेखनीं मसीपात्रं च मह्यं देहि=पुस्तक, कलम और दवात मुझे दे।

२. कोलाहलं न कुरु इति हरिदत्तं कथय=कोलाहल न कर ऐसा हरिदत्त को कह।

३. यत्र भूमित्रः अस्ति तत्र त्वं शीघ्रं गच्छ=जहाँ भूमित्र है

एव पठति=जिस पाठशाला में मेरा लड़का पढता है तेरा भी वहाँ ही पढता है ।

६. तस्या देवताया भक्ति धारय=उस देवता में भक्ति धारण कर ।

७. पठनस्य काले तस्याः शब्द महान् भवति=पढने के समय उस (स्त्री) का शब्द बड़ा होता है

परीक्षा

अब तीस पाठ हो चुके हैं । अब आज पाठकों की परीक्षा होनी है । अगर पाठक सब प्रश्नों के ठीक ठीक उत्तर दे सकेंगे तो वे आगे बढ़ सकते हैं । अन्यथा उनको चाहिए कि वे पूर्व के तीस पाठ प्रारम्भ से दुबारा पढ़ें और सब को ठीक ठीक स्मरण करें । जब तक पिछला स्मरण न होगा तब तक आगे बढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा ।

परीक्षा के प्रश्न ।

(१) निम्न शब्दों के सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप दीजिये —

पुल्लिंगी शब्द ।

मार्ग । देव । भाग । धनञ्जयः । कवि. । अरि । भानुः । पितृ । भ्रातृ । सर्व.

स्त्रीलिंगी शब्द ।

-उपासना । दया । मातृ । विद्या । जिह्वा । नासिका । किम् यद् । धेनु । नदी ।

(२) निम्न शब्दों के केवल तृतीया, चतुर्थी तथा पञ्चमी के एकवचन के रूप लिखिये :—

राम. । देवता । विष्णु । कर्तृ । अस्मत् ।

(३) निम्न वाक्यों का भाषा में अर्थ लिखिये :—

स त्वां न जानाति किम्? यदा म आगत तदा एव त्वं गतः। दशरथस्य पुत्रः श्रीरामचन्द्रः अस्ति। विश्वामित्रेण सह रामचन्द्रः वनं गतः। वने का अद्य स्नानं भवयति। सा बाला वसिमन् गृहे न पठति।

(४) निम्न वाक्यों के उत्तर संस्कृत में ही दीजिये।

तव किं नाम अस्ति? इदानीं त्वं किं पठति? श्रीकृष्णचन्द्रः कस्य पुत्रः आसीत्? श्रीरामचन्द्रेण केन सह युद्धं कृतं? धर्मेण किं भवति?

(५) निम्न भाषा के वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइये :—

मैं मदरसे को जाता हूं। वह मुझे देखता है। राजा ने उसके लिये धन दिया। सूर्य आकाश में आया। प्रातःकाल में सन्ध्या कर। सवेरे उठ और स्नान कर।

(६) आप कोई एक कथा संस्कृत में ही लिखने का यत्न कीजिये।

(७) निम्न शब्दों के अर्थ कीजिये :—

उत्तिष्ठ। व्यायामः। पंचवादनसमयः। नागः। याचकः। नैतिकः। रविः। कोलाहलः। स्वपिमि। युवा। कुशलः। शुभं। जाया।

पाठ ३१

हे सुविद्य पाठको! इस समय तक आपने ३० पाठ स्मरण किये हैं और व्याकरण के नियमों का विशेष ज्ञान न होते हुए भी आपने व्यावहारिक बातचीत संस्कृत भाषा में करने की कुछ योग्यता प्राप्त की है।

अब इसके पश्चात् थोड़ा थोड़ा व्याकरण का परिचय आप को करने की आवश्यकता है, व्याकरण के जानने के लिये प्रथम संस्कृत अक्षरों की बनावट पर तथा शब्दों की घटना पर एक दृष्टि डालनी

चाहिये अन्यथा व्याकरण के नियम ठीक ठीक ध्यान में नहीं आ सकते।

व्यञ्जन और स्वर मिलकर संस्कृत के तथा भाषा के अक्षर बनते हैं जैसा देखिये :—

क्+अ=मिलकर क बनता है।

म्+अ= ,, म बनता है

ल्+अ= ,, ल ,, ,,

अर्थात् "कमल" शब्द की बनावट "क्+अ+म्+अ+ल्+अ" इतने वर्णों से हुई है, इसी प्रकार :—

(र्+आ)+(म्+अ)=मिलकर "राम" शब्द बनता है।

(प्+इ)+(त्+आ)=मिलकर "पिता" शब्द बनता है।

(उ)+ (द्+य्+आ)+(न्+अ+म्)=मिलकर "उद्यान" शब्द बनता है।

(ई)+(श्+व्+अ)+(र्+अः)=मिलकर "ईश्वरः" शब्द बनता है।

(प्+उ)+स्+त्+अ)+(क्+अ+म्)=मिलकर "पुस्तक" शब्द बना है।

(य्+अ+ + त्)=मिलकर "यत्" शब्द बना है।

(द्+ए)+(व्+अः)=मिलकर "देवः" शब्द बना है।

पाठकों को उचित है कि वे इस अक्षर घटना तथा शब्द घटना को स्मरण में रक्खें। संस्कृत के अक्षर तथा शब्द जैसे लिखे जाते हैं, वैसे ही बोले जाते हैं, और जैसे बोले जाते हैं वैसे ही लिखे जाते हैं, उर्दू अँग्रेजी के समान "लिखना कुछ और बोलना कुछ" वाली बात यहां नहीं है, इसलिये संस्कृत की शब्द घटना (Spelling स्पेलिंग—हिज्जे) उर्दू अँग्रेजी की अपेक्षा सुगम है।

संस्कृत में व्यञ्जन और स्वर सामने सामने आते ही शुद्ध

आते हैं, जैसे देखिये :—

तं अपि=तमपि (तम्+अपि)

त्वं आगच्छ=त्वमागच्छ (त्वम्+आगच्छ)

यत् अस्ति=तदस्ति (यद्+अस्ति)

यत् अस्ति=यदस्ति (यद्+अस्ति)

इस प्रकार जोड़ हम आगे के पाठ में लिखेंगे इसलिये पाठकों को उचित है कि वे इस जोड़ की व्यवस्था को ध्यान में रखें, जहां जहां जोड़ आवेगा वहां वहां पृष्ठ के नीचे टिप्पणी देकर उस शब्द को खोलकर भी बतायेंगे। अस्तु। जोड़ के विषय में इतना ही पर्याप्त है।

अब कुछ वाक्य दिये हैं उनकी ओर पाठकों को ध्यान देना चाहिये, इन वाक्यों के अन्दर उक्त प्रकार के जोड़ दिये हैं:—

वाक्य

१. यदस्ति[1] तत्र तदत्र[2] त्वमानय=जो है वहाँ, वह यहाँ तू ले आ।

२. रामः शीघ्रमागच्छति[4]=राम जल्दी आता है।

३. त्वमधुना[5] पुस्तकं देहि=तू अब पुस्तक दे।

४. तदधुना[6] तत्र नास्ति[7]=वह अब वहाँ नहीं है।

५ स कदापि[8] नैव[9] असत्यं वदति=वह कभी असत्य नहीं बोलता।

६. स पुष्पमानयति[10]=वह फूल लाता है।

(१) यद्+अस्ति। (२) तद्+अत्र। (३) त्वम्+आनय। (४) शीघ्रम्+आगच्छ। (५) त्वम्+अधुना। (६) तद्+अधुना। (७) न+अस्ति। (८) कदा+अपि। (९) न+एव। (१०) पुस्तक+आनय।

५. त्वं कस्म धनं ददासि	त्वं कस्यै धनं ददासि
६. यस्मै त्वं इच्छसि	यस्यै त्वं इच्छसि
७. येन मनुष्येण जलं पीतम्	यया पुत्रिकया जलं पीतम्
८. तस्मै देहि	तस्यै देहि
९. यः गच्छति	या गच्छति
१०. कः एवं वदति	का एवं वदति
११ सः वदति	सा वदति
१२. केन न पठितम्	कया न पठितम्
१३. कस्य गृहम् अस्ति	कस्याः गृहम् अस्ति

संस्कृत में पत्र लेखन

ॐ

अलमोड़ा नगरे
चैत्रस्य शुक्ल-पक्षस्य मू
रविवासरे सं० १९३५.

भो प्रियमित्र कृष्णवर्मन्

नमस्ते ! तव पत्रं अद्य एव लब्धम् । आनंदः जातः । अहं तव नगरं शीघ्र न आगमिष्यामि । अत्र मम बहु कर्तव्यम् अस्ति । अहं श्वः हिम-पर्वतं गमिष्यामि । तस्य स्थानस्य नाम त्वं जानासि एव । तस्य पर्वत-शिखरस्य नाम धवलगिरिः इति अस्ति । तस्य दृश्यं अतीव सुन्दरम् अस्ति । यदि त्वं तत्र आगमिष्यसि तर्हि वरं भविष्यति । यदि त्वं आगन्तुम् इच्छसि तर्हि वरं भविष्यति । यदि त्व आगन्तुम् इच्छसि तर्हि मम मातरम् अपि त्वया सह आनय ।

सर्वं अत्र कुशलम् अस्ति । तव सदैव कुशम् इच्छामि ।

तव मित्रम्
सीता.रामः

भो=हे नमस्ते=तुम को नमस्कार
लब्ध=प्राप्त आनन्दः=खुशी
वर=अच्छा बहु=बहुत
हिम=बर्फ पर्वत=पहाड़
शिखर=(पहाड़ की) चोटी दृश्य=सीन
कुशल=स्वास्थ्य तपस्या=तप

सरल वाक्य

तव पुत्रिका कुत्र अस्ति । सा मात्रा सह हरिद्वार नगरं गता ।
कदा सा पुनः स्वगृहमागमिष्यति । यदा तस्याः माता आगमिष्यति
तदा एव तया सह सा अपि आगमिष्यति । सा तत्र किं करोति ।
हृषीकेशनामके तीर्थस्थाने सा तपस्यां करोति । कथं पुत्रिका तपस्यां
करोति । तत्र कन्या गुरुकुलम् अस्ति । तत्र सा अध्ययनं कर्तुम्
इच्छति । तर्हि एवं कथय । किमर्थम् असत्यं वदसि सा तत्र तपस्यां
करोति इति ।

पाठ ३२

शब्द के अन्त में जो नुक्ता अर्थात् अनुस्वार होता है उस का "म्" बनता है, और उसके सामने जो स्वर आता है उसके साथ वह मिल जाता है, और कोई स्वर न आए तो "म्" ही रहता है जैसे —

देवं—देवम्
इदानीं—इदानीम्
त्वं—त्वम्
} इस प्रकार अनुस्वार का "म्" बनता है।

वाक्य

१ देव अत्र गच्छति=देव (विद्वान) यहां जाता है ।

२. तं देवं पश्य=उस देव को देख।
३. देवेन ज्ञानं दत्तम्=देव ने (विद्वान ने) ज्ञान दिया।
४. देवाय जलं देहि=देव के लिये जल दे।
५. देवात् द्रव्यं गृह्णामि=देव से द्रव्य लेता हूं।
६. देवस्य एतत् सर्वम् अस्ति=देव का यह सब है।
७. देवे सर्वम् अस्ति=देव (ईश्वर) के अन्दर सब कुछ है।
८. हे देव ! अत्र पश्य=हे देव ! यहां देख।
९. रामः दशरथस्य पुत्रः अस्ति=राम दशरथ का पुत्र है।
१०. रामं दशरथः एवं वदति=रामको दशरथ ऐसा बोलता है
११. कृष्णेन जलं दत्तम्=कृष्ण ने जल दिया।
१२. देवदत्ताय पुस्तकं देहि=देवदत्त के लिये पुस्तक दे।
१३ लवपुरात् फलं आनय=लाहौर शहर से फल लेआ।
१४. रामस्यरावणस्य च युद्धं जातम्=राम और रावण का युद्ध हुआ।
१५. तस्य गृहे मम वस्त्रम् अस्ति=उस के घर में मेरा कपड़ा है।
१६. हे देवदत्त ! त्वं युद्धं न कुरु=हे देवदत्त तू युद्ध न कर।
१७. बालकः उपरि अस्ति=बालक ऊपर है।
१८. तं बालकं पश्य ! कथं स धावति=उस बालक को देख ! कैसे वह दौड़ता है।
१९. बालकेन स्नानं कृतम्=बालक ने स्नान किया।
२०. बालकाय मोदकं देहि=बालक को लड्डू दे।
२१. बालकात् पुस्तकं गृहाण=बालक से पुस्तक ले।
२२. बालकस्य वस्त्रं रक्तमस्ति=बालक का कपड़ा लाल है।
२३ बालके दयां कुरु=बालक पर दया कर।
२४. हे बालक ! त्वमुत्तिष्ठ=हे बालक ! तू उठ।

(१) रक्तं+अस्ति। (२) त्वं+उत्तिष्ठ।

शब्द

पालकः=पालनकर्ता — पानीयं=जल
पेटकः=संदूक — पुच्छं=दुम
कणः=धन का कण — दन्तः=दांत
तक्रम्=छाछ — घृतं=घी
ओदनं=चावल — खट्वा=चारपाई, खटिया
कपि=बंदर — वैर=शत्रुता

क्रिया

ज्वलति=(वह) जलता है — ज्वलसि=(तू) जलता है
वहति=(वह) उठाता है — कृन्तति=(वह) कुतरता है
ज्वलामि=जलता हूं — अत्ति=(वह) खाता है
अत्सि=(तू) खाता है — अद्मि=खाता हूं
कृंतसि=(तू) कुतरता है — कृंतामि=कुतरता हूं
निःसरति=(वह) निकलता है निःसरसि=(तू) निकलता है

वाक्य

१. मम गृहे अश्वः अस्ति=मेरे घर में घोड़ा है।
२. तस्य पुच्छं श्वेतम् अस्ति=उसकी दुम सफेद है।
३. स घृतं नैव अत्ति=वह घी नहीं खाता है।
४. तस्य दन्तः श्वेतः नास्ति=उसका दांत सफेद नहीं है।
५. अयं तस्य पेटकः नास्ति=यह उसका ट्रंक नहीं।
६. अहम् ओदनं भक्षयामि=मैं भात खाता हूं।
७. स ओदनं दुग्धेन सह अत्ति=वह चावल दूध के साथ खाता है।
८. त्वं कथं शर्करया सह ओदनं अत्सि=तू कैसे शक्कर के साथ चावल खाता है?

९. अहं तस्य छत्रं नयामि=मैं उसका छाता ले जाता हूं।
१०. मूषकः तस्य पुच्छं कृंतति=चूहा उसकी दुम काटता है।
११. हे मित्र! अधुना उद्यानं गच्छ, तत्र मम भृत्यः अस्ति=हे मित्र अब बाग को जा, वहाँ मेरा नौकर है।

सरल—वाक्य

१ त्वं अत्र शीघ्रं ओदनम् आनय। २ अत्र जलम् अपि नास्ति। ३ तस्य पुस्तकं तव मित्रेण नीतम्। ४ तत्र दीपः ज्वलति। ५ तस्य प्रकाशे पुस्तकं पठ। ६ स किं वदति इदानीम्। ७ अहं मम ग्रामम् अद्य गमिष्यामि। ८ यदि भूमित्रः अत्र अस्ति तर्हि तम् अत्र आनय। ९ राजा चौरं दृष्ट्वा धावति। १० यदा मम गृहे चौरः आगतः तदा त्वं कुत्र गतः।

पाठ २२

आसीत्=था, हुआ था	राजा=नरेश, राजा
कृतं=किया	युद्धं=जंग, लड़ाई
हतः=मारा, हनन किया	सह=साथ
अभूत्=होगया था, हुआ था	
तेन=उसने	नामधेय, नामक=नामवाला
अवलंब्य=अवलम्बन करके	राज्यं=राज्य
अकरोत्=करता था,	भार्या=स्त्री, धर्मपत्नी
नामधेया=नाम की	साध्वी=पतिव्रता

वाक्य

१. रामचन्द्रः कः आसीत्=रामचन्द्र कौन था ?
२. रामचन्द्रः अयोध्यानामकस्य नगरस्य राजा आसीत्=रामचन्द्र अयोध्या नगरी का राजा था।

३. तेन रामेण किं कृतम्=उस रामने क्या किया ?

४ रामेण युद्धे रावण हत =राम ने युद्ध में रावण को मारा ।

५. रावण: क आसीत्=रावण कौन था ?

६. रावण लङ्कानामधेयस्य नगरस्य राजा आसीत्=रावण लङ्का नगरी का राजा था ।

७ रावणेन सह रामस्य युद्ध किमर्थं बभूव=रावण के साथ राम का युद्ध किस कारण हुआ ?

८. रावण धर्मं त्यक्त्वा अधर्मम् अवलम्ब्य राज्यम् अकरोत्, अत: रावणेन सह रामेण युद्ध कृतम्=रावण धर्म को छोड़ अधर्म का अवलम्बन करके राज्य करता था, इसलिये रावण के साथ राम ने युद्ध किया ।

९ रामस्य का भार्या आसीत्=राम की स्त्री कौन थी ?

१० सीता नामधेया रामस्य भार्या अतीव साध्वी आसीत्=सीता नाम वाली राम की धर्मपत्नी अत्यन्त पतिव्रता थी ।

११. रामचन्द्रस्य माता का आसीत्=रामचन्द्र की माता कौन थी ?

१२ कौशल्यानामधेया श्रीरामचन्द्रस्य माता आसीत्=कौशल्या नाम वाली श्री रामचन्द्र की माता थी ।

१३. रावणस्य भ्राता क आसीत्=रावण का भाई कौन था

१४. विभीषण: रावणस्य भ्राता आसीत्=विभीषण रावणका भाई था।

१५. रामचन्द्रस्य लक्ष्मणनामधेय: बन्धु आसीत्=रामचन्द्र का लक्ष्मण नामक भाई था ।

१६ तथा भरत: शत्रुघ्न अपि=इसी प्रकार भरत और शत्रुघ्न भी ।

१७. रामेण सह साध्वी सीता वनं गता आसीत्=राम के साथ

पतिव्रता सीता देवी वन में गई थी।

१८. रामेण सह लक्ष्मणः अपि वनं गतः=राम के साथ लक्ष्मण भी वन को गया था।

१९. यथा रामेण राक्षसाः हताः तथा एव लक्ष्मणेन अपि राक्षसाः हताः=जिस प्रकार राम ने राक्षसों को मारा उसी प्रकार लक्ष्मण ने भी राक्षसों को मारा।

२०. रामः धर्मेण राज्यं अकरोत्=राम ने धर्म के साथ राज्य किया।

२१. अतः जनः रामे प्रीतिं अकरोत्=इस लिये लोग राम में प्रीति करते थे।

शब्द

वार्ता=बात	रम्या=रमणीय
नगरी=शहर	सा=वह
वार्तालाप=वार्तालाप, बातचीत	उष्ट्र=ऊँट
त्वरितं=शीघ्र	नयनं=आंख
उदकं=जल	गति=गमन दौड़
वृष्टि=वर्षा, वर्षा	प्रकाशः=प्रकाश, रोशनी
एष=यह	मुम्बानगरे=बम्बई में
मेघः=बादल	द्रुतं=शीघ्र
पत्र=पत्र, खत	पानीय=पानी

वाक्य

१. युद्धस्य वार्ता रम्या भवति=युद्ध की बात रमणीय होती है।

२. सा नगरी अतीव रम्या अस्ति=वह शहर बहुत रमणीय है।

३. कृष्णेन सह वार्तालापं कुरु=कृष्ण के साथ बातचीत कर।

४. उष्ट्रस्य त्वरिता गतिः=ऊँट की दौड़ तेज (होती है)
५. अश्वस्य गमनमपि[1] तथैव[2]=घोड़े की दौड़ भी वैसी ही है।
६. मेघात् वृष्टिः भवति=बादल से वृष्टि होती है।
७. सूर्यात् प्रकाशः भवति=सूर्य से प्रकाश होता है।
८. रात्रौ सूर्यः न भवति=रात्रि में सूर्य नहीं होता।
९. अहं रामाय पत्रं लिखामि=मैं राम के लिये पत्र लिखता हूं।
१०. त्वं पत्रं शीघ्रं लिख=तू जल्दी पत्र लिख।
११. पत्रस्य लेखनेन किं भविष्यति=पत्र लिखने से क्या होगा ?
१२. एष यज्ञदत्तस्य पुत्रः=यह यज्ञदत्त का पुत्र (है)।
१३. तव पुत्रः कुत्र अस्ति=तेरा पुत्र कहाँ से।
१४ मुम्बानगरे मम पुत्रः अस्ति=बम्बई में मेरा पुत्र है।

शब्द

पाचकः=रसोइया	यष्टि=सोटी
यष्टिका=सोटी	सूचिका=सूई
द्वार=दरवाजा	गण्डूष.=चुल्ली
अनृतं=असत्य	कशा=चाबुक
पर्पटः=पापड़	मृत्पिण्ड=मट्टी का गोला
कर्तरी=कैंची	पटः=वस्त्र
महानसं=रसोई का स्थान	पारितोषिकं=बखीस, इनाम
महिषः=भैंसा	महिषी=भैंस, महाराणी

क्रिया

आरोहति=(वह) चढ़ता है	आरोहसि=(तू) चढ़ता है
आरोहामि=चढ़ता हूँ।	उपविशति=(वह) बैठता है

(१) गमनं + अपि। (२) तथा + एव।

भ्रामयसि=(तू) घुमाता है		उत्तिष्ठामि=उठता हूं
हसति=(वह) हंसता है		निक्षिपति=(वह) फेंकता है
सिव्यते=छिद्दता है		कर्तयति=(वह) काटता है

वाक्य

१. अहं पर्पटं भक्षयामि=मैं पापड़ खाता हूं।
२. अयं पाचकः अस्ति=यह रसोइया है।
३. अयं स्थानात् अश्वः आगच्छति=अरव स्थान से घोड़ा आता है।
४. अद्य मार्गे कर्दमः जातः=आज मार्ग में कीचड़ हो गया है।
५. तव वस्त्रं मलिनम् अस्ति=तेरा वस्त्र मलिन है।
६ त्वां दृष्ट्वा स हसति=तुझ को देख कर वह हंसता है।
७. अहं तं दृष्ट्वा हसामि=मैं उसको देख कर हंसता हूं।
८. यष्टिकया मूषकं ताडय=छोटी से चूहे को मार।
९. यदि त्वं कूपस्य जलं पातुम् इच्छसि तर्हि मया सह आ गच्छ=अगर तू कूएँ का जल पीना चाहता है, तो मेरे साथ आ।
१०. अवन्ति-नगरात् तस्य मित्रं अद्य अपि न आगतम्=अवन्ति शहर से उसका मित्र आज भी नहीं आया।

सरल वाक्य

१. पश्य स सूचिकायां सूत्रं निक्षिपति। २ स कर्तर्या पत्र कर्तयति। ३ स स्वस्य गृहाद् अत्र एव आगतः। ४ महानसात् धूमः उत्तिष्ठति। ५ अत्र धूर्तः अस्ति तत्र न गन्तव्यम्। ६ जलस्य गंडूषेण मुखं प्रक्षालयामि। ७ तेन पाचितो पिष्टकं प्राप्तम्। ८ तस्य महिषी दुग्धं ददाति। ९ अयं सैनिकः कशया अश्वं ताडयति। १० पाठशालायां केनापि सह युद्धं न कुरु।

निम्न भाषा के वाक्यों का संस्कृत कीजिए —

१, उस याचक को अन्न दो। २ जो लड़की पाठशाला को जाती है, वह किसकी है। ३ मैं घड़ा देखता हूँ। ४ तू बादल देखता है। ५ तेरा संदूक कहां है।

पाठ २४

अकारान्त नपुंसकलिंगी शब्द

गमन=जाना	आगमन=आना
भक्षण=खाना	भोज =भोजन, रोटी
क्रीडन=खेलना	पान=पीना
दान=देना	आदान =लेना
हसन=हसना	स्वीकरण=स्वीकार करना
लेखन-लिखना	पत्र=पत्र
वस्त्र-वस्त्र	पात्र=बर्तन
शरीर=शरीर	अन्न=अन्न

संस्कृत में शब्दों के तीन प्रकार के लिंग होते हैं। कई शब्द पुल्लिंग हैं, हैं कई स्त्रीलिंग हैं और कई नपुंसकलिंग है, शब्दों के लिंग पहिचानने के लिये कोई सामान्य नियम नहीं हैं, और जो नियम है वे इस समय पाठकों के ध्यान में नहीं आ सकते, इसलिए यहां नहीं दिये जाते।

सब अकारान्त नपुंसक—लिंग शब्दों के रूप अकारान्त पुल्लिंग शब्द के समान ही होते हैं, केवल प्रथमा तथा द्वितीया के रूप कुछ भिन्न होते हैं, देखिये —

अकारान्त नपुंसकलिंगी शब्द

१ प्रथमा	भोजन	भोजन

२ द्वितीया	भोजनं	भोजन को
३ तृतीया	भोजनेन	भोजन से
४ चतुर्थी	भोजनाय	भोजन के लिये
५ पंचमी	भोजनात्	भोजन से
६ षष्ठी	भोजनस्य	भोजन का
७ सप्तमी	भोजने	भोजन में
संबोधन	(हे) भोजन	(हे) भोजन

इसी प्रकार सब अन्य अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के विषय में जानना चाहिये। इन रूपों को देख कर पाठकों ने जान लिया होगा कि, प्रथमा द्वितीया के अतिरिक्त अन्य विभक्तियां अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग शब्दों की एक सी होती हैं।

पाठकों ने देखा होगा, कि तृतीया विभक्ति का जो "न" है वह कई शब्दों में "ण" बनता है और कई शब्दों में "न" ही रहता है, इसका पूरा पूरा नियम हम आगे द्वितीय विभाग में देंगे परन्तु पाठकों को यहां इतना ही ध्यान में रखना चाहिये कि जिन शब्दों में "र ष" ये अक्षर होते हैं प्रायः उन शब्दों के "न" का "ण" बनता है, परन्तु कई अपवाद ऐसे आते हैं कि जिनमें "न" को "ण" नहीं बनता:—

(१) देवेन=देव ने
भोजनेन=भोजन से
गमनेन=गमन से
(२) रामेण=राम ने
नरेण=नर ने

पुरुषेण=पुरुष ने
(३) कृष्णेन=कृष्ण ने
रथेन=रथ ने
रावणेन=रावण ने

(१) देव, गमन, भोजन आदि शब्दों में "र, अथवा "ष" वर्तमान होने से "ण" नहीं हुआ (२) राम, नर इन शब्दों में "र

और प" होने से "ण" बना है (३) कृष्ण, रथ, रावण, इन शब्दों में कुछ विशेष हालत न होने के कारण "ण" बना नहीं। इस विशेष हालत का वर्णन हम आगे करेंगे, इस विशेष अवस्था की परवा न करते हुए पाठकों को रूप बनाने चाहिये और वाक्यों में उनका प्रयोग करना चाहिये।

अकारान्त नपुंसकलिंगी शब्द

पुण्यं=पुण्य	पातक=पाप
पोषण=पुष्टि	प्रक्षालन=धोना
ध्यान=ध्यान	भ्रमण=भ्रमण, घूमना
शीतनिवारण=शीत का निवारण	सत्य=सत्य
स्नान=स्नान	शूर्प=छज
फलक=पट्टा	जीरक=जीरा
चक्र=चक्र	

वाक्य

१. द्रव्यस्य दानेन किं फल भवति=द्रव्य के दान से क्या फल होता है ?

२. द्रव्यस्य दानेन पुण्य भवति=द्रव्य के दान से पुण्य होता है।

३. शरीरस्य पोषणाय अन्नमस्ति ।=शरीर की पुष्टि के लिये अन्न है।

४. वस्त्रस्य प्रक्षालनाय शुद्ध जल तत्र अस्ति=कपड़ा धोने के शुद्ध जल वहाँ है।

५ पत्रस्य लेखनाय मसीपात्र मह्य देहि=पत्र लिखने के लिये दवात मुझे दे।

६ कंदुक: खेलनाय भवति=गेंद खेलने के लिये होता है।

७. नगरात् नगरं तस्य भ्रमण सदा भवति=(एक) शहर से (दूसरे) शहर उसका भ्रमण सदा होता है।

८. वस्त्रेण शीतनिवारणं भवति=कपड़े से सर्दी का निवारण होता है।

९. तव भोजने कपट्टिका नास्ति×=तेरे भोजन में फुलका नहीं है।

१०. मम भोजने ओदन मस्ति* व्यंजनमपि‖ अस्ति=मेरे भोजन में भात है, और चटनी भी है।

११. इदानीं तत्र तस्य गमनं वरम्=अब वहाँ उसका जाना अच्छा है।

अकारान्त नपुंसकलिंगी शब्द

१. प्रथमा	ज्ञानं	ज्ञान
२. द्वितीया	ज्ञानं	ज्ञान को
३. तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञान ने
४. चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञान के लिये
५. पञ्चमी	ज्ञानात्	ज्ञान से
६. षष्ठी	ज्ञानस्य	ज्ञान का
७. सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञान में
सम्बोधन	(हे) ज्ञान	(हे) ज्ञान

अकारान्त नपुंसक-लिंगी शब्द

अम=लोक	अंजनं=काजल, सुरमा
चापल्यं=चपलता	अभिवादन=श्रेष्ठों को नमन

† अत्र+अस्ति। × न+अस्ति। * ओदनं+अस्ति। ‖ व्यंजनं+अपि।

अवलोकनं=देखना	फलं=फल
आरोग्यं=त-दुरुस्ती	स्थानं=जगह
उन्मीलनं=खोलना	कार्यं=कृत्य, काम
गानं=गाना	घ्राणं=नाक
चित्तं=मन	तरणं=तैरना
धनं=दौलत	नर्तनं=नाच
दुःखं=तकलीफ	अनामयं=आरोग्य
अ-पाटवं=बीमारी	नयनं=आँख
सत्यं=सत्य	असत्यं=असत्य
स्मरणं=याद	उत्तरं=जवाब
उपवनं=बाग	खनित्रं=खोदने का हथियार
श्रवणं=सुनना	पालनं=रक्षा
चलनं=चलना	जीवनं=जिन्दगी
तत्त्वं=तत्त्व	मूलं=जड़
इंद्रियं=इन्द्रिय	शस्त्रं=हथियार
आसनं=आसन	हवनं=हवन
क्षेत्रं=खेत	नामधेयं=नाम
पत्तनं=नगर	व्रतं=नियम
शीलं=स्वभाव	हिंसनं=हिंसा, वध

ये सब शब्द ज्ञान शब्द के समान ही चलते हैं।

वाक्य

१. मम शरीरस्य अपाटवम् अस्ति=मेरा शरीर बीमार है।
२. यथा आरोग्यं भवति तथा कार्यम्=स्वास्थ्य हो वैसा करना।
३. तव चित्तं कुत्र अस्ति=तेरा मन कहाँ है।

४. ईश्वरस्य स्मरणं प्रभाते उत्थाय अवश्यं कर्तव्यम्=ईश्वर का स्मरण सवेरे उठ कर अवश्य करना चाहिये ।

५. यदा त्वं व्रतं करोषि तदा किं भक्षयसि ?=जब तू व्रत करता है, तब क्या खाता है ।

६. अश्वस्य पालनं कुरु=घोड़े का पालन करो ।

७. यदा स असत्यं वदति तदा तस्य मुखं मलिनं भवति=जब वह झूठ बोलता है तब उसका चेहरा मलीन होता है ।

८ येन केनापि मार्गेण गच्छ=जिस किसी मार्ग से जा ।

९. तव पित्रा धनं दत्तम्=तेरे पिता ने धन दिया ।

१०. मया शास्त्रं न पठितम्=मैंने शास्त्र नहीं पढ़ा ।

सरल वाक्य

१ माता पुत्राय भोजनं ददाति । २ पुत्रः पित्रे पत्रं लिखति । ३ तेन धनं न आनीतं । ४ किं स अद्यापि तत्रैव अस्ति । ५ किं करोति स तत्र । ६ अहं तस्मै बालकाय किम् अपि दातुं न इच्छामि, यतः स स्वकीयं पुस्तकं न पठति, इतस्ततः भ्रमति च । ७ स क्षुधया दुःखितं मनुष्यं दृष्ट्वा तस्मै एव अन्नं ददाति । ८ देवदत्त, किं त्वं जले तरणं जानासि । ९ यदि जानासि तर्हि अद्य मया सह आगच्छ नदीम् । तत्र गत्वा स्नानं करिष्यामि । १० इदानीं भोजनस्य समयः जातः, शीघ्रं जलं गृहीत्वा अत्र एव आगच्छ ।

पाठ २५

शब्द

मुखं=मुंह	नेत्रं=आंख
कर्णः=कान	दन्तः=दाँत
हस्त=हाथ	पादः=पांव

भिन्न=अलग आत्मा=आत्मा जीव
पक्वं=पका हुआ बीज=बीज

वाक्य

१ इह मनुष्यः दिने* दिने अन्नं भक्षयति=यहां मनुष्य प्रत्येक दिन अन्न खाता है।

२. नगरे जनः क्रीडां करोति=प्रत्येक शहर में मनुष्य खेलता है।

३. ग्रामे ग्रामे रुग्णं भवति=प्रत्येक गांव में रोग होता है।

४. गृहे गृहे बालः प्रसन्नः भवति=हर एक घर में बालक आनन्दित होता है।

५ शरीरे शरीरे आत्मा भिन्नः भवति=हर एक शरीर में अलग २ आत्मा है।

६. वृक्षे वृक्षे फलं पक्वम् अस्ति=हर एक वृक्ष पर फल पका है।

७. राष्ट्रे राष्ट्रे राजा भवति=हर एक राष्ट्र में राजा होता है।

८. सायं सायं जलं आगच्छति=प्रति सायंकाल जल आता है।

९. मार्गे मार्गे रथः धावति=हर एक मार्ग में रथ दौड़ता है।

१०. पुस्तके पुस्तके आलेख्यं भवति=हर एक पुस्तक में चित्र होता है।

११. फले फले बीजं भवति=हर एक फल में बीज होता है।

१२. कूपे कूपे जलं भवति=हर एक कूंवे में जल होता है।

१३. वने वने वृक्षः भवति=हर एक वन में वृक्ष होता है।

इकारान्तो नपुंसकलिंगो 'वारि' शब्दः

१ प्रथमा वारि जल

---

* संस्कृत में शब्दों का दुबारा उच्चारण करने से "प्रत्येक, हर एक" ऐसा अर्थ स्वयं उत्पन्न होता है।

२ द्वितीय	,,	जल को
३ तृतीया	वारिणा	जल ने
४ चतुर्थी	वारिणे	जल के लिये
५ पञ्चमी	वारिणः	जल से
६ षष्ठी	,,	जल का
७ सप्तमी	वारिणि	जल में
सम्बोधन	(हे) वारि	(हे) जल

इस प्रकार इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप होते हैं।

वाक्य

१. मनुष्यस्य देहे प्रथम घ्राणम् इन्द्रिय, येन गन्धः गृह्यते=मनुष्य के शरीर में पहिला नाक इन्द्रिय जिससे गंध लिया जाता है।

२. द्वितीयं चक्षुः येन मनुष्यः सर्वं पश्यति=दूसरी आंख जिस से मनुष्य सब देखता है।

३. तृतीयं श्रोत्र येन शब्दः श्रूयते=तीसरा कान जिससे शब्द सुना जाता है।

४. चतुर्थम् इन्द्रियम् जिह्वा, यया अन्नस्य रसः गृह्यते=चौथी इन्द्रिय जबान, जिससे अन्न का रस लिया जाता है।

५. पञ्चमम् इन्द्रियम् त्वक्, यया मनुष्यः स्पर्शं जानाति=पांचवीं इन्द्रिय चमड़ी है जिससे मनुष्य स्पर्श जानता है।

६. एतत् इन्द्रिय पञ्चकम् सर्वस्य ज्ञानस्य मूलम्=यह इन्द्रिय पचक (पांच इन्द्रियाँ) सब ज्ञान की जड़ हैं।

नासिका=नाक	हृदयं=दिल, हृदय
उदरं=पेट	पृष्ठं=पीठ
अंगुली=अंगुली	शिखा=चोटी

वाक्य

१. पश्य नवीनचंद्रस्य मुखं कथं अतीव मलिनम् अस्ति=देख नवीनचन्द्र का मुह कैसा (बहुत) मलिन है।

२. स इदानीं मुखेन फलं भक्षयितु न शक्नोति=वह अब मुंह से फल खा नहीं सकता।

३. अहं कर्णेन तव अतीव मधुरं भाषणं शृणोमि=मैं कान से तेरा बहुत मीठा भाषण सुनता हूँ।

४. मार्गे तस्य हस्तात् पुस्तकं पतितं=मार्ग में उसके हाथ से पुस्तक गिर पड़ा।

५. मार्गे पतितं तत् पुस्तकं श्रीधरेण गृहीतं=मार्ग में गिरे हुई पुस्तक को श्रीधर ने लिया।

६ सः शूरपुरुषः इदानीं युद्धे पतित =वह शूर पुरुष अब जंग में गिर पड़ा (मर गया)।

७. तस्य मलिनहस्तात् कुडलिनीः न गृहाण=उसके मलिन हाथ से जलेबियाँ न ले।

शब्द

नेत्राभ्यां=दोनों आँखों से	कर्णाभ्यां=दोनों कानों से
हस्ताभ्यां=दोनों हाथों से	पद्भ्यां=दोनों पाँवों से
नासिकया=नाक से	दंतैः=दाँतों से
आरोहति=चढ़ता है	विश्व=विश्व, सब
सुगध=खुशबू	वानरः=बन्दर

वृक्षः=दरख्त
वाणी=भाषण

शठः=ठग
विषं=ज़हर

वाक्य

१. अहं नेत्राभ्यां विश्वं पश्यामि=मैं (दोनों) आँखों से विश्व को देखता हूँ।
२. स कर्णाभ्यां श्रोतुं न शक्नोति=वह (दोनों) कानों से सुन नहीं सकता।
३. त्वं नासिकया सुगंधं गृह्णासि किम्=क्या तू नाक से सुगन्ध लेता है ?
४. मनुष्यः पादाभ्यां धावति=मनुष्य (दोनों) पाँवों से दौड़ता है।
५. जनः दन्तैः फलं अत्ति=मनुष्य दाँतों से फल खाता है।
६. वानरः हस्ताभ्यां पादाभ्यां च वृक्षं आरोहति=बन्दर (दोनों) हाथों तथा (दोनों) पाँवों से वृक्ष के ऊपर चढ़ता है।
७. वानरः रात्रौ वृक्षस्य उपरि स्वपिति=बन्दर रात्रि में वृक्ष के ऊपर सोता है।
८. शठस्य मुखे मधुरा वाणी तथा हृदये विषं भवति=ठग के मुँह में मीठा भाषण तथा हृदय में विष होता है।
९. पश्य ! वानरस्य मुखं कथं कृष्णम् अस्ति=देख बन्दर का मुँह कैसा काला है।

शब्द

इह=यहां, इस लोक में
संसारः=संसार, दुनियां
राष्ट्र=राष्ट्र, कौम

अमुत्र=परलोक
जगति=जगत में
प्रसन्न=आनन्दित

७. हे बालकः ! त्वम् किम् करोषि=हे बालक तू क्या करता है ?

८. त्वम् कदापि असत्यं मा वद। असत्य भाषणम् पापम् वर्तते=तू कभी असत्य न बोल। असत्य बोलना पाप है।

९. यः असत्यम् वदति कः अपि तस्य विश्वासम् न करोति=जो असत्य बोलता है। कोई भी उसका विश्वास नहीं करता।

१०. यदि कः अपि बालकः असत्यम् वदति तर्हि गुरुः तम् ताडयति=अगर कोई भी बालक झूठ बोलता है तो गुरु उसको मारता है।

११. यः सत्यम् वदति तस्य सर्वजनः विश्वासं करोति=जो सच बोलता है उसका सब मनुष्य विश्वास करते हैं।

१२. त्वं सदा सत्यं वद सत्य-भाषणं पुण्यं वर्तते=तू सदा सच बोल, सत्य बोलना पुण्य है।

१३. यदा बालकः सत्यं वदति तदा गुरुः तम् नैव ताडयति=जब बालक सत्य बोलता है तब गुरु उसको नहीं मारता।

१४. अतः कदापि असत्यं न वक्तव्यं। परन्तु सदैव सत्यं वक्तव्यम्=इसलिये कभी भी असत्य न बोलना परन्तु हमेशा सच ही बोलना।

१५. इदम् अहं अनृतात् सत्यम् उपैमि=यह मैं झूठ से (को छोड़ कर) सत्य को प्राप्त होता हूँ।

पाठ ३६

पूर्व पाठों में पुलिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग शब्दों के रूप सात विभक्तियों में कैसे होते हैं, यह दे चुके हैं, कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में नहीं है, जब कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग बनता है तब उसके अकार का प्रायः "आ" बनता है, जैसे :—

पुलिंग	उत्तमः पुरुषः	उत्तम पुरुष
स्त्रीलिंग	उत्तमा स्त्री	उत्तमा स्त्री

इसमें "उत्तम" शब्द जो पहिले वाक्य में पुलिंग शब्द था वह दूसरे वाक्य में स्त्रीलिंगी बना तब उसका "उत्तम" ऐसा रूप बदलते रहते हैं देखिये :—

(१) पुल्लिंगी

१. श्वेत रथ=सफेद रथ (गाड़ी)।

२ मधुर' आम्र'=मीठा आम।

३. शोभन' समय'=अच्छा समय।

(२) स्त्रीलिंग

१ श्वेता पुष्पमाला=सफेद फूलों की माला।

२ मधुरा कुण्डलिनी=मीठी जलेबी।

३ शोभना वेला=अच्छा समय।

(३) नपुंसकलिंगी

१ श्वेत पुष्पम्=सफेद फूल।

२ मधुर दुग्धम्=मीठा दूध।

३. शोभन दृश्यम्=सुन्दर दृश्य (नजारा)।

इस प्रकार तीनों लिंगों में रूप बदलते रहते हैं। विशेषण जिसका गुण बताता है उस गुणी का जो लिंग होगा वही उसके

विशेषण का भी होगा। इसी नियमानुकूल उक्त विशेषणों के लिंग गुणी के लिंगों के अनुसार बदलते हुए हैं, इसका विचार स्पष्ट होने के लिये पाठकों को दुबारा देखना चाहिये, कि ऊपर दिये हुए तीनों लिंगों के विशेषण, एक ही होते हुए, गुणी के लिंग भिन्न होने के कारण कैसे भिन्न हो गये हैं। अब इस पाठ में कुछ विशेषण देते हैं —

विशेषण के शब्द

उत्तम=उत्तम	श्रेष्ठ=श्रेष्ठ
वर=श्रेष्ठ	पीत=पीला
रक्त=लाल	नील=नीला
अंध=अंधा	बधिर=बहिरा
मध्यम=बीच वाला	कनिष्ठ=कनिष्ठ छोटा
चतुर=चतुर, समझदार	उद्यमशील मेहनती परिश्रम
श्वेत=सफेद	हरित=हरा
ताम्र=लाल	अरुण=नारंगी
कृष्ण=काला	अलस=आलसी
रुग्ण=रोगी	नीरोग=स्वास्थ्य
वामन=ठिगणा	उच्च=ऊँचा

इन सब शब्दों के लिङ्ग गुणी के लिङ्गों के अनुसार बदलते रहेंगे, यह आप निम्न वाक्यों में देख सकते हैं, यदि यह बात पाठकों के ध्यान में आ गई, तो आगे का व्याकरण का विषय इन के लिये बहुत ही सुगम हो जायगा :—

वाक्य

१. उत्तम पुरुष शोभने प्रातःकाल उपये अतिप्रति=उत्तम

मनुष्य अच्छे सवेरे के समय में उठता है।

२. शुद्धेन जलेन स्नात्वा सन्ध्योपासनं करोति=शुद्ध जल से स्नान करके सन्ध्योपासन करता है।

३. यः एवं सदा करोति स एवं उत्तमः मनुष्य भवति=जो इस प्रकार हमेशा करता है वही उत्तम मनुष्य होता है।

४. या एवं सदा करोति सा अपि उत्तमा स्त्री भवति=जो इस प्रकार हमेशा करती है वह भी उत्तम स्त्री होती है

५. अतः प्रातः स्नानं संध्योपासनं च श्रेष्ठं कर्म अस्ति इति अहं वदामि=इसलिये प्रातः स्नान और सन्ध्योपासन श्रेष्ठ कार्य है ऐसा मैं कहता हूँ।

६. स अंधः पुरुषः रक्तं वस्त्रं आनयति=वह अंधा मनुष्य लाल कपड़ा लाता है।

७. सा अंधा स्त्री श्वेतां पुष्पमालां आनयति=वह अंधी स्त्री सफेद फूलों की माला लाती है।

८. स वृद्धः पुरुषः श्वेते रथे उपविश्य अत्र आगच्छति=वह बुड्ढा मनुष्य सफेद गाड़ी में बैठ कर यहां आता है।

९. सा वृद्धा स्त्री रक्तं वस्त्रं हस्ते गृहीत्वा धावति=वह वृद्ध स्त्री लाल कपड़ा हाथ में लेकर दौड़ती है।

१०. स उद्यमशीलः बालः सदा उत्तमं पुस्तकं पठति=वह उद्यमी बालक हमेशा उत्तम पुस्तक पढ़ता है।

११. उद्यमशीला बालिका सदा उत्तमां पुष्पमालां करोति=उद्यमी लड़की हमेशा उत्तम पुष्पमाला करती है।

१२. स रुग्णः बालः मधुरं अपि दुग्धं न पिबति=वह रोगी बालक मीठा दूध भी नहीं पीता।

१२ सा रुग्णा बालिका मधुरम् अपि दुग्धं न पिबति=वह रोगी लड़की मीठा दूध भी नहीं पीती।

विशेषण के शब्द

अखिल=सब संपूर्ण — अधिक=और बहुत
अध्येतव्य=पढ़ने योग्य — अनुत्तम=सब से उत्तम
अभिवाद्य=नमस्कार के योग्य — अधीत=पढ़ा हुआ
अनर्घ=बहु मोल — अन्तिक=पास
अन्त्य=आखीर का — अवाच्य=बोलने के अयोग्य
अर्पित=अर्पण किया हुआ — संतुष्ट=खुश
असंतुष्ट=न खुश — कठिन=मुशकिल
कथनीय=कहने योग्य — तुल्य=समान
द्रष्टव्य=देखने योग्य — निकट=समीप
निखिल=सब — परिष्कृत=संस्कार किया हुआ
पूर्व=पहिला — पेय=पीने योग्य
भक्ष्य=खाने योग्य — दुःखित=पीड़ित
अविप्लुत=सदाचारी — अशिक्षित=अज्ञानी
ईदृश=ऐसा — आहृत=लिया हुआ
चिन्तित=सोचा हुआ — दातव्य=देने योग्य
नष्ट=नाश को प्राप्त — पथ्य=हितकारक
पर=उत्तम, श्रेष्ठ, दूसरा — पालनीय=पालने योग्य
भीत=डरा हुआ — पूजनीय=सत्कार के योग्य
बुभुक्षित=भूखा — भयाकुल=डरा हुआ है
मुखोद्गत=मुख से निकला हुआ

१. अखिल संसारः ईश्वरेण कृतः।
२. अखिलया सेनया युद्धं कृतम्।
३. अखिलं पुस्तकं मया पठितम्।

१. संतुष्टः राजा द्रव्यं ददाति।
२. संतुष्टा बालिका इदानीं हसति।
३. संतुष्टं मित्रं किं करोति ?

१. पूजनीयः गुरुः आगतः।
२. पूजनीया माता आगता।
३. पूजनीयं ज्ञानं देहि।

पाठ ३७

नाम=नाम वाला	कश्चिद्=कोई एक
प्रज्वाल्य=जला कर	स्वकीय=अपना
सत्वरं=जल्दी	वर्ण=रंग
सौंदर्यं=खूबसूरती	नित्य=हमेशा
लघु=छोटा	आहारः=भोजन
नवीन=नवीन, नया	प्राचीन=पुराणा
आकारः=शकल	सुरूपता=खूबसूरत

वाक्य

१. गंगाधरः नाम कश्चिद् बालः अतीव उद्यमशीलः अस्ति=गंगाधर नामक कोई एक बालक बहुत ही उद्योगी है

२. स प्रातः एव उत्तिष्ठति दीपं प्रज्वाल्य, पुस्तकं गृहीत्वा स्वकीयं पाठं पठति=वह सवेरे ही उठता है, दीप जला कर, पुस्तक लेकर अपना पाठ पढ़ता है।

३. यदा स उत्तिष्ठति तदा सूर्यः अपि न उदयते=जब वह उठता है तब सूर्य भी नहीं उगता।

४. स स्वकीयस्य पाठस्य अध्ययनं कृत्वा स्नानं करोति, स्नात्वा च नित्यं कर्म करोति=वह अपने पाठ का अध्ययन करके स्नान करता है, और स्नान करके नित्य कर्म करता है।

५. पश्चाद् लघु आहारं भक्षयित्वा सत्वरं पाठशालां गच्छति=पीछे से थोड़ा आहार खाकर शीघ्र ही पाठशाला को जाता है।

६. तत्र नवीनं पाठं गृहीत्वा स्वकीयं गृहम् आगच्छति=वहां नया पाठ लेकर अपने घर आता है।

७ स कदापि मार्गे न क्रीडति=वह कभी मार्ग में नहीं खेलता है।

८ अतः सर्वदा स प्रसन्नः भवति=इस लिये हमेशा वह खुश रहता है।

पृच्छति=वह पूछता है	पृच्छसि=तू पूछता है
पृच्छामि=मैं पूछता हूं	सम्यक्=अच्छी प्रकार
प्रतिदिनं=हर एक दिन	पृष्टं=पूछा
पृष्ट्वा=पूछ कर	प्रश्न=प्रश्न, सवाल
उत्तरं=उत्तर, जवाब	वायुसेवनं=हवा खोरी

वाक्य

१. शृणु ! देवव्रतः तं किं पृच्छति=सुन ! हे देवव्रत उस को क्या पूछता है ?

२. स उच्चैः न वदति अतः अहं तस्य भाषणं श्रोतुं न शक्नोमि=वह ऊंचा नहीं बोलता, इसलिये मैं उसका भाषण सुन नहीं सकता।

३. सत्वरं तत्र गत्वा शृणु=शीघ्र वहाँ जाकर सुन।

४. मम इदानीं भ्रमणस्य समयः जातः अतः तत्र गन्तुं न शक्नोमि=मेरा अब घूमने का समय हो गया है इस लिये वहां जा नहीं सकता।

५. किं त्वं प्रतिदिनं सायं काले भ्रमणाय गच्छसि=क्या तू प्रतिदिन शाम को घूमने के लिये जाता है?

६. अहं दिने दिने सायं काले वा प्रातःकाले वा भ्रमणाय गच्छामि=मैं हर एक दिन शाम को अथवा सवेरे के समय भ्रमण के लिये जाता हूं।

७ सायंकालस्य भ्रमणात् प्रातःकाले भ्रमणं वरं अस्ति इति अहं जानामि=शाम के घूमने से सवेरे का घूमना अच्छा है ऐसा मैं जानता हूं।

क्रियाओं के तीन काल होते हैं एक वर्तमान काल, दूसरा भूत काल और तीसरा भविष्यत् काल इन तीनों कालों में वर्तमान तथा भविष्य पाठकों ने जान लिया है, जैसा:—

वर्तमान काल—गच्छामि=जाता हूं।

भविष्य काल—गमिष्यामि=जाऊंगा।

भूत काल का सुगम रूप "स्म" शब्द से बनता है, वर्तमान काल के रूप के आगे "स्म" रखने से उसी क्रिया का भूतकाल है, जैसे:—

वर्तमान काल	भूतकाल
गच्छति—जाता है	गच्छति स्म—जाता था
करोति—करता है	करोति स्म—करता था
उत्तिष्ठति—उठता है	उत्तिष्ठति स्म=उठता था

वाक्य

१. रामः उद्याने सदा गच्छति=राम बाग में हमेशा जाता है।
२. रामः उद्याने सदा गच्छति स्म=राम बाग में हमेशा जाता था।
३. अहं कृष्णेन सह भाषणं करोमि=मैं कृष्ण के साथ भाषण करता हूं।
४. त्वं तेन सह भाषणं करोषि=तू उसके साथ भाषण करता है।
५. स मित्रेण सह भाषणं करोति स्म=वह मित्र के साथ भाषण करता था।
६. स बालः मार्गे क्रीडति स्म=वह बालक मार्ग में खेलता था।
७. राजा युद्धं करोति स्म=राजा युद्ध करता था।
८. स कर्म करोति स्म=वह काम करता था।
९. स फलं भक्षयति स्म=वह फल भक्षण करता था।
१०. स प्रातः उत्तिष्ठति स्म=वह सवेरे उठता था।

पूर्व पाठ में जो विशेषण दिये हैं उनका तीनों लिंगों में उपयोग करके कुछ वाक्य यहां देते हैं। जिनको देख कर विशेषणों का उपयोग किस प्रकार किया जाता है इसका ज्ञान पाठकों को हो सकता है। इसलिये निवेदन है कि पाठक हर एक वाक्य में जो जो विशेषण आये हैं उनकी ओर। विशेष ध्यान से देखें और उपयोग का प्रकार जान लें।

वाक्य

१. अखिलस्य संसारस्य किं मूल्यम्?
२. अखिलायाः सृष्टेः किं मूल्यम्?
३. अखिलस्य जगतः किं मूल्यम्?

१. मया उत्तमाय ब्राह्मणाय मोदकः अर्पितः ।
२. मया उत्तमायै पंडितायै पुष्पमाला अर्पिता ।
३. मया उत्तमाय बालकाय पुस्तकं अर्पितम् ।

१. पश्य, तं दुःखितं बालकम् ।
२. पश्य तां दुखितां नारीम् ।
३. पश्य, तं दुखितं जनम् ।

१. तस्मै तृषिताय मनुष्याय पेयं जलं देहि ।
२. तस्यै तृषितायै पुत्रिकायै पेयां यवागूं देहि ।
३. तस्मै तृषिताय मित्राय पेयं दुग्धं देहि ।

१. मया अधीतं पुस्तकं त्वं नय ।
२. मया अधीतां कथां त्वं नय ।
३. मया अधीतं ग्रंथं त्वं नय ।

शब्द

संसारः=दुनियां (पुलिंग)	सृष्टिः=दुनिया (स्त्री०)
जगत्=दुनियां (नपुंसक०)	यवागु=खिचड़ी, चावलों का पानी
नारिका=स्त्री	पंडिता=विदुषी स्त्री
पंडितः=विद्वान् पुरुषः	शोभन=उत्तम
तृषित=प्यासा	कार्य=काम, योग
गौः=गाय	

सरल वाक्य

१ मया अभिवाद्यः गुरुः इदानीं अत्र आगच्छति । २ तेन शोभना कथा कथनीया । ३ एष बधिराय मनुष्याय शुष्कं पुष्पं न देहि । ४ अहं तस्यै बुभुक्षितायै नारिकायै उत्तमम् अन्नं पेयं च

पानीयं दातुम् इच्छामि। ५ यदा स पूजनीय य गुरवे अखिल धनं दास्यति तदा त्वम् एव वद। ६ पश्य मित्र, मया अद्य प्रातःकाले उत्तम गौः गंगाया तीरे दृष्टा। ७ यदा त्व कठिन कार्यं करिष्यसि तदा अहं तव सहायाय आगमिष्यामि।

निम्न वाक्यों का संस्कृत कीजिये :—

१ राम की सीता नाम पतिव्रता स्त्री थी। २ रामचन्द्र ने रावण का वध किया। ३ जैसा मार्ग में कल कीचड़ हुआ था वैसा आज नहीं हुआ। ४ कल बादल से पानी बहुत पड़ा था। इसलिए कीचड़ हुआ था। ५ कपड़ा धोने के लिये शुद्ध जल उत्तम होता है। यह जल अत्यन्त अशुद्ध है। इसमें कपड़ा कैसे धोऊँ।

पाठ ३८

शब्द

मालाकारः=माली।	लोहकारः=लोहार।
काष्ठकारः=बढ़ई।	वैद्य=वैद्य।
सुवर्णकारः=सुनार।	चर्मकार=चमार।
उपानत्=जूता।	रथकार=तर्खान।
वस्त्रकारः=दर्जी।	घटीकारः=घड़ी साज।
रजकः=धोबी।	चित्रकारः=चित्रकार।
मूर्तिकार=मूर्ति बनाने वाला।	

वाक्य

१. मालाकारः उद्याने कर्म करोति=माली बाग में काम करता है।

२. वैद्यः रुग्णाय जनाय औषध ददाति=वैद्य रोगी मनुष्य के लिए दवा देता है।

३. सुवर्णकारः सुवर्णस्य आभूषणं करोतिस्म=सुनार सोने का गहना बनाता था।

४. चर्मकारः उपानत् करोति=चमार जूता बनाता है।

५. चित्रकारः उत्तमं आलेख्यम् आलिखति=चित्रकार उत्तम चित्र खींचता है।

६. रजकः शुद्धेन जलेन वस्त्रं प्रक्षालयति=धोबी शुद्ध जल से कपड़ा धोता है।

७. घटीकारः घटीयंत्रम् करोति=घड़ीसाज घड़ी बनाता है।

७. रथकारः रथं करोतिस्म=तरखान गाड़ी बनाता था।

शब्द

पुष्पाणि=(अनेक) फूल	वस्त्राणि=(अनेक) वस्त्र।
पात्राणि=(अनेक) पात्र।	रजतं=चाँदी।
ताम्रं=तांबा।	पित्तलं=पीतल।
भवन्ति=होते हैं।	लोहः=लोहा।
सुवर्णं=सोना।	वंगं=कलई।
रजताभ्रकं=एलोमीनियम।	मृण्मय=मिट्टी का।
बहूनि=बहुत।	साधुः=अच्छी प्रकार।

१. मालाकारः उद्यानं गत्वा बहूनि पुष्पाणि आनयति=माली बाग में जाकर बहुत फूल लाता है।

२. सुवर्णकारः रजतस्य बहूनि पात्राणि अतीव मनोहराणि करोति=सुनार चाँदी के बहुत बर्तन अत्यन्त सुन्दर बनाता है।

३. ताम्रस्य पात्रे जल अतीव सुशुद्धं भवति=तांबे के बर्तन में जल अत्यन्त पवित्र होता है।

४. पित्तलस्य पात्राणि पीतानि भवन्ति=पीतल के बर्तन पीले होते हैं।

५. ताम्रस्य पात्राणि रक्तानि भवन्ति=वैसे तांबे के बर्तन लाल होते हैं।

६. रजकः रक्तम् वस्त्रं साधु प्रक्षालयितुं न शक्नोति=धोबी लाल कपड़ा अच्छी प्रकार नहीं धो सकता ।

७. सुवर्णपात्रं अतीव शोभनं अस्ति=सोने का बर्तन बहुत अच्छा है ।

शब्द

तडागः=तालाब ।	कूपः=कूआं ।
समुद्रः=समुद्र ।	सागरः=समुद्र ।
समीप=पास ।	प्रपा=पानी कास्थान, पियाऊ ।
नदी=दर्या, नदी ।	स्नानगृहं=स्नान करने का स्थान ।
जलनलिका=पानी का नलका ।	

वाक्य

१. त्वं तडागस्य समीपं गच्छ तत्रैव स्नानं कुरु=तू तालाब के पास जा और वहां ही स्नान कर ।

२. तस्य तडागस्य जलमतीव मलिनमस्ति तेन स्नानं कर्तुम् नेच्छामि=उस तालाब का जल बहुत मलिन है । उस से स्नान करना नहीं चाहता ।

३. तर्हि अस्य कूपस्य जलेन स्नानं कुरु=तो इस कुवे के जल से स्नान कर ।

४. अस्य कूपस्य जलं बहु शीतम् अस्ति अतः अहं तेनापि स्नानं कर्तुं नेच्छामि=इस कूवे का जल बहुत ठंडा है इसलिये मैं उस से भी स्नान करना नहीं चाहता ।

---

(१) तत्र+एव । (२) जलं+अतीव । (३) मलिनं+अस्ति । (४) न+इच्छामि ।

५. यदि कूपस्य शुद्धेन जलेन अपि स्नान कर्तुं नेच्छसि तर्हि मम स्नानागारे गत्वा तत्रस्थितेन स्नान कुरु=अगर कुएँ के शुद्ध जल से भी स्नान करना नहीं चाहता तो मेरे स्नान घर में जाकर वहा के जल से स्नान कर।

६. शोभनं ! भो मित्र ! यथा त्वया उक्त तथा करोमि=उत्तम ! हे मित्र ! जैसा तूने कहा वैसा करता हू।

शब्द

धूर्त=शठ, ठग	पक्षिपालक=पक्षियों का पालन करने वाला।
वक्तु=बोलने के लिये	शिक्षित=सिखाया हुआ
नरपति=राजा	कस्मिश्चिद्=किसी एक में
प्रश्ने कृते=प्रश्न करने पर	अनयत्=(वह) ले गया
अनय=(तू) ले गया	अनयम्=(मैं) ले गया
प्रविश्य=प्रवेश करके	भाषण=बोलना
श्रुत्वा=सुनकर	स्वमदिरं=अपना महल
मूर्ख=मूढ	क्रीत=खरीदा हुआ
शुक=तोता	सदेह=सशय
नरेश=राजा	राज्ञा=राजा ने
राजन्=हे राजा	राजसभा=राजा का दरबार
वाच=वाणी को	लक्षरूप्यकाणि=लाख रुपये
ददौ=दिये	स्थापयित्वा=रखकर
कुपित=क्रोधित	बहुमूल्य=बहुत कीमत वाला
पृष्टवान्=पूछा	

शुकस्य कथा

केनचित् धूर्तेन पक्षिपालकेन एक शुक मनुष्य इव वक्तु शि-

षित; । कस्मिंश्चिद् अपि प्रश्ने कृते "अत्र कः संदेहः" इत्येव स शुकः वदति । एकदा स पक्षिपालकः तं शुकं नरेशस्य समीपम् अनयत् । तत्र राजसभां प्रविश्य पक्षिपालकेन उक्तम् । "हे राजन् ! अयं शुकः मनुष्य इव सर्वभाषायां वदति" । पक्षिपालकस्य एतद् वचनं श्रुत्वा राज्ञा शुकं प्रति प्रश्नः कृतः—'हे शुक ! किं त्वं सर्वदा मनुष्यस्य वाचं वदसि' ।

शुकेन उक्तम्—'अत्र कः संदेह' इति तेन उत्तरेण अतीव संतुष्टः स राजा तस्मै पक्षिपालकाय लक्षरूप्यकाणि ददौ । पश्चाद् स्व-मंदिरे शुकं नीत्वा तत्र च उत्तमे स्थाने तं स्थाप-यित्वा यदा प्रश्नः कृतः तदा सर्वस्य अपि प्रश्नस्य 'अत्र कः संदेहः' इति एव एकम् उत्तरं तेन शुकेन उक्तम् । तदा कुपितेन राज्ञा पुनः शुकं प्रति प्रश्नः कृतः ।

'रे शुक ! त्वम् अत्र कः संदेहः इति एव वक्तुं जानासि ?'

शुकेन उक्तम्-"अत्र कः संदेहः" इति । तदा स राजा तं शुकं पुनः पृष्टवान्—रे शुक ! तर्हि किम् अहं मूर्खः, यत् मया बहुमूल्येन त्वं क्रीतः' ।

शुकेन उक्तम्-'अत्र कः संदेहः' इति ।

विचार्य एव सर्वं कार्यं कर्तव्यम् । यथा राज्ञा अविचार्य एव महता मूल्येन शुकः क्रीतः । तथा केन अपि मूर्खत्वं न कर्तव्यम् ।

पाठ ३६

शब्द

ईश्वरः=ईश्वर	पालकः=पालन करने हारा
जनः=मनुष्य	वानरः=बन्दर
चौरः=चौर	द्वारपालः=दरवाजे का रक्षक, पहरे वाला ।

कर्दमः=कीचड़ · तंतुवायः=जुलाहा
सौतिकः=दर्जी गोधूमः=गेहूं, कनक
बिडालः=बिल्ली मंडूकः=मेंडक
वृषभः=बैल

इन शब्दों के सातों विभक्तियों के रूप पूर्वोक्त "देव" शब्द के समान ही होते।

वाक्य

१. द्वारपालकः द्वारि तिष्ठति गृहं च रक्षति=पहरे वाला दरवाजे में खड़ा रहता है, और घर की रक्षा करता है।
२. वानरः वृक्षे स्थित्वा फलं भक्षयति=बन्दर वृक्ष के ऊपर रहकर फल खाता है।
३. ईश्वरः पालकः अस्ति सर्वं च विश्वं सर्वदा रक्षति=परमेश्वर रक्षक है और सारे ससार की सदा रक्षा करता है।
४. ह्यः तेन द्वारपालेन चौरः अतीव ताडितः=कल उस पहरेदार ने चोर को बहुत पीटा।
५. मंडूकः जले अस्ति, तं पश्य=मेंडक पानी में है, उसे देख।
६. विडालः दुग्धं पिबति=बिल्ली दूध पीती है।
७. हे मित्र! तत्र कर्दमः अस्ति, अतः तत्र न गच्छ, नोचेत् पतिष्यसि=हे मित्र! वहां कीचड़ है, इस कारण वहां न जा नहीं तो गिरेगा।

शब्द

पतति=(वह) गिरता है पतसि=(तू) गिरता है
पतामि=गिरता हूं चलति=(वह) चलेगा
पतिष्यति=(वह) गिरेगा पतिष्यसि=(तू) गिरेगा

पतिष्यामि=गिरूंगा	चलसि=(तू) चलता है
चलामि=चलता हूं	चलिष्यति=(वह) चलेगा
चलिष्यसि=(तू) चलेगा	चलिष्यामि=चलूंगा

वाक्य

१. रामचन्द्रस्य पुत्रः अतीव धावति, अतः पतति च=रामचन्द्र का लड़का बहुत दौड़ता है, इसलिये गिरता है।

२. यदि त्वम् एवं करिष्यसि तर्हि पतिष्यसि एव = अगर तू ऐसा करेगा तो गिरेगा ही।

३. त्वं श्वः प्रातः काले भ्रमणाय चलिष्यसि किं=क्या तू सवेरे घूमने के लिये चलेगा ?

४. इदानीमेव तस्य रथस्य श्वेतः अश्वः कर्दमे पतितः स न उत्थातुं शक्नोति=अभी उस रथ का सफेद घोड़ा कीचड़ में गिरा वह उठ नहीं सकता।

५ अहम् इदानीं तस्य छत्रं नयामि, त्वं तं कथय=मैं अब उसका छाता ले जाता हूं तू उसे कह।

६. तस्य गृहे अश्वः अस्ति तथा विडालः अपि अस्ति=उस के घर घोड़ा है तथा बिल्ली भी है।

७. तस्य वस्त्रं मया प्रक्षालितं=उसका वस्त्र मैंने धोया।

शब्द

पेटकः=संदूक, बेग, ट्रंक	पानीयं=पानी
प्रदीपः=दीवा	घृतं=घी
तक्रं=लस्सी (दही की), मठा	भूतं=हो गया
पचति=(वह) पकाता है	पचसि=(तू) पकाता है
पचामि=पकाता हूं	पचिष्यति=पकायेगा

पचिष्यसि=पकायेगा पचिष्यामि=पकाऊँगा

वाक्य

१. वासुदेवः तस्य गृहे अन्नं पचति=वासुदेव उसके घर में अन्न पकाता है।

२. तस्य पेटकः कुत्र अस्ति यस्मिन् तेन स्वकीयं द्रव्यं रक्षितम् अस्ति=उसका सदूक कहां है ? जिसमें उसने अपना धन रक्खा है।

३. यदा स पुरुषः स्वगृहं गतः तदा तेन स्वकीयः पेटकः कुत्र स्थापितः इति अहं न जानामि=जब वह मनुष्य अपने घर गया तब उसने अपना ट्रंक कहां रखा है यह मैं नहीं जानता।

४. भूमित्रः जानाति किं=क्या भूमित्र जानता है।

५. हे भूमित्र ! किं त्वं जानासि=हे भूमित्र ! क्या तू जानता है।

६ अहमपि नैव जानामि परन्तु सूर्यसिंहः जानाति=मैं भी नहीं जानता परन्तु सूरजसिंह जानता है।

७ तर्हि तं पृच्छ=तो उसे पूछो।

८. स वदति तस्य पेटकः अपि तेन एव स्वगृहं नीतः इति=वह कहता है कि अपना ट्रंक भी वह अपने घर ले गया।

९. ईश्वरस्य पूजन अवश्यं कर्तव्यम्=ईश्वर का पूजन अवश्य करना चाहिये

१०. अध्यापकस्य समीपं सत्वरं गच्छ=गुरु के समीप जल्दी जा।

नपुंसकलिंगी सर्वनामों के रूप

(१) सर्व

	एकवचन	
प्रथमा	सर्वम्	सब
द्वितीया	,,	सब को

(१) किम्

प्रथमा	किम्	कौन
द्वितीया	,,	किस को

(३) यत्

प्रथमा	यत्	जो।
द्वितीया	,,	जिसको

(४) तत्

प्रथमा	तत्	वह
द्वितीया	,,	उसको

इनके शेष विभक्तियों के रूप सर्वनामों के पुलिंग रूपों के समान ही होते हैं। देखिये पाठ १७ में 'सर्व' शब्द पाठ १८ में 'किं' शब्द, पाठ २२ में 'यद्' शब्द तथा २२ में 'तद्' शब्द। पाठकों को उचित है कि वे इनके रूप बनाकर लिख छोड़े, ताकि इनको कभी भूल न सकें।

पाठ ४०

शब्द

कथयति=(वह) कहता है
कथयसि=(तू) कहता है
कथयामि=कहता हूँ
वहति=(बोझ) उठाता है

वहसि=बोझ (तू) उठाता है वहामि ,, उठाता हूँ
शकट=गड्डी बलीवर्दः=बैल
महिषः=भैंसा कथयिष्यति=(वह) कहेगा
कथयिष्यसि=(तू) कहेगा कथयिष्यामि=कहूँगा
वहिष्यति=(बोझ) उठायेगा वहिष्यसि=(बोझ) तू उठायेगा
वहिष्यामि= ,, उठाऊंगा भृत्यः=नौकर
छत्रं=छाता विष्टर=कुर्सी, स्टूल

वाक्य

१. स पंडितः रात्रौ रामस्य कथां कथयिष्यति, त्वमपि श्रोतुम् आगच्छ=वह पण्डित रात को राम की कथा करेगा तू भी सुनने के लिये आ।

२. बलीवर्दः शकटं वहति, ग्रामात् ग्रामं चलति च=बैल गाड़ी खेंचता है, और एक गाँव से दूसरे गांव को जाता है।

३. रजकस्य महिषः अद्य अत्र न अस्ति यत्र कुत्र अपि गतः= धोबी का भैंसा आज यहां नहीं है, कहीं इधर उधर चला गया है।

४. मम भृत्यः इदानीमेव आपणं गतः स अद्य सायं आगमिष्यति= मेरा नौकर अभी बाजार गया है वह आज शाम को आवेगा।

५. कथय ! ह्यः तेन किं किं कृतं, कथं च दिनः गतः इति=कह ! कल उसने क्या क्या किया और कैसा दिन गया।

वाक्य

ज्वलसि=(तू) जलता है ज्वलामि=जलता हूं
जल्पति=(वह) बोलता है जल्पसि=(तू) बोलता है

जल्पामि=बोलता हूं
वह्निपेटिका=दियासलाई की डिब्बी
उज्ज्वलिष्यसि=(तू) जलेगा
जल्पिष्यति=बोलेगा
जल्पिष्यामि=बोलूँगा
अंधकारः=अंधेरा
योग्य=लायक
वह्निशलाका=दियासलाई
उज्ज्वलिष्यति=जलेगा
उज्ज्वलिष्यामि=जलूँगा
जल्पिष्यसि=(तू) बोलेगा
गाढ=घना
प्रज्वालय=जला

वाक्य

१. तत्र अग्निः उज्ज्वलित अतः तत्र त्वं न गच्छ=वहाँ आग जलती है इसलिए वहां तू न जा।

२. स एवं वृथा जल्पति तत्तु श्रोतुं योग्यम् अस्ति=वह इस प्रकार व्यर्थ बोलता है वह सुनने योग्य नहीं।

३. इदानीं रात्रिः आगता गाढ अंधकारः भविष्यति अतः प्रदीपं आनेष्यामि=अब रात्रि आ गई, घना अंधेरा हो जायगा, इसलिये दिया लाऊँगा।

४. तेन वह्निपेटिका कुत्र रक्षिता इति न जानामि सा कुत्र भविष्यति=उसने दियासलाई की डब्बी कहां रखी यह मुझे पता नहीं वह कहां होगी ?

५ तत्र मंचके वह्निशलाका अस्ति तां गृहीत्वा दीपं प्रज्वालय शीघ्रं च अत्र आनय=वहां टेबल पर दियासलाई है उसे लेकर दिया जला, और जल्दी यहाँ ले आ।

शब्द

निर्मितः=बनाया
चोरयसि=(तू) चुराता है
चोरयति=(वह) चुराता है
चोरयामि=चुराता हूँ

चोरयिष्यति=चुरायेगा | चोरयिष्यसि= (तू) चुरायेगा
चोरयिष्यामि=चुराऊँगा | अपहृत=चुराया
यष्टिः=सोटी | यष्टिका=सोटी
चपेटिका=चपत | कटः=चटाई
खट्वा=चारपाई | पुच्छं=पूंछ, दुम
शिक्यं=छिका | व्रश्चनः=चाकू

वाक्य

१. त्वं तं कटं कुत्र नयसि=तू उस चटाई को कहाँ ले जाता है
२. अहं तं ममगृहं नयामि=मैं उसे अपने घर ले जाता हूँ।
३. तव यष्टिका कुत्र अस्ति=तेरी सोटी कहां है ?
४. मम यष्टिः चोरेण ह्यः अपहृता=मेरी सोटी चोर ने कल चुराई।
५. तस्य खट्वा कुत्र अस्ति=उसकी चारपाई कहाँ है ?
६. तस्य अश्वस्य पुच्छं पश्य=उस घोड़े की पूंछ देख।
७. तस्मिन् शिक्ये तेन पात्रं रक्षितं=उस छिक्के में उसने बर्तन रखा।
८. तस्मिन् पात्रे मया दुग्धं रक्षितं=उस बर्तन में मैंने दूध रखा।
९. तत् दुग्धं बिडालेन अद्य पीतं, अतः तत्र दुग्धं नास्ति=वह दूध बिल्ली ने आज पिया, इसलिये वहाँ दूध नहीं।
१०. यः लोहस्य पेटकः तेन लोहकारेण निर्मितः स अतीव शोभनः अस्ति=जो लोहे का ट्रंक उस लोहार ने बनाया वह बहुत अच्छा है।

शब्द

भाद्रपदः=भादों | कृष्णः=कृष्णपक्ष
सप्तम्यां=सप्तमी के दिन | ऊर्णा=ऊन,

ऊर्णावस्त्रं=दुशाला, ऊनीवस्त्र
मनोरम=मन को आनन्द देने वाला
घर्मः = गरमी
नगरदर्शनाय=शहर दिखाने के लिये
द्वंद्व=युद्ध
काव्यं=काव्य
तैलं=तेल
शं=सुख
द्रष्टव्यं=देखने योग्य
क्रीणीतुं=खरीदने के लिये
इतिहासः=तवारीख, इतिहास
आसीत्=था
पराकाष्ठां=ऊँचे दर्जे तक
अश्वरथः=घोड़े की गाड़ी
पदातिना=पैदल
निन्दा=निंदा
कौमुदी=चाँद की रोशनी

प्राचीनतम=अत्यन्त पुराणा
प्राचीन=पुराणा
प्रसन्न=आनन्दित
गुणसंपन्नः=गुणी
निश्चयः=निश्चय
अलमतिविस्तरेण=बहुत विस्तारवस हुआ
छिद्र=सूराख
प्रेषित=भेजा हुआ
अनुसृत्य=अनुसरण करके
शर्मणः=शर्मा का
अतीव=बहुत
नाम्ना=नाम से
चिह्न=निशान
धनाढ्यः= पैसे वाला
तैल-वाष्पं=तेल की भाप
प्रशंसा=स्तुति
निद्रा=नींद

पत्र लेखनम्

ओ

देहली नगरे।
विक्रमीये १९९७ संवत्सरे
भाद्रपदस्य कृष्ण-सप्तम्याम्

भो प्रिय मित्र यज्ञदत्त !

नमस्ते ! पत्र भवताम् अनुसृत्य अहम् अत्र अद्य प्रातः प

आगतः । अस्मिन् नगरे यत् किंचिद् अपि द्रष्टव्यम् अस्ति तद् दृष्ट्वा श्वः वा परश्वः वा अस्मात् स्थानात् अमृतसर—नगरं गमिष्यामि । यदा अहं अमृतसरं गमिष्यामि तदा तव मित्रस्य चंद्रकेतु शर्मणः कृते एकं ऊर्णावस्त्रं क्रेतु इच्छामि ।

भोः प्रियवयस्य ! एतत् देहलीनगरं अतीव सुन्दरम् अस्ति । अस्य प्राचीनतमः इतिहासः च अतीव मनोरमः । अद्य एव इन्द्रप्रस्थं तथा 'कुतुबमीनार' इति नाम्ना प्रसिद्धं स्थानं अपि मया दृष्टम् । पांडवानां समये एतद् एव देहली नगरं 'हस्तिनापुर' इति नाम्ना प्रसिद्धं आसीत् । इदानीं तु हस्तिनापुरस्य प्राचीनं किमपि चिह्नं न दृश्यते ।

ईदृशस्य प्राचीनतमस्य स्थानस्य दर्शनेन मम मनः प्रसन्नं भवति । पांडवकालस्य स्मरणम् अपि आनंदस्य पराकाष्ठां पुरुषं नयति ।

अत्र तु अस्मिन् मासे शीतं न भवति । सूर्यस्य आतपेन घर्मः एव भवति । शीतकाले बहुशीतं तथा उष्णकाले अतीव घर्मः भवति ।

अत्र अहं महाशयस्य कुंदनलालस्य गृहे स्थितः । महाशयः कुंदनलालः अतीव धनाढ्यः पुरुषः अस्मिन् नगरे अस्ति । तस्य पुत्रः चंदनलाल इति नामकः गुणसंपन्नः अस्ति । एष चंदनलालः मया सह नगर-दर्शनाय भ्रमति ।

अहं न अश्वरथेन भ्रमामि नापि "मोटर" इति नाम्ना प्रसिद्धेन तैलवाष्प-रथेन भ्रमामि । परंतु यद् द्रष्टव्यम् अस्ति तत् सर्वं पदातिना एव द्रष्टव्यं इति मया निश्चयः कृतः ।

इदानीम् अलम् अतिविस्तारेण । मम अन्यत् पत्रं अमृतसरात् प्रेषितं भविष्यति । इति शम् ।   भवदीयः वयस्यः

आनंदसागरः

पाठ ४१

(पुंल्लिंगी)	(नपुंसकलिंगी)
अर्भकः=बालक	कुसुमं=फूल
ग्रामः=गाँव	गरलं=ज़हर
चरणः=पाँव	जलं=पानी
नृपः=राजा	द्वारं=दरवाज़ा
प्रसादः=कृपा, मेहरबानी	पर्णं=पत्ता
मार्गः=रास्ता	पत्रं=पत्ता, पत्र
मूषकः=चूहा	भूषणं=जेवर
रक्षकः=पहरे वाला	मित्रं=दोस्त
वत्सः=बछड़ा, बालक	शरीरं=शरीर
निवासः=रहना	वनं=जंगल
समुद्रः=समुद्र	पुरं=शहर

ऊपर पुंल्लिंगी तथा नपुंसकलिंगी शब्द दिये हैं जिनके आगे विसर्ग रखा हुआ है। वे शब्द पुंल्लिंगी समझने चाहियें जैसे—"मार्गः, मूषकः" इत्यादि तथा जिनके अन्त में अनुस्वार हो शब्द नपुंसकलिंगी समझने चाहियें जैसे—"पुरं, वनं" इत्या आगे के पाठों में हम इसी प्रकार शब्द रखेंगे कि जिससे पाठक को शब्दों के लिंग का पता लग जायगा।

जिन शब्दों के अन्त में "आ" होता है, वे शब्द प्रायः स्त्री लिंगी होते हैं देखिये :—

गङ्गा=गङ्गा नदी	यमुना=यमुना
माला=माला	कला=हुनर
देवता=देवी, देवता	रेखा=लकीर

कन्या=लड़की	क्षमा=शान्ति, पृथ्वी
तारका=तारा	प्रिया=प्यारी धर्मपत्नी

वाक्य

१. मनुष्यः ईश्वरस्य प्रसादेन सर्वं सुखं प्राप्नोति=मनुष्य ईश्वर की कृपा से सब सुख प्राप्त करता है।

२. एषः मित्रस्य गृहस्य मार्गः अस्ति=यह दोस्त के घर का मार्ग है।

३. देवदत्तः नृपस्य प्रसादेन अतीव धनं प्राप्नोति=देवदत्त राजा की कृपा से बहुत द्रव्य प्राप्त करता है।

४. तव मित्रस्य निवासः कुत्र अस्ति=तेरे मित्र का निवास कहां है!

५. अद्यश्वः मम मित्रस्य निवासः अमृतसरनगरे अस्ति=आज कल मेरे मित्र का निवास अमृतसर शहर में है।

६. त्वं तं द्रष्टुं इच्छसि किम् ?=क्या तू उसको देखना चाहता है?

७. अथ किम्! अहं तं शीघ्रं द्रष्टुम् इच्छामि=और क्या? मैं उसको जलदी देखना चाहता हूँ।

८. किमर्थं तं त्वम् एवं द्रष्टुं इच्छसि ?=किस लिये उसे तू इस प्रकार देखना चाहता है?

९. अतीव कालः जातः यदा मया स दृष्टः अतः अहं तं द्रष्टुम् इच्छामि=बहुत समय हुआ जब मैंने उसको देखा था इस लिये मैं उसे देखना चाहता हूँ।

१०. तर्हि अद्य मध्याह्ने गच्छ=तो आज दोपहर को जा।

११. यदि अहं इतः मध्याह्ने चलिष्यामि, तर्हि अमृतसरनगरं कदा कदा गमिष्यामि=अगर मैं यहां से दोपहर चलूंगा तो अमृतसर शहर कब पहुँचूंगा?

१२. यदि त्वं मध्याह्ने त्रिवादन-समये अग्निरथेन चलिष्यसि, तर्हि पंचवादन समये अमृतसरं गमिष्यसि=अगर तू

दोपहर तीन बजे के समय रेलगाड़ी से चलेगा तो पाँच बजे के समय अमृतसर पहुँचेगा।

१३. तर्हि तदा एव अहं गमिष्यामि=तो तभी मैं जाऊँगा।

१४. यदा त्वं तत्र गमिष्यसि तदा मम पुस्तकम् अपि तत्र नय, मा विस्मर=जब तू वहाँ जायगा तब मेरा पुस्तक भी वहां ले जा, मत भूल।

१५. गङ्गाजलं अतीव निर्मलं अस्ति, अतः तद् एव पातुं इच्छामि=गङ्गाजल बहुत स्वच्छ है, इस लिये वही पीना चाहता हूँ।

१६. रक्षकः द्वारात् बहिः तिष्ठति=पहरे वाला दरवाजे के बाहर खड़ा है।

१७. पुरात् बहिः वनम् अस्ति=शहर से बाहर जंगल है।

१८. तस्य पुत्रः पाठशालायां पठति=उसका लड़का पाठशाला में पढ़ता है।

१९. समुद्रे अतीव जलं भवति=समुद्र में जल बहुत होता है।

२०. त्वं गरलं मा पिब=तू जहर न पी।

शब्द

वानरः=बंदर	धनिकः=पैसे वाला
लेखनं=लिखना	वाचनं=वाचन, पढ़ना
अन्य=दूसरा	विचार्य=विचार करके
धृत्वा=पकड़ कर	पालित=पाला हुआ
उपविश्य=बैठ कर	साहित्य=सामान
निक्षिप्य=रख कर	बहिः=बाहर
आसन=बैठने का स्थान	पङ्क=पङ्क
यावत्=जब तक	तावत्=तब तक

उक्तवान्=बोला	स्वकीय=अपना
प्रारम्भ =आरम्भ	विलोक्य=देख कर
विहस्य=हस कर	यथापूर्वं=पहिले समान

वानरस्य-कथा

एकस्मिन् नगरे केनचिद् धनिकेन एक' वानरः पालितः। स धनिक नित्य वानरस्य समीप एव उपविश्य लेखन वाचनं च करोति स्म। एकदा स धनिकः लेखनस्य साहित्य तत्र एव निक्षिप्य अन्य कार्यं कर्तुं बहि' गत। 'अहम् अपि धनिकवत् लिखामि' इति विचार्य वानरः धनिकस्य आसने उपविश्य एकेन हस्तेन पत्र गृहीत्वा द्वितीयेन लेखनीं धृत्वा यावत् लेखनस्य प्रारभ कृतवान्, तावद्, धनिक. अपि तत्र आगतः। त वानरं विलोक्य विहस्य उक्तवान्! 'भो वानर श्रेष्ठ! इद किं करोषि? कस्मै पत्र लिखसि'। इति। वानरः अपि शीघ्रं स्वकीयं स्थानं गत्वा यथापूर्वं उपविष्टः।

पाठ ४२

पिष्टं=आटा	कुसुम=फूल
एकदा=एक समय	इतः=यहा, से
तत् =वहा से	कुत =कहा से
सर्वत =सब ओर	अक्ष.=जूवा
अक्षै =जूवे से	कम=लोक
अनृत=असत्य	ऋतं=सत्य
अमृत=अमृत	अबर=आकाश
अम्बुज=कमल	अरण्य=जंगल
अनुराग =उपटना	हृदय=दिल

कंपनं=कंपना	अन्यायः=अन्याय
अपराधः=गुनाह	अभिप्रायः=मतलब
अलंकारः=जेवर	सैनिकः=फौजी आदमी
भारवाहकः=कुली, मजदूर	अशुभं=पाप
अक्षरं=अक्षर, हरफ	अंगं=अंग, शरीर
अंजनं=सुरमा	अध्ययनं=पढ़ाई
अङ्गुलं=अंगुल	स्नानगृहं=स्नान का स्थान
कारागृहं=जेलखाना	चांचल्यं=चंचलता

क्रिया

परिदधाति=वह पहनता है	परिदधासि=तू पहनता है
परिदधामि=पहनता हूँ	परिधास्यति=वह पहनेगा
परिधास्यसि=(तू) पहनेगा	परिधास्यामि=पहनूँगा
यामि=जाता हूँ	यासि=(तू) जाता है
याति=(वह) जाता है	यास्यामि=जाऊँगा
यास्यसि=(तू) जायगा	यास्यति=(वह) जायगा

वाक्य

१. एकदा अहं वनं गतः=एक समय मैं वन को गया।

२. तत्र मया एकः वृक्षः दृष्टः=वहाँ मैंने एक वृक्ष देखा।

३. तस्य फलं अतीव मधुरम् आसीत्=उसका फल बहुत मीठा था।

४. तत् फलं मया भक्षितं=वह फल मैंने खाया।

५. तस्य कन्या अलंकारं परिदधाति=उसकी लड़की जेवर पहनती है।

६. अलंकाराः सुवर्णस्य रजतस्य च भवन्ति=जेवर सोने का तथा चांदी का होता है।

७. तस्य कः अपराधः आसीत्=उसका क्या कसूर था।

८. यतः स कारागृहे स्थापितः जिस कारण वह जेलखाने में रखा गया।

९. अक्षैः मा क्रीड=जूए से न खेल।

१०. वृथा मा अट=व्यर्थ न घूम।

११. सदा अध्ययनं कुरु=हमेशा पढ़।

१२. कदापि अन्यायं न कुरु=कभी अन्याय न कर।

१३. तस्य कः अभिप्रायः अस्ति=उसका क्या मतलब है।

१४ अद्य अनेन मार्गेण यास्यामि=आज इस मार्ग से जाऊँगा।

१५. तेन अद्भुतम् आलेख्यं निर्मितम्=उसने अद्भुत तस्वीर बनाई।

१६. भारवाहकः कुत्र अस्ति येन तव पेटकः नीतः=कुली कहाँ है जिसने तेरा ट्रंक उठाया।

शब्द

तडागः=तालाब	उपकण्ठे=समीप
समीपं=पास	प्रभूत=बहुत
तृणं=घास	खगः=पक्षी

वाक्य

१. एकदा कश्चित् बालकः तडागस्य समीपं गतः=एक समय कोई बालक तालाब के पास गया।

२. तेन बालकेन तत्र तडागे एकः मण्डूकः दृष्टः=उस बालक ने वहाँ तालाब में एक मेंढक देखा।

३. जल-पानार्थं तत्र एकः बलीवर्दः अपि आगतः=पानी पीने के लिये वहाँ एक बैल भी आया।

४. तेन वृषभेण प्रभूतं जलं पीतम्=उस बैल ने बहुत जल पिया।

५. तेन बालकेन तस्मै वृषभाय भक्षणार्थं तृणं दत्तं=उस बालक ने उस बैल को खाने के लिये घास दिया।

६. तत् तृणं तेन वृषभेण शीघ्रमेव भक्षितम्=वह घास उस बैल ने जल्दी से ही खाया।

७. पश्चात् तत्र एकः खगः आगतः=पीछे से वहाँ एक पक्षी आ गया।

८. तस्मै बालकेन एकः मोदकः दत्तः=उसके लिये बालक ने एक लड्डू दिया।

संख्यावाचक शब्द

पुँलिंगी		स्त्रीलिंगी	नपुंसकलिंगी
१. एकः	(एक)	एका	एकम्
२. द्वौ	(दो)	द्वे	द्वे
३ त्रयः	(तीन)	तिस्रः	त्रीणि

नीचे दिये हुए शब्दों के पुंलिंग स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में एक जैसे ही रूप होते हैं।—

४. पंच (पाँच)	१७. सप्तदश (सतरह)
६. षट् (छे)	१८. अष्ट दश (अठारह)
७. सप्त (सात)	१६. एकोनविंशतिः (उन्नीस)
८. अष्ट (आठ)	२०. विंशतिः (बीस)
६. नव (नौ)	२१. एकविंशतिः (एक्कीस)
१०. दश (दस)	२२. द्वाविंशतिः (बाईस)
११. एकादश (ग्यारह)	२६. एकोनत्रिंशत् (उनत्तीस)
१२. द्वादश (बारह)	३०. त्रिंशत् (तीस)
१३. त्रयोदश (तेरह)	३१. एकत्रिंशत् (एकत्तीस)
१४. चतुर्दश (चौदह)	४०. चत्वारिंशत् (चालीस)
१५. पंचदश (पंद्रह)	५०. पंचाशत् (पचास)
१६. षोडश (सोलह)	६०. षष्टिः (साठ)

बारह महीनों के नाम (पुलिंग)

१. चैत्रः	७. आश्विनः
२. वैशाखः	८. कार्तिकः
३. ज्येष्ठः	९. मार्गशीर्षः
४. आषाढ़ः	१०. पौष
५. श्रावणः	११. माघः
६. भाद्रपदः	१२. फाल्गुनः

तिथियों के नाम (स्त्रीलिंग)

१. प्रतिपदा	९. नवमी
२. द्वितीया	१०. दशमी
३. तृतीया	११. एकादशी
४. चतुर्थी	१२. द्वादशी
५. पंचमी	१३. त्रयोदशी
६. षष्ठी	१४. चतुर्दशी
७. सप्तमी	१५. पूर्णिमा
८. अष्टमी	३०. अमावस्या

पक्षों के नाम (पुल्लिंग)

शुक्लपक्षः—

जिन पन्द्रह दिनों में शाम के समय चाँद होता है।

कृष्णपक्ष—

दूसरे पन्द्रह दिन जिन दिनों में शाम के समय चाँद नहीं होता है।

पाठ ४३

इस पाठ में एक ब्राह्मण की कथा दी हुई है, जिस कथा के कठिन शब्दों का अर्थ पाठ के अन्त में दिया है।

१. कस्मिंश्चिद् ग्रामे यज्ञप्रिय नामक एकः ब्राह्मणः प्रतिवसति स्म=किसी एक गांवमें यज्ञप्रिय नामक एक ब्राह्मण रहता था।

२. स कस्मैचित् कारणाय एकस्मिन् दिने अन्यं ग्रामं प्रस्थितः= वह किसी कारण के लिये एक दिन दूसरे गांव को चला।

३. तदा तस्य माता तम् आह=उस समय उसकी माता ने उसे कहा।

४. हे पुत्र ! एकाकी मा व्रज=हे पुत्र ! अकेला न जा।

५. यज्ञप्रियः आह ! हे मातः ! भयं न कुरु। अस्मिन् मार्गे किमपि भयं नास्ति अतः अहम् एकाकी एव गमिष्यामि=यज्ञप्रिय बोला। हे माता ! भय मत कर। इस मार्ग में कुछ भी भय नहीं है। इस लिये मैं अकेला ही जाऊंगा।

६. तस्य निश्चयं ज्ञात्वा एक कुक्कुर हस्ते कृत्वा माता तं आह= उसका निश्चय जानकर एक कुत्ता हाथ में धर के माता उसे बोली।

७. यदि त्वं गन्तुम् इच्छसि तर्हि एनं कुक्कुरं गृहीत्वा गच्छ=अगर तू जाना ही चाहता है तो इसे कुत्ते को लेकर जा।

८. तेन उक्तं तथा करोमि इति=उसने कहा कि ऐसा ही करता हूं।

९. ततः स तं कुक्कुरं गृहीत्वा प्रस्थितः=पश्चात् वह उस कुत्ते को लेकर चला।

१०. अथ स मार्गे गमनश्रमेण श्रान्तः कस्यचिद् वृक्षस्य अधस्तात् उपविश्य प्रसुप्तः=अब वह मार्ग में चलने की थकावट से थका हुआ किसी वृक्ष के नीचे बैठकर सो गया।

११. तत्र कश्चित् सर्पः आगतः=वहां कोई एक सांप आ गया।

१२. सर्पः तेन कुक्कुरेण हतः =वह सांप उस कुत्ते ने मारा।

१३. यदा स ब्राह्मणः प्रबुद्धः तदा तेन दृष्टं कुक्कुरेण सर्पः हत इति=जब वह ब्राह्मण जागा तब उसने देखा कि कुत्ते ने सांप मारा है।

१४. तं हतं सर्पं दृष्ट्वा प्रसन्नः ब्राह्मणः तदा अब्रवीत्=उस मरे हुए सांप को देखकर खुश हुआ ब्राह्मण तब बोला।

१५. अरे ! सत्यं उक्तं मम मात्रा। पुरुषेण कः अपि सहायः कर्तव्यः इति=अरे ! सच कहा मेरी माता ने, कि मनुष्य को कोई सहायक रखना चाहिये।

१६. एकाकिना एव न गन्तव्यं इति=अकेले ही नहीं जाना चाहिये।

१७. एवम् उक्त्वा स ब्राह्मणः ग्रामं गतः=ऐसा कहकर वह ब्राह्मण गांव को चला गया।

१८. तत्र गत्वा स्वकीयं कार्यं च तेन कृतं=वहां जाकर अपना कार्य उसने किया।

शब्द

"चित्" शब्द का भाषा में "एक" ऐसा अर्थ होता है।

कः चित्=कोई एक ने	केनचित्=किसी एक ने
कस्मिंश्चित्=किसी एक में	कस्यचित्=किसी एक का
प्रसुप्तः=सो गया	सर्पः=सांप
हतः=मारा	प्रबुद्ध=जागा

ब्राह्मणः=ब्राह्मण
कारणं=कारण, वजह
एकाकी=अकेला
व्रजति=(वह) जाता है
व्रजामि=जाता हूँ
निश्चयं=निश्चय
प्रस्थितः=चला
श्रांतः=थका हुआ
उपविश्य=बैठ कर
दृष्ट्वा=देखकर
अब्रवीत्=बोला
मात्रा=माता ने
कर्तव्य=करने योग्य
गन्तव्यं=जाने योग्य
दातव्य=देने योग्य
लेखितव्य=लिखने योग्य
खाद्यं=खाने योग्य

प्रतिवसति=रहता है
आह=बोला
व्रज=जा
व्रजसि=(तू) जाता है
मातः=हे माता
कुक्कुरं=कुत्ते को
श्रमः=मेहनत
अधः=नीचे
दृष्टं=देखा
प्रसन्न=खुश
अरे=अरे
सहायः=मददगार
एकाकिना=अकेले ने
वक्तव्य=बोलने योग्य
पठितव्य=पढ़ने योग्य
द्रष्टव्यं=देखने योग्य
स्थातव्यं=रहने योग्य

मन्त्रः

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

अर्थ—हे (देव) ईश्वर, हे (सवितः) सविता सब के उत्पन्न करने हारे ईश ! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराइयों, पाप (परा) दूर (सुव) फेंक। (यद्) जो (भद्रं) कल्याण, (तत्) वह (नः) हमारे लिये (आ सुव) समीप कर।

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति,
मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा,
बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ॥२॥

मनुस्मृति।

अर्थ—(अद्भिः) पानी से (गात्राणि) इंद्रिय, शरीर के अवयव (शुध्यन्ति) शुद्ध होते हैं। (मनः) मन (सत्येन) सचाई से (शुध्यति) शुद्ध होता है। (विद्यातपोभ्यां) विद्या और तप से (भूतात्मा) जीवात्मा तथा (बुद्धिः) बुद्धि (ज्ञानेन) ज्ञान से (शुध्यति) शुद्ध होती है!

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात्
एष धर्मः सनातनः ॥३॥

मनुस्मृति।

अर्थ—(सत्यं) सत्य (ब्रूयात्) बोलना, (प्रियं) प्रिय (ब्रूयात्) बोलना। (च) और (प्रिय) प्यारा परन्तु (अनृतं) असत्य (न) नहि (ब्रूयात्) बोलना। (एष) यह (सनातनः) हमेशा का (धर्मः) धर्म है।

पाठ ४४

१. एकदा नारदः भगवतं उपेत्य पप्रच्छ=एक समय नारद ने भगवान् के पास जाकर पूछा।
२. भगवान्! कः तव परमः भक्तः इति=हे भगवान्! कौन तेरा परम भक्त है?

३. भगवान् नारदं आह ! हे नारद ! भूतले मम एकः परमः भक्तः अस्ति=भगवान् ने नारद से कहा कि हे नारद ! भूतल में मेरा एक परम भक्त है।

४. यदि इच्छसि तं द्रष्टुं तर्हि गच्छ भूतलं तत्र च तं पश्य=अगर च हता है उसे देखना, तो जा भूतल में और वहाँ उसे देख।

५ भगवन् ! तस्य किं नामधेयम् अस्ति। कस्मिन् नगरे च स निवसति=हे भगवान् ! उसका क्या नाम है, और किस शहर में वह रहता है।

६. स विदिशानामके नगरे निवसति। तस्य च नामधेयं भद्रदत्त इति। स कृषीवलः अस्ति=वह विदिशा नाम के नगर में रहता है। उसका नाम भद्रदत्त है वह किसान है।

७. नारद एतत् श्रुत्वा विस्मितः भूत्वा भूतलं प्रस्थितः=नारद यह सुनकर विस्मित होकर भूमंडल के लिये चला।

८. तत्र गत्वा च तं कृषीवलं प्रत्यक्षीचकार=और वहाँ जाकर उस किसान को प्रत्यक्ष किया।

९. स भद्रदत्तः कृषीवलः दिने दिने शुद्धे स्थाने उपविश्य एकाग्रेण मनसा क्षणमात्रं भगवन्तं स्मरति ततः कृषि कर्म करोति=यह भद्रदत्त किसान प्रतिदिन शुद्ध स्थान में बैठकर एकाग्र मन से क्षणमात्र भगवान् का स्मरण करता है पश्चात् खेती का काम करता है।

१० तं दृष्ट्वा नारद [आ]ह=उसे देखकर नारद बोला।

११. का अत्र भक्तिः=कौन सी यहां भक्ति है ?

१२. इति उक्त्वा पुनः स नारदः भगवंतं प्रति गतः=ऐसा बोलकर

फिर वह नारद भगवान् के पास गया।

१३. तेन पृष्टम्। हे नारद! किं त्वया परमः भक्तः भद्रदत्त' दृष्टः= उसने पूछा! हे नारद! क्या तूने परम भक्त भद्रदत्त को देखा।

१४ नारदः प्रत्याह। भगवान्! स मया दृष्टः परन्तु न तत्र का अपि विशेषता अस्ति=नारद ने उत्तर दिया कि भगवन् वह मैंने देखा परन्तु उसमें कोई विशेषता नहीं है।

१५. भगवता उक्तम्। य. मन एकाग्र कृत्वा सन्ध्या करोति। स एव परमः भक्तः भवति न अन्य. इति त्वं जानीहि=भगवान ने कहा कि जो मन एकाग्र करके सन्ध्या(ध्यान) करता है। वही परम भक्त होता है। दूसरा नहीं। ऐसा तू जान।

१६. यः तु मन एकाग्र न कृत्वा उपासना करोति स भक्तः भवितुं न योग्य इति=जो मन एकाग्र न करके उपासना करता है वह भक्त होने के योग्य नहीं है।

शब्द

एकदा=एक समय	भगवन्तं=भगवान् को
उपेत्य=पास जाकर	पप्रच्छ=पूछा
परम=सब से बड़ा	भक्त=भगत
स्थान=जगह	उपविश्य=बैठकर
उपविशति=बैठता है	उपविशसि=बैठता है
प्रत्यक्षी करिष्यति=साक्षात् करेगा	वसति=(वह) रहता है
	वससि=(तू) रहता है
वसामि=रहता हूँ	वत्स्यति=(वह) रहेगा
वत्स्यसि=(तू) रहेगा	वत्स्यामि=रहूँगा
उपवेक्ष्यसि=(तू) बैठेगा	उपवेक्ष्यति=(वह) बैठेगा

आह=कहा	भूतल=पृथ्वी, भूलोक
निवसति=वह रहता है	निवससि=तू रहता है
निवसामि=रहता हूँ	कृषीवलः=किसान
विस्मित=आश्चर्य से युक्त	प्रस्थित=चला
प्रत्यक्षीचकार=साक्षात् किया	प्रत्यक्षीकरोमि=प्रत्यक्ष करता हूँ
प्रत्यक्षीकरोषि=प्रत्यक्ष करता है	प्रत्यक्षीकरोति=प्रत्यक्ष करता है
पृष्ट=पूछा	दृष्ट=देखा
प्रत्याह=जवाब दिया	विशेष=खास (बात)
मन=मन	एकाग्र=स्थिर
जानीहि=ज्ञान	उपासना=भक्ति उपासना
भवितु=होने के लिए	उपविष्ट = बैठ गया
प्रत्यक्षीकरन=साक्षात् किया	उषित=रहा हुआ
उषित्वा=रह कर	वस्तुं=रहने के लिये
निवत्स्यति=रहेगा	निवत्स्यसि=(तू) रहेगा
निवत्स्यामि=रहूँगा	

श्लोक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥१॥

मनुस्मृति ।

अर्थ—(यत्र) जहाँ (तु तो (नार्यः) स्त्रियां (पूज्यन्ते) सत्कारित की जाती हैं। (तत्र) वहाँ (देवताः) देवताएँ (रमन्ते) खुश होती हैं। (तु) परन्तु (यत्र) जहाँ (एताः) ये स्त्रियां (न पूज्यन्ते) पूजी नहीं जातीं (तत्र) वहाँ (सर्वाः) सब (क्रियाः) कार्य (अफलाः) निष्फल, व्यर्थ होते हैं।

उपकारोऽपि नीचानां अपकाराय जायते।

पयः पानं भुजंगानाम् केवलं विषवर्धनम् ॥

अर्थ—(नीचानां) नीचों के लिये (उपकार) उपकार किया (अपि) भी (अपकाराय) नुकसान के लिये (जायते) होता है। जैसे भुजगानां) सांपों के लिये (पयः पानं) दूध का पीना (केवलं) केवल (विषवर्धनम्) विष बढ़ाने वाला होता है।

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

अर्थ हे (राजन्) राजा! (सतत) हमेशा (प्रियवादिनः) प्यारा बोलने वाले (पुरुषाः) मनुष्य (सुलभाः) आसानी से मिलते हैं। परन्तु (अप्रियस्य) अप्रिय (च) और (पथ्यस्य) हितकारक भाषण का (वक्ता) बोलने वाला (च श्रोता) और सुनने वाला (दुर्लभाः) मिलना मुश्किल है।

वाक्य

(१) यत्र नार्यः पूज्यन्ते तत्र एव देवताः रमन्ते। परन्तु यत्र एताः न पूज्यन्ते तत्र सर्वाः क्रिया अफला भवन्ति।

(२) नीचानां उपकाराः अपि अपकाराय जायते। यथा भुजंगानां पयःपानं विषवर्धकं भवति।

(३) हे राजन्! सततं प्रियवादिनः पुरुषः सुलभाः। परन्तु पथ्यस्य अप्रियस्य यथा वक्ता दुर्लभः तथा श्रोता अपि दुर्लभः।

पाठ ४५

१. कस्मिंश्चिद् ग्रामे धर्मदत्तः नामकः अपि कृषीवलः आसीत्=किसी एक गांव में धर्मदत्त नामक कोई एक किसान था।

२. स एकं वानरं पालितवान्=उसने एक बंदर पाला था।

३. स मर्कटः प्रभूतं अन्नं भक्षयित्वा अतीव पुष्टः जातः=वह बंदर

यह अन्न खाकर बहुत पुष्ट हो गया।

४. एकदा स कृषीवलः दध्योदनं गृहीत्वा कस्मैचित् प्रयोजनाय तेन सह अन्यं ग्रामं प्रस्थितः=एक समय वह किसान दही चावल लेकर किसी कारण के लिये उस (बंदर) के साथ दूसरे गाँव को चला।

५. स मार्गे एकं तडागं दृष्ट्वा तत्र दध्योदनं भक्षयितुम् उपविष्टः= रास्ते में एक तालाब देखकर वहां दही चावल खाने के लिए बैठ गया।

६. तत्र कस्यचित् वृक्षस्य मूले दध्योदनं स्थापयित्वा मुखप्रक्षालनार्थं तडागं गत्वा तीरे उपविष्टः=वहां किसी एक वृक्ष के मूल में दही चावल रखकर मुँह धोने के लिये तालाब के पास जाकर तालाब के किनारे पर बैठ गया।

७. अत्रान्तरे तेन दुष्टेन मर्कटेन तत् सर्वं दध्योदनं भक्षितं=इतने में उस दुष्ट बंदर ने वह सब दही चावल खाए।

८. हस्तेन किंचिद् दधि गृहीत्वा, समीपे स्थितस्य कस्य चिद् अजस्य मुखे लिप्त्वा, किम् अपि अजानन् इव दूरं गत्वा स्थितः=हाथ से थोड़ा सा दही लेकर, पास खड़े हुए किसी एक बकरे के मुँह पर फेंक कर अनजान के समान दूर जाकर बैठ गया।

९. कृषीवलः मुखं प्रक्षाल्य वृक्षस्य मूलंआगत्य दृष्टवान्, यद् सर्वं दध्योदनं केनापि निःशेषं भक्षितम् इति=किसान ने मुंह धोकर वृक्ष के पास आकर देखा कि सब दही चावल किसी ने खा लिये हैं।

१०. समीपे स्थितस्य अजस्य मुखे किंचिद् दधि दृष्ट्वा तेन एव सर्वं अन्नं भक्षितं इति ज्ञात्वा तम् एव ताडयामास=पास खड़े

दुष्ट बकरे के मुह में [लगा हुआ] थोडा सा दही देखकर उसी ने सब अन्न खाया, ऐसा समझ कर उसी का ताड़न किया।

११. दुष्ट अपराधं स्वयं कृत्वा अन्येन स अपराधः कृत इति दर्शयति=दुष्ट [मनुष्य] अपराध स्वयं करके दूसरे ने अपराध किया है, ऐसा बतलाता है।

१२. मूढ तत् तथा एव अस्ति इति जानाति=मूर्ख वह वैसा ही है ऐसा जानता है।

१३ परंतु ज्ञानी सर्वं परीक्ष्य अपराधिनम् एव यथायोग्य ताडयति= परन्तु ज्ञानी मनुष्य सब परीक्षा करके अपराधी को ही यथा योग्य ताडना करता है।

शब्द

पालितवान्=पालन किया	पालयति=पालन करता है
पालयिष्यति=पालन करेगा	पालयिष्यसि=पालन करेगा।
पालयिष्यामि=पालन करूँगा	पालयित्वा=पालन करके
पालयितु=पालन करने के लिये	मर्कट=बन्दर
पुष्ट =पुष्ट, मोटा ताज़ा	स्थापयित्वा=रखकर
तीर=तीर, किनारा	अत्रान्तरे=बीच में
दुष्ट =दुष्ट	अज=बकरा, आत्मा परमात्मा
अजा =बकरी, प्रकृति	दर्शयितु=दिखाने के लिये
ताडयामास=ताडन किया, पीटा	अपराध =गुनाह, अपराध
ज्ञानी=समझदार	परीक्ष्य=परीक्षा करके
अपराधी=गुनाहगार, दोषी	परीक्षे=परीक्षा करता हूँ
पालयसि=पालन करता है	पालयामि=पालन करता हूँ

क्षिप्त्वा=फेंक कर	अजानन्=न जानने वाला
यावत्=जब तक	तावत्=तब तक
निःशेषं=सम्पूर्ण	दृष्टवान्=देखने वाला
प्रयोजनं=कारण	उपविष्टः=बैठ गया
मूलं=जड़	स्वयं=स्वयं, खुद, अपने आप
दर्शयति=वह दिखाता है	दर्शयसि=तू दिखाता है
दर्शयामि=दिखाता हूँ	दर्शयिष्यति=दिखायेगा
दर्शयिष्यसि=दिखायेगा	दर्शयिष्यामि=दिखाऊँगा
दर्शयित्वा=दिखला कर	परीक्षसे=तू परीक्षा करता है
परीक्षते=परीक्षा करता है	परीक्षिष्ये=परीक्षा करूँगा
परीक्षिष्यसे=तू परीक्षा करेगा	परीक्षिष्यते=परीक्षा करेगा

वाक्य

[१] यतः धर्मः ततः जयः

[२] धर्म एव हतः हन्ति।

[३] रक्षित. धर्म एव रक्षति।

पाठ ४६

निरवयवः [निः-अवयवः]=निराकार, अवयव रहित।

शब्दमयः=शब्दों से पूर्ण।

सर्वशक्तिमत्-[सर्व शक्ति-मत्]=अनंत शक्तियों से युक्त।

कल्पते=बनती है, सजती है, योग्य होती है।

ऋते=बिना, सिवाय।

विद्यमान=रहना, होना।

अस्मदादीनां [अस्मद्-आदीनां]=हम जिनमें पहले हैं ऐसे मनुष्यों का।

कृअध्ययनानंतरं-[अध्ययन-अनंतरं]=पठन के पश्चात्।
पशुवत्-[पशु-वत्]=पशुओं के समान।
आदि-सृष्टि=आरम्भ की सृष्टि।
प्रवृत्तिः=स्वभाव
परमेश्वरः-[परम-ईश्-वरः]=बड़ा स्वामी।
उत्पद्यते=बनता है, उत्पन्न होता है।
ईश्वरः-[ईश्-वरः]=मालिकों में श्रेष्ठ मालिक।
कुतः=किस कारण? क्यों?
सदैव-[सदा-एव]=हमेशा।
खलु=निश्चय से!
सकलं=संपूर्ण
अंतरेण=बिना
महारण्यं-[महा-अरण्यं]=बड़ा वन।
आरभ्य=प्रारंभ करके।
वेदोपदेशः-[वेद-उपदेशः] वेद का उपदेश।

*गुरु शिष्य संवाद

शिष्यः—निरवयवात्[1] परमेश्वरात् शब्दमयः[2] वेदः कथम् उत्पद्यते=निराकार[1] परमेश्वर से, शब्दों से भरा हुआ वेद कैसे उत्पन्न होता है।

गुरुः—सर्वशक्तिमति ईश्वरे इयं शंका न उपपद्यते=सर्व शक्तिमान् ईश्वर में यह शंका नहीं ठीक सजती।

---

* इन पाठों का अर्थ संस्कृत शब्द रचना के अनुसार दिया है इस कारण भाषा के वाक्य हिंदी शैली के विरुद्ध हुए हैं। परन्तु इन्हीं वाक्यों से पता लगेगा कि संस्कृत में और हिंदी में वाक्य रचना का क्या भेद है।

शिष्यः—कुतः=क्या ?

गुरुः—मुखादि-साधनं अंतराऽपि तस्य, कार्यं कर्तुं, सामर्थ्यस्य सदैव विद्यमानत्वात्=मुख आदि साधन के बिना भी उस का कार्य करने के लिये सामर्थ्य सदा ही रहता है।

यः अस्ति खलु सर्व शक्तिमान् स नैव कस्याऽपि सहाय्यं, कार्यं कर्तुं, गृह्णाति=जो है निश्चय से सर्वशक्तिमान् वह नहीं किसी का भी सहाय्य कार्य करने के लिये लेता है।

यथा अस्मदादीनां, सहायेन बिना, कर्तुं, सामर्थ्यं नास्ति। न च ईश्वरे=जैसे हम जैसों का, सहाय के बिना कार्य करने के लिये सामर्थ्य नहीं है। नहीं और ईश्वर में (अर्थात् हमारी जैसी अवस्था ईश्वर में नहीं)।

यदा निरवयवेन ईश्वरेण सकलं जगद् रचितं, तदा वेद-रचने का शंकाऽस्ति ?=जब निराकार ईश्वर ने सब जगत् रचा है, तब वेद रचने में क्या शंका है ?

शिष्यः-जगद्-रचने तु खलु ईश्वरं अन्तरेण, न कस्याऽपि सामर्थ्यम् अस्ति=जगत् रचने में तो निश्चय से ईश्वर को छोड़कर, नहीं किसका भी सामर्थ्य है।

वेद रचने तु अन्यस्य ग्रन्थ-रचन-वत् स्यात्=वेद रचने में तो दूसरे किसी की ग्रन्थ रचना के समान (सामर्थ्य) हो सकता है।

गुरुः—ईश्वरेण रचितस्य अध्ययनानंतरं एव ग्रन्थ रचने कस्याऽपि सामर्थ्यं स्यात् न च अन्यथा=ईश्वर ने रचे हुए वेद के अध्ययन के पश्चात् ही ग्रंथ रचने में किसी का भी सामर्थ्य होता है। नहीं और (किसी) दूसरे प्रकार से।

नैव कश्चित् अपि पठन पाठन अन्तरा विद्वान् भवति=नहीं कोई भी पढ़ने पढ़ाने बिना विद्वान् होता है।

*किंचिद् अपि शास्त्र, पठित्वा, उपदेश श्रुत्वा, व्यवहार च दृष्ट्वा एव, मनुष्याणा ज्ञान भवति=कोई एक भी शास्त्र पढ़ के उपदेश सुनकर, और व्यवहार देखकर ही, मनुष्यों को ज्ञान होता है।

यथा महारण्यस्थाना मनुष्यणा, उपदेश अन्तरा, पशु वत्प्रवृत्ति भवति=जिस प्रकार बड़े जङ्गलमें रहने वाले मनुष्यों की, उपदेश के बिना, पशु समान प्रवृत्ति होती है।

तथैव आदि सृष्टिम् आरभ्य, अद्यपर्यंत, वेदोपदेशम् अन्तरा, सर्व मनुष्याणा प्रवृत्ति भवेत्=वैसा ही आदि सृष्टि प्रारम्भ करके, आज तक, वेद के उपदेश के बिना, सब मनुष्यों की प्रवृत्ति होती है।

वाक्य

निराकारेण ईश्वरेण एव यथा जगत् निर्मित तथैव वेद अपि निर्मित। हस्तपादादि साधन विना स ईश्वरः यथा सृष्टिं रचयति तथैव वेदम् अपि स एव रचयति। यथा सहायेन विना मनुष्य कार्यं कर्तुं न शक्नुवन्ति तथा ईश्वरे नास्ति। स अन्यस्य सहायेन विना अपि सर्वं स्वकीय रचनाकार्यं कर्तुं शक्नोति। स सर्वशक्तिमान् अस्ति मनुष्यवत् अल्पशक्तिमान् नैवास्ति।

पाठ ४७

मानुष्येभ्य =सब मनुष्यों के लिये

स्वाभाविक=जन्म के साथ आया हुआ

वेदानां=सब वेदों का अर्हति=योग्य होता है

मन्यते=माना जाता है वेदोत्पादनं=(वेद-उत्पादनं) वेदों का उत्पन्न होना

विदुषां=विद्वानों के सकाशात्=पास से

रच्यते=रचा जाता है सृष्टे.=सृष्टि के

आसीत्=था क्रमः=सिलसिला

विद्या-संभव=विद्या का होना ग्रन्थेभ्यः=सब पुस्तकों से विद्या प्राप्त होनी

उत्कृष्ट=उत्तम तदुन्नत्या=(तत् उन्नत्या)- उसकी उन्नति—वृद्धि से।

ग्रन्थ-रचनं=पुस्तक बनाना मात्र=केवल

अस्मदादिभिः=हम हैं आदि जिनके ऐसे मनुष्यों द्वारा अनेकविधि=अनेक प्रकार का

अपेक्षा=आवश्यकता, जरूरी अवश्य=जरूर

आरम्भ-समयः=प्रारम्भ का समय ईश्वरोपदेशः=(ईश्वर-उपदेशः) ईश्वर का उपदेश

रचयेत्=रचेगा

गुरु शिष्य संवादः

शिष्यःवदति ईश्वरेण मनुष्येभ्यः स्वाभाविक ज्ञानं दत्तम्=शिष्य बोलता है—ईश्वर ने मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान दिया है।

तत् च सर्वग्रंथेभ्यः उत्कृष्टम् अस्ति=और वह सब पुस्तकों से उत्तम है।

—

व तेन बिना वेदानाम् अपि ज्ञानं भवितुम्१ अर्हति२=नहीं उसके बिना वेदों का ज्ञान हो१ सकता२ है।

तदुन्नत्या३ ग्रंथरचनम्४ अपि करिष्यन्ति एव=उसकी उन्नति३ से पुस्तक की४ रचना भी करेंगे ही।

पुनः किमर्थं५ मन्यते६ वेदोत्पादनम्७ ईश्वरेण कृतम् इति—फिर किस५ लिये माना६ जाता है वेदों की७ उत्पत्ति ईश्वर ने की ऐसा।

गुरुः वदति-न बिना अध्ययनेन स्वाभाविक८ ज्ञान-मात्रेण,९ कस्य अपि निर्वाहः१० भवितुम् अर्हति=गुरु कहता है—नहीं अध्ययन के बिना, स्वाभाविक८ ज्ञान से ही केवल९, किसी का भी निर्वाह१० हो सकता है।

यथा अस्मदादिभिः१ अपि अन्येषां विदुषां२ सकाशात् अनेकविधं३ ज्ञानं गृहीत्वा एव ग्रंथः रच्यते४=जैसा हम१ जैसे लोग भी अन्य विद्वानों२ के पास से अनेक३ प्रकार का४ ज्ञान लेकर ही ग्रंथ रचते४ हैं।

तथा ईश्वरज्ञानस्य५ सर्वेषां मनुष्याणां अपेक्षा६ अवश्य७ भवति=वैसी ईश्वर५ के ज्ञान५ की सब मनुष्यों के लिये आवश्यकता६ अवश्य७ होती है।

किं च। न सृष्टेः आरंभसमये पठनपाठन क्रमः ग्रंथः च कश्चिद् अपि आसीत्=और। नहीं सृष्टि के प्रारम्भ में पढ़ने पढ़ाने का सिलसिला और ग्रंथ कोई भी था।

तदानीं ईश्वरोपदेशं अंतरा, नच कस्य अपि, विद्या संभवः बभूव=तब ईश्वर के उपदेश के बिना, नहीं और किसी भी, विद्या की प्राप्ति हुई थी।

पुनः कथं कश्चिन् जनः ग्रंथं रचयेत्=फिर कैसे कोई मनुष्य ग्रंथ

रचेगा ?

पाठ ४८

ईशा=ईश्वर ने
स्विम्=भी, ही
लिप्यते=लेप लगता है अथवा लगता है
अंधं तमः=गाढ़ अन्धकार
पात्र=बर्तन
पूषन्=पुष्ट होने वाला, बढ़ाने वाला
वित्तं=धन
अपावृणु=खोल
तर्क=शक्य अशक्य विचार
तपांसि=अनेक प्रकार के तप
भुञ्जीथाः=भोगो
जिजीविषेत्=जीने की इच्छा
समाः=वर्ष, साल
अविद्या=जो विद्या से उल्टी हो
अपिहित=ढँका हुआ

वास्यं=ढांपने योग्य, व्यापने रहने योग्य
कर्म=उद्योग, प्रयत्न
नरः=मनुष्य
हिरण्मय=सुवर्णमय
सत्यं=सचाई
दृष्टये=दर्शन के लिये
तर्पणीय=तृप्त होने योग्य
आप्यायन्तु=बढ़ें, वृद्धि और उन्नति को प्राप्त हो जांय
आमनन्ति=विचार करते हैं
त्यक्त=दत्त, दान, त्याग किया हुआ
गृधः=ललचाओ
शतं=सौ
प्रविशन्ति=घुसते हैं
उपासते=(उप-आसते)—पास बैठते हैं, उपासना करते हैं
पद्=स्थान, अवस्था, प्राप्तव्य

चरन्ति=करते हैं, आचरण करते हैं समः=सक्षेप, सारूप करते हैं

उपनिषद् का उपदेश

१ ईशा वास्य इद सर्वम्=ईश्वर के व्यापने योग्य है यह सब।
२ तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा=उसके दिये हुए से भोग करो।
३ मा गृध कस्य स्विद् धनम्=न ललचाओ किसी का भी धन
४ कुर्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शत समा = करते हुए ही यहाँ कर्म जीने की इच्छा करो सौ वर्ष।
५ न कर्म लिप्यते नरे=नहीं कर्म का लेप होता है नर में।
६ अध तम प्रविशन्ति ये अविद्या उपासते=अन्धे तम को प्राप्त होते हैं जो अज्ञान के पास रहते हैं।
७ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहित मुखम्=सोने के बर्तन से सत्य का ढका है मुख।
८ तत् त्व पूषन् अपावृणु सत्य धर्माय दृष्टये=उसको तू, हे पोषक खोल दे सत्य धर्म को देखने के लिये।
९ कृत, स्मर=किये हुए का स्मरण कर।
१० आप्यायन्तु मम अगानि वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र अथो बल, इन्द्रियाणि च=बढ जाय मेरे अवयव, वाणी, प्राण आँख, कान और बल और इन्द्रियाँ।
११ न तत्र चक्षु गच्छति न वाक् गच्छति=नहीं वहाँ आँख जाती है नहीं वाणी जाती है।
१२. न वित्तेन तर्पणीय मनुष्य =नहीं धन से तृप्त होता है मनुष्य
१३ न एषा तर्केण मति आपनेया=नहीं यह तर्क से बुद्धि प्राप्त होने वाली है।
१४ सर्वे वेदा यत् पद आमनन्ति=सब वेद जिस स्थान का मनन करते हैं।

१५. तपांसि[१] सर्वाणि[१] च यद् वदन्ति=और जो सब[१] तप[१] बोलते हैं।

१६. यद् इच्छन्तः ब्रह्मचर्यं चरन्ति=जिसकी इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य पालते हैं।

१७. तत् ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि=वह तुमको स्थान संक्षेप से कहता हूँ।

१८ ओम् इति एतत्=ओ३म् ही यह है।

पाठ ४६

मूल्यं=कीमत, मूल्य	पंच=पाँच
रूप्यः=रुपया	मुद्रा=रुपया
मुद्रैकया=(मुद्रया-एकया) एक रुपया से	अष्ट=आठ
पणः=पैसा	हट्ट=दुकान, हट्टी
अच्छं=अच्छा	वणिक्=बनिया
कीदृशः=कैसा	कियान्=कितना
व्ययः=खर्च	पंचलक्षाणि=पाँच लाख
हानि=नुकसान	संवत्सरः=वर्ष
जातः=हो गया	लक्षद्वय=दो लाख
लक्षत्रयम्=तीन लाख	कुतः=कहां से
कः=कहाँ से	केदार=खेत
पक्व=पका हुआ	घृतं=घी
अर्घः=भाव	भावः=भाव
स पाद=सवा	प्रस्थ=सेर
गुडः=गुड़	सेटकः=सेर

एला=इलायची | प्राप्नुत=मिलते हैं, प्राप्त होते हैं।
क्रयविक्रयौ=लेन देन | मिथ्याकारी=झूठा व्यवहार करने वाला
बहुमूल्य=कीमती | आविक=ऊनी कपड़ा
शाक=साक भाजी | लुनति=काटता है
लुनतु=काटे
अस्य किं मूल्यम् ?=इसका क्या मूल्य है ?
पञ्च रूप्याणि=पाँच रुपये।
गृहाण। इदं वस्त्रं देहि=लीजिये। यह वस्त्र दीजिये।
अद्य-ध, घृतस्य कः अर्घः=आज कल घी का क्या भाव है।
मुद्रिकया सपाद-प्रस्थं विक्रीयते=एक रुपया का सवा सेर बेचते हैं।
गुडस्य को भाव ?=गुड़ का क्या भाव है ?
अष्टभिः पणैः एकसेटकमात्रं ददाति=आठ पैसों का एक सेर भर देते हैं।
त्वम् आपणं गच्छ=तू दुकान पर जा।
एला आनय=इलायची ले आ।
आनीता। गृहाण=ले आया। लीजिये।
कस्य हट्टे दधिदुग्धे अच्छे प्राप्नुत ?=किसकी दुकान पर दही और दूध अच्छे मिलते हैं।
धनपालस्य=धनपाल की।
स सत्येन एव क्रयविक्रयौ करोति=वह सत्य ही से लेन देन करता है।
श्रीपति वणिक् कीदृशः अस्ति=श्रीपति बनिया कैसा है ?
स मिथ्याकारी=वह झूठा है
अस्मिन् संवत्सरे कियान् लाभो व्ययः च जात.=इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च हुआ।

पंचलक्षाणि लाभः=पांच लाख (रुपये) लाभ।
लक्षद्वयस्य व्ययः च=और दो लाख खर्च (हुए)।
मम खलु अस्मिन्वर्षे लक्षत्रयस्य हानिः जाता=मेरी तो इस वर्ष तीन लाख की हानि हो गई।
कस्तूरी कस्माद् आनीयते=कस्तूरी कहाँ से लाई जाती है
नयपालात्=नयपाल से।
बहुमूल्य आविकं कुतः आनयन्ति=कीमती दुशाले कहां से लाते हैं।
कश्मीरात्=कश्मीर से।
कुत्र गच्छसि=कहां जाते हो।
पाटलिपुत्रम्=पटने को।
कदा आगमिष्यसि=कब आओगे?
एक मासे=एक महिने में।
स क्व गतः=वह कहां गया?
शाकं आनेतुम्=शाक लेने को।
संप्रति बदराः पक्वाः=इस समय बेर पक गये हैं।
यदि पक्वः तर्हि लुनीत=यदि पके तो काटो।

पाठ ५०

गौः=गाय	महिषी=भैंस
प्रतिदिनं=हर रोज, नित्य	कियत्=कितना
मणी=मन, चालीस सेर	प्रत्यहं=प्रतिदिन
भुज्यते=खाया जाता है	मिलति=मिलता है
त्रि=तीन	मुद्रापादः=रुपया का चौथा हिस्सा चार आने
पादः=चौथा हिस्सा	अर्धं=आधा, आध

तदानींतन =उस समय का
अज =बकरी
सन्ति=हैं
द्वादश=बारह
सार्धद्वादश=साढे बारह
सार्ध द्व=अढ़ाई
कति= कितने
साक्षी=गवाह

अजावय =(अजा-अवय)बकरी भेड
अवि =भेड़
किं परिमाणं=कितने परिमाण में
सार्ध=(स-अर्ध) आधे के साथ
सार्ध पंच=साढे पांच
द्वय=दो
सहस्र=हजार
वर्तते=है

पंच सहस्राणि=पाँच हजार।

भो राजन्! मम अयं ऋणं न ददाति=हे राजन्! मेरा यह ऋण नहीं देता।

यदा तेन गृहीतं तदानीतनः कश्चित् साक्षी वर्तते न वा=जब उसने लिया था उस समय का कोई साक्षी वर्तमान है या नहीं?

अस्ति=है।

तर्हि आनय=तो ले आओ।

आनीतः। अयम् अस्ति=लाया। यह है।

पाठ ५१

आचरति=आचरता है	चरति=चलता है
श्रेष्ठः=अच्छा	लोकः=लोग, जन, मनुष्य
उद्धरेत्=उन्नति-उद्धार करना	आत्मना=आत्मा से
आत्मनः=आत्मा को, अपनी	आत्मानं=आत्मा को; अपने को
आत्मा=आत्मा, (रूप)	पूज्य=सत्कार करने योग्य
गुरु=उपदेशक, बड़ा	गरीयान्=श्रेष्ठ
समः=समान	त्वत्समः=तेरे जैसा
अधिकः=अधिक	अभ्यधिकः=(अभि अधिक) सब प्रकार से अधिक
प्रभावः=शक्ति, सामर्थ्य	इतरः=अन्य
प्रमाणं=प्रामाणिक, मान्य पसंद	कुरुते=करता है
अनुवर्तते=पीछे चलता है अनुकरण करता है	
बन्धुः=भाई	रिपुः=शत्रु, दुश्मन
पिता=बाप, पालक	चर=चलने वाला, स्थावर
अचर=न चलने वाला, स्थावर	

चराचर=(चर-अचर)-हिलने वाले और न हिलने वाले
कुतः=कहां से, कहाँ अन्यः=दूसरा
लोकत्रय=तीन लोक अप्रतिम=अतुल

यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ गीता ३। २१॥

पदच्छेद। यत्। यत्। आ-चरति। श्रेष्ठः। तत्। तत्। एव। इतरः। जनः। सः। यत्। प्रमाणं। कुरुते। लोकः। तद्। अनु-वर्तते।

अन्वय। यत् यत् श्रेष्ठः[१] आचरति[२]। तत् तत् एव इतरः जनः[३] (आचरति)। सः (श्रेष्ठः) यत् प्रमाणं[४] करते[५]। लोकः तद् अनुवर्तते[६]।

अर्थ—जो जो श्रेष्ठ[१] (पुरुष) आचरण[२] करता[२] है। वह वह ही (उसको ही) इतर[३] लोक आचरता है। वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो प्रमाण[४] करता[५] है (मानता है)। (इतर) लोग भी उसी के पीछे[६] चलते[७] हैं।

अर्थात् जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं वैसा ही इतर लोग करते हैं। श्रेष्ठ लोग जिसको प्रमाण मानते हैं उसी को इतर लोग भी प्रमाण मानते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः आत्मैव रिपुरात्मनः॥ गीता ६।५॥

पदच्छेद—उद्धरेत्। आत्मना। आत्मानं। न। आत्मानं। अवसादयेत्। आत्मा। एव। हि आत्मनः। बन्धुः। आत्मा। एव। रिपुः। आत्मनः।

अन्वयः—आत्मना[१] आत्मानं उद्धरेत्[२]। आत्मानं न अव-

सादयेत्[३] । हि[४] आत्मा एव, आत्मनः बन्धुः[५] । हि आत्मा एव आत्मनः रिपुः[६] ।

अर्थ—आत्मानं[१] आत्मा का उद्धार[२] करना चाहिये[३] । आत्मा को नहीं गिराना[३] चाहिए[३] । क्योंकि[४] आत्मा ही आत्मा का भाई[५] है । आत्मा ही आत्मा का शत्रु[६] है ।

अपनी आप उन्नति करनी चाहिए । अपनी गिरावट आप ही नहीं करनी चाहिये । क्योंकि अपना आप ही भाई । और अपना आप ही शत्रु है ।

ओ३म् शम् ।

इसे अवश्य पढ़ें—

प्रिय पाठक! अब आपने संस्कृत स्वयं शिक्षक का प्रथम भाग समाप्त कर लिया है। और यदि आपने पुस्तक के आरम्भ में लिखे नियमों के अनुसार प्रति-दिन नियमपूर्वक पाठों के अभ्यास में समय दिया है, तो हमें यह दृढ़ विश्वास है कि आप को संस्कृत भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान अवश्य हो गया होगा। आप स्वयं इस बात को मानते होंगे कि संस्कृत स्वयं शिक्षक' के प्रथम भाग से ही आपको संस्कृत में पर्याप्त योग्यता हो गई है। यह हम समझते हैं कि कुछ स्थलों पर शायद आप को कुछ कठिनता प्रतीत हुई हो। इस का मुख्य कारण यही है कि इस प्रथम भाग में हमने जान बूझ कर, पाठकों की आसानी के लिए, व्याकरण को बहुत ही कम स्थान दिया है। यह तो सिद्ध बात है कि व्याकरण ही किसी भी भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की कुंजी है और यह संस्कृत के विषय में तो और भी ज्यादा पूरी उतरती है। संस्कृत भाषा का क्रम नियम बद्ध और विधि वैज्ञानिक है, इसलिये बिना संस्कृत के व्याकरण का पूरा ज्ञान प्राप्त किए संस्कृत सीख सकना असम्भव है। 'संस्कृत स्वयं शिक्षक' के दूसरे व तीसरे भागों में व्याकरण को ही मुख्य स्थान दिया है। संस्कृत व्याकरण यदि विधिपूर्वक उचित क्रम से पढ़ा जाए तो बहुत ही सुगमता से सब समझ में आ जाता है। 'संस्कृत स्वयं शिक्षक' के दूसरे वा तीसरे भाग में व्याकरण की कठिन और गूढ़ गुत्थियों (समस्याओं) को भी इस तरह समझाया है कि पाठकों को जरा भी कठिनता न होगी। जगह जगह पर लेखक ने अपने ४० वर्ष के संस्कृत के अनुभव से

ऐसे गुर' दिये हैं कि ज़रा समझ लेने पर हमेशा के लिये व्याकरण पर आपका पूर्ण अधिकार हो जायगा।

आपने संस्कृत सीखने के निश्चय से ही इस 'प्रथम भाग' को अपना कीमती समय देकर पढ़ा। अब आपको इस काम को अधूरा न छोड़ना चाहिये क्योंकि यदि आपने कुछ समय के लिये भी संस्कृत का नियमित अभ्यास बन्द कर दिया तो कुछ अरसे बाद अवश्य ही आपके सब किये-कराये पर पानी फिर जायगा। हमारा यह दावा है कि संस्कृत स्वयं शिक्षक के दूसरे या तीसरे भाग को ध्यान से पढ़ लेने के बाद आप आसानी से शुद्ध संस्कृत बोल व लिख सकेंगे और आपकी इतनी योग्यता हो जायेगी कि आप वेदों, शास्त्रों और अन्य संस्कृत के उच्च ग्रंथों को समझ सकें।

'संस्कृत स्वयं शिक्षक' का दूसरा भाग ठीक वहीं से शुरू होता है जहाँ पहिला भाग समाप्त हुआ है—इस तरह के नियमित सिलसिले से पाठकों को दूसरे या तीसरे भाग के समझने में ज़रा भी कठिनता न होगी। क्रम-भङ्ग न हो इस बात का दूसरे या तीसरे भाग में पूरा ध्यान रक्खा गया है।

हमारा आप से विशेष अनुरोध है कि आप अपने अभ्यास को अधूरा कदापि न छोड़ें और द्वितीय या तृतीय भाग को अवश्य पढ़ें—

संस्कृत स्वयं शिक्षक—द्वितीय भाग—२६७ पृष्ठ मूल्य	१।)
संस्कृत स्वयं शिक्षक—तृतीय भाग—	१।)
दोनों भाग एक साथ मंगवाने पर केवल	२) दो रुपये

धर्म का आदि-स्रोत

ले०—श्री गङ्गाप्रसाद जी एम० ए०, चीफ-जज टेहरी (गढ़वाल)

आपने पहले यह पुस्तक अंग्रेजी में The Fountain Head of Religions के नाम से लिखी थी जिसके अब तक कई संस्करण निकल चुके हैं। असल पुस्तक अंग्रेज़ी में होने के कारण हिन्दी-पठित सज्जन इससे लाभ नहीं उठा सकते थे। अस्तु, 'आर्यमित्र' के भूतपूर्व योग्य-सम्पादक ने इसका अनुवाद कर आर्य जगत् का बड़ा उपकार किया है।

इस पुस्तक में ज़िन्दावस्ता, बाईबिल, क़ुरान तथा अन्य विविध मत-मतान्तरों का भली प्रकार उल्लेख कर यह दिखाया गया है कि वैदिक-धर्म ही समस्त धर्मों का आदि स्रोत है। योग्य लेखक ने संसार के विभिन्न मतों की परस्पर तुलना की है जिससे सर्व साधारण अच्छी तरह लाभ प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं उपदेशकों के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। ऐसी पुस्तक का प्रत्येक आर्य्य भाई के पास रहना आवश्यक है जिससे इसका अध्ययन कर विपक्षियों को मुँह तोड़ उत्तर दे सकें। पुस्तक सर्वांग सुन्दर है। द्वितीय संस्करण अभी छपा है। ३०० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १)

म० राजपाल ऐण्ड सन्स

(आर्य पुस्तकालय) सरस्वती आश्रम,

अनारकली, लाहौर।

मु०—श्री विश्वनाथ एम. ए., आर्य प्रेस, लिमिटेड, १७, मोहनलाल रोड, लाहौर।

—विश्वनाथ एम० ए०, राजपाल एण्ड सन्स, अनारकली, लाहौर।